श्री सहजानन्द शास्त्रमालाके प्रवर्तकोंकी शुभनामावलि

१ ❀	श्रीमान ला० महावीर प्रसाद जी जैन बैंकर्स सदर मेरठ	१०००)
२ ❀	,, ,, मित्रसैन नाहरसिंह जी जैन मुजफ्फरनगर	१०००)
३ ❀	,, ,, प्रेमचन्द ओमप्रकाश जी जैन प्रेमपुरी मेरठ	१०००)
४ ❀	,, ,, सलेकचन्द लालचन्द जी जैन मुजफ्फरनगर	११००)
५	,, ,, सेठ शीतल प्रसाद जी जैन सदर मेरठ	१०००)
६ ❀	,, ,, कृष्णचन्द जी जैन रईस देहरादून	११११)
७ ❀	,, ,, दीपचन्द जी जैन रईस देहरादून	१०००)
८ ❀	,, ,, बारूमल प्रेमचन्द जी जैन रईस मसूरी	११००)
९ ❀	,, ,, मुरारीलाल बाबूराम जी जैन ज्वालापुर	१०००)
१०	,, ,, केवलराम उग्रसैन जी जैन जगाधरी	१०००)
११	,, ,, जिनेश्वरलाल श्रीपाल जी जैन शिमला	१०००)
१२	,, ,, बनवारीलाल निरंजनलाल जी जैन शिमला	१०००)
१३ ❀	,, ,, सेठ गैंदालालसा दगडूसा जी जैन सनावद	१०००)
१४	,, ,, बाबूराम अकलंक प्रसाद जी जैन तिस्सा	१००१)
१५ ❀	,, ,, मकुन्दलाल गुलसनरायजी जैन नईमंडी मु. नगर	१००१)
१६	,, ,, सुखवीरसिंह हेमचन्द जी जैन सर्राफ बड़ौत	१००१)
१७	,, ,, सेठ मोहनलाल ताराचन्द बड़जात्या जयपुर	१०००)

नोट :—❀ इस चिह्न वाले सज्जनोंका पूरा रुपया कार्यालयमें जमा है।

प्रकाशकके कुछ शब्द

प्रिय पाठकगण !

आपको यह जानकर परमहर्ष होगा कि जिन ग्रन्थोंके प्रकाशन की प्रतीक्षा हो रही थी वे ग्रन्थ अब प्रकाशमे आने लगे हैं। पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराजकेद्वारा रचित अनेकों ग्रन्थ जिनके प्रकाशनकेलिये हमारे बड़े विद्वानों और श्रीमानों ने आग्रह किया है उसीके फलस्वरूप हम प्रकाशनकार्यमें सफल हुए हैं अभी तक आत्म सम्बोधन, धर्मबोधपूर्वार्द्ध, धर्मबोधउत्तरार्द्ध, मनोहर पद्यावलि, सहजानन्दगीता, तत्त्वरहस्य प्रकाशित हो चुके हैं इनके अतिरिक्त सामायिकपाठ, वास्तविकता (Reality), अपनी बात-चीत (Talk to self), आत्मकीर्तन सार्थ (Psalm of the soul) ये ट्रेक्ट भी प्रकाशित हो चुके हैं अब यह प्रस्तुत ग्रन्थ जीवस्थानचर्चा जो आपके हाथमें है प्रकाशित हो रहा ।

मुजफ्फरनगरमे सन् १९५० के चातुर्मासमें आध्यात्मिक सन्त न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराजके समीप चार भाइयोंने चौबीस ठाणाका अध्ययन किया। आप उन्हे सरल और नवीन शैलीसे स्थानोंके लक्षण बताकर समझाते थे जिसके कारण उन्होंने चर्चाका खूब अभ्यास किया एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थोंका अध्ययन किया। उनमेंसे अध्यात्मरसिक भाई श्री मूलचन्दजी एव रमेशचन्दजी का विशेष आग्रह हुआ कि इन चर्चाओंका विशेषताके साथ निर्माण कीजिये तब उनके निमित्तसे सभी भाइयोंके अध्ययन मननके अर्थ पूज्यश्रीने इस ग्रन्थको नवीन सरल शैलीसे विस्तारपूर्वक चौतीस स्थानोंकी चर्चासे पूर्ण बनाया।

मेरा विश्वास है कि जो भाई इसका मनन करेंगे वे कठिन आगम समुद्रमें जल्दी प्रवेश पा सकेंगे।

अन्तमे निवेदन है कि विद्वज्जन, यदि इसमे मुद्रण आदि असावधानीवश कोई त्रुटि हो गई हो तो सूचित करनेकी कृपा करें ताकि अगले संस्करणमे इसे शुद्ध कर दिया जावे।

जैन धर्म सेवक—

ब्र० जीवानन्द जैन

मेरठ केन्ट
सन १९५३

अध्य० श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

"प्रस्तावना"

मुझे परमपूज्य शांतिमूर्ति श्री १०५ क्षुल्लक मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराजसे 'चौबीस ठाणा' ग्रन्थ अध्ययन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उस समय तो मुझे लगता था कि यह सब पढ़नेका लाभ क्या होगा ? पर आज पता चलता है कि उस समय यदि पूज्य महाराज जी कृपा करके मुझे वह न पढ़ाते तो और ग्रन्थोंका स्वाध्याय करनेमें कितनी कठिनाई प्रतीत होती कहा नहीं जा सकता। उस समय भी उस चौवीस ठाणाके अन्तर्गत विषयोंके अतिरिक्त पूज्य श्री कई अन्य विषय भी मुझे समझाते रहते थे। उन्हीं सब विषयोंका दिग्दर्शन पूज्य श्री द्वारा रचित इस नवीन ग्रन्थ 'जीवस्थान चर्चा' अथवा 'चौबीस ठाणा' में कराया गया है।

संसारीजन पर्यायबुद्धि हैं। उनके केवल तत्वको समझनेके लिये व्यवहार उपाय हैं। जैसे कि जो जीव तत्वको किसी रूपमें भी नहीं समझता अथवा सर्वरूप समझता है, उसे प्रथम यह बताया जाता है कि जो यह चल रहा, बढ़ रहा, समझ रहा, खा-पी रहा आदि सो जीव है और चौकी, घड़ी आदि अचेतन अजीव हैं। इस उपायसे खालिस अजीव पदार्थसे तो हटा परन्तु स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर एवं रागादि भाव और पर्यायगत ज्ञान एवं सामान्यतत्व इन सबसे मिले हुए पिण्डको जीव मानने लगा। अभी उसकी दृष्टिमें यह नहीं है कि ये ५ तत्व हैं। यह तो ज्ञानियोंकी भाषामें बताया है। इतना समझ लेनेपर फिर उसे कहा जाता है कि यह स्थूल शरीर जो औदारिक आदि रूप है वह भी आत्मासे भिन्न है। तदनन्तर कहा जाता है कि जो सूक्ष्म शरीर (कार्माण तैजस) है वह भी अचेतन है एवं जो जो भी असमान द्रव्यपर्याय हैं जैसे गति, इन्द्रिय, काय आदि वे भी भिन्न हैं। इतना ज्ञान करा देनेपर फिर यह बताया जाता है कि रागादि भाव (कषाय, वेद, लेश्या आदि) भी तेरे स्वभाव न होनेसे पृथक् हैं।

यहाँतक यह जान सका कि जानना, देखना आदि निजगुणोंके हो रहे विकासरूप जीव है। इसके पश्चात उसे ज्ञान कराया जाता है कि मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, सामायिक, छेदोपस्थापना आदि आत्माके गुणोंके अपूर्ण अंश हैं इसलिये यह भी द्रव्यदृष्टिसे आत्मा नहीं हैं। इसके बाद केवलज्ञानादिपर्यायविशिष्टसामान्यतत्त्ववान आत्मापर पहुंचे हुए जीवको द्रव्यार्थिकनयसे यह समझाया जाता है कि पर्याय तो क्षणध्वंसी है अतः यद्यपि शुद्ध पर्याय सामान्यके अनुरूप है तथापि त्रैकालिक स्वरूप न होनेसे द्रव्यार्थिकनयका विषयभूत सामान्यतत्व निर्विकल्प सत् श्रद्धेय-उपादेय है जिसमें कि या जिसके सम्बन्धमें ये सब पर्यायें-विशेष होते हैं।

इस प्रकार व्यवहार भाषा हमारे लक्ष्यका उपाय है। अतः जो आत्मसम्बन्धी विशेष पर्यायोंका वर्णन है वह हमको व्यवहार में उपादेय है। इस ग्रन्थमें आत्माकी विशेष अवस्थाओंका अच्छे विस्तारसे वर्णन है। सम्यग्ज्ञान अनतनयात्मक होता है, वस्तु भी सामान्य विशेषात्मक होती है अतः ये सब भेद प्रभेद जो इस ग्रन्थमें प्ररूपित हैं वे सब सत्य हैं जैसे कि सामान्य भी सत् है वैसे विशेष भी सत् हैं।

इसका मनन हमारे अशुभोपयोगकी निवृत्तिरूप होनेसे संवर-निर्जराका कारण भी है।

प्रस्तुत ग्रन्थमें—बीस स्थान जो कि इन गाथाओंमें निबद्ध हैं—

"गुणजीवापज्जत्ती पाणा सण्णाओ मग्गणाओय।
उवओगोवि य कमसो वीसंतु परूवणा भणिदा ॥१॥
गइ इंदिये सु काये जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥२॥

इनके अतिरिक्त १४ निम्नलिखित विषयोंका भी वर्णन है—

(१) ध्यान, (२) आश्रव, (३) भाव, (४) अवगाहना, (५) बंधप्रकृति, (६) उदयप्रकृति, (७) सत्त्वप्रकृति, (८) संख्या, (९) क्षेत्र, (१०) स्पर्शन, (११) काल, (१२) अन्तर (१३) जाति, (१४) कुल।

इनमें भी आपने प्रत्येक विषयका पांच प्रकारसे वर्णन किया है। जैसे गुणस्थानका वर्णन करना है तो आपने बतलाया है कि सामान्य आलापमें मनुष्यके १४ गुणस्थान हो सकते हैं। पर्याप्त नाना जीवोंमें १४ गुणस्थान, पर्याप्त एक जीवमें १४ में एक गुणस्थान, अपर्याप्त नाना जीवोंमें ५ गुणस्थान और अपर्याप्त एक जीवमें पांचमें एक गुणस्थान हो सकते हैं। इसी तरह गति, इन्द्रिय, काय, योग आदि ३४ स्थानों को लगाते जाना चाहिये।

इस ग्रन्थका आध्यात्मिक जीवनमें कितना महत्व है यह बतलाना मेरी शक्तिसे परे है। प्रतीत तो यह एक छोटी सी पुस्तक होती है परन्तु है वास्तवमें यह महानसे महान ग्रन्थोंको समझनेके लिये कुंजी (प्रवेशद्वार)। यदि इसका ज्ञान न हो तो अन्य ग्रन्थोंको समझना प्रायः असम्भव सा ही है।

जो शास्त्र स्वाध्यायके प्रेमी हैं, जिन्हें कुछ ज्ञान प्राप्त करके आत्मकल्याण करनेकी इच्छा है वह इस ग्रन्थको केवल एक बार ही पढ़कर सन्तुष्ट न हो जायें वरन् बार-बार पढ़ें। और कहीं यदि इसे वे कण्ठस्थ कर लें तब तो फिर उनके लिये कुछ कठिन ही न रहेगा ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

क्या मैं आशा करूँ कि आप इस ग्रन्थका स्वाध्याय अवश्य करेंगे?

मूलचन्द जैन
मुजफ्फरनगर

"यत्किंचित्"

एक ऐसा ग्रन्थ आपके सम्मुख उपस्थित है जिसके विषयका समझना और समझाना मन्दबुद्धियोंकेलिए तो अत्यन्त कठिन है ही, विद्वानोंकेलिए भी अधिक सरल नहीं। परन्तु पूज्य श्री वर्णी जी महाराजने इसी बात को ध्यानमें रखते हुए उसे इस प्रकारसे बनाया है कि प्रत्येक मनुष्य जो जीवतत्वको जाननेका इच्छुक हो, थोड़ा-सा ही परिश्रम करके भली भांति समझ सकता है। 'जीवस्थान चर्चा' का विषय बहुत गूढ़ है यह तो आप जानते ही हैं और फिर उसको पाँच-पाँच प्रकारके वर्णनसे समझाना पूज्य श्री वर्णी जी महाराज जैसे उच्च कोटिके ज्ञानवान्से ही संभव हो सकता है। इस ग्रन्थका परिचय देनेकी मुझे आवश्यकता नहीं है। वह आप 'प्रस्तावना' में पढ़ सकते हैं। फिर भी मेरा आपसे इतना अनुरोध है कि श्रीमान् भाई मूलचन्द जीने अपने लेखमें ग्रन्थके विषयमें जो दिग्दर्शन किया है, उसे आप पढ़ें अवश्य।

यह ग्रन्थ अपना विशेष महत्व रखता है अतः इसके सम्पादनका भार जो मुझे सौंपा गया यह मेरा सौभाग्य है। मैंने अपना भरसक प्रयत्न किया है कि इसके मुद्रणमें कोई भी त्रुटि न रहने पावे, परन्तु फिर भी यह सम्भव हो सकता है कि कोई त्रुटि रह गई हो उसके लिये विद्वज्जन सुधार कर लेवें और कार्यालयमें सूचना भेजनेका कष्ट करें ताकि अगले संस्करण में अशुद्धियां न रह सकें।

जीवोंके विविधस्थानोंकी चर्चा करते हुए भी जिस ज्ञानस्वभावी आत्माकी अन्तर्बाह्य कारणवश ये तरंगें हैं उनके आधारभूत ज्ञानस्वभावको पहिचानते हुए ज्ञानस्वभावपर लक्ष्य करनेका प्रयत्न करें। जीवोंकी जातियां जाननेसे, चर्चाओंसे अशुभोपयोगकी निवृत्ति होगी एवं विशेषोंको जानकर उनमें अनुगत सामान्यको समझनेमें प्रेरणा मिलेगी।

मैं प्रेस वालोंको हार्दिक धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता जिनके विशेष सहयोगके विना इस ग्रन्थका मुद्रण अत्यन्त कठिन होता। अन्तमें मैं आशा करता हूं कि जिज्ञासुगण इस ग्रन्थका स्वाध्याय करके अपना आत्मोद्धार करेंगे।

१-२ गंज मौहल्ला उन्निनीपु—

मेरठ सदर रतनलाल जैन

श्रावण पूर्णिमा, वी० नि० सं० २४७६

शुद्धाशुद्धिपत्र

पृ० पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१–१	त्यक्नवान्तः	त्यक्त्वान्तः
१–४	अर्थ	अथ
३–१६	चढ़ते है सो	चढ़ते हैं और यदि क्षयकी क्रिया प्रारंभ करते हैं तो क्षपक श्रेणि चढ़ते हैं सो
४–१२	अशुभ प्रवृत्तियां	अशुभ प्रकृतियां
४–२२	क्षायके बाद	क्षयके बाद
६–२१	अपर्याप्ति	अपर्याप्त
११–७	उसकी	उनकी
१२–२०	निमित्त को	निमित्तसे
१५–६	काय होता है उसके	काय (५ वां देह) के
१६–२२	हंसनेके	हँसनेके
१७–२२	जानना	जाननेको
२०–५	योगप्रवृति	योगप्रवृत्ति
२०–१२	मेद हो	मंद हो
२३–६	मिथ्यात्वरूप	मिथ्यात्वरूप
२३–१८	सयोगीके यदि	सयोगीके यद्यपि
२७–७	श्रद्धाना	श्रद्धान.
२६–१६	अचक्षुदर्श	अचक्षुदर्शन

३५--५	बतालाना	बतलाना
३५--१३	उसीमें जीथनस व	उसी स्थान में जीव
३८--१२	२६......	२६......
७५--६	११।११।११	१०।१०।१०
७८--६	११	१३
८७--५	३६।३७	४०।३८
८६--५	४०।३८	४१।३६
६१--५	४१।३६	४२।४०
१०५--१		सम्यक्त्व
१२३--४	११	१०
१२८--२	अपर्याप्त (औ०	अपर्याप्त (आ०
१२८--४	१०।१०।१०।१०।१०औ	१०।१०।१०।७।७।आ
१६२--१३	६।६।१	७।७।१(य०
१६०--६	४।४	४।३ देव विना
१६२--८	४।४	४।३ ,,
२०६--५	५२।५२	५५।५५ आहारक २ विना
२२५--६	४५।४३।४३	४६।४४।४४

लेखक—

श्री अध्यात्मयोगी, शान्तमूर्ति, सिद्धांतन्यायसाहित्यशास्त्री, न्यायतीर्थ,
पूज्यश्री १०५ क्षुल्लक मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराज।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

पूज्यश्री १०५ क्षुल्लकमनोहरवर्णीसहजानन्दप्रणीता

जीवस्थानचर्चा

—:०:—

मंगलाचरण

बाह्यत्वं विविधस्थानं त्यक्त्वयान्तः परमात्मताम् ।
धत्ते प्रणम्य तं जीवस्थानचर्चा विरच्यते ॥

अर्थ—इसग्रन्थमें जिन स्थानोंके आश्रय चर्चा की जावेगी वे स्थान ये हैं:—

(१) गुणस्थान १४; (२) जीवसमास १४; (३) पर्याप्ति ६; (४) प्राण १०; (५) संज्ञा ४;

(६) गतिमार्गणा ४+१=५, (७) इन्द्रियमार्गणा ५+१=६;
(८) कायमार्गणा ६+१=७; (९) योगमार्गणा १५+१=१६;
(१०) वेदमार्गणा ३+१=४; (११) कषायमार्गणा २५+१=२६;
(१२) ज्ञानमार्गणा ५+३=८; (१३) संयममार्गणा ५+१+१+१=८;
(१४) दर्शनमार्गणा ४; (१५) लेश्यामार्गणा ६+१=७;
(१६) भव्यत्वमार्गणा २+१=३; (१७) सम्यक्त्वमार्गणा ३+१+१+१=६;
(१८) संज्ञित्वमार्गणा २+१=३; (१९) आहारकमार्गणा २;

(२०) उपयोग २; (२१) ध्यान १६; (२२) आश्रव ५७; (२३) भाव ५३; (२४) अवगाहना; (२५) बन्धप्रकृतियां; (२६) उदयप्रकृ

तियां; (२७) सत्त्वप्रकृतियां; (२८) संख्या; (२६) क्षेत्र; (३०) स्पर्शन; (३१) काल; (३२) अन्तर; (३३) जाति ८४ लाख; (३४) कुल १६७॥ लाख कोटि ।

गुणस्थान

गुणस्थान—मोह और योगके निमित्तसे होने वाली आत्मा के दर्शन ज्ञान और चारित्र गुणोंकी अवस्थावोंको गुणस्थान कहते हैं, गुणस्थान १४ होते हैं; १ मिथ्यात्व, २ सासादन सम्यक्त्व, ३ मिश्रसम्यक्त्व (सम्यग्मिथ्यात्व), ४ अविरत सम्यक्त्व ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत, ८ अपूर्वकरण, (उपशमक व क्षपक), ६ अनिवृत्तिकरण (उपशमक व क्षपक) १० सूक्ष्मसाम्पराय (उपशमक व क्षपक), ११ उपशान्तमोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगकेवली, १४ अयोगकेवली ।

१ मिथ्यात्व—मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत जीवादि ७ तत्त्वोंमें यथार्थ श्रद्धान न होनेको मिथ्यात्व कहते हैं, मिथ्यात्वमें जीव देहको आत्मा मानता है, तथा अन्य भी परपदार्थोंको अपना मानता है, कषाय परिणामोंसे भिन्न ज्ञानमात्र आत्माका अनुभव नहीं कर सकता है ।

२ सासादन सम्यक्त्व—उपशमसम्यक्त्व नष्ट होजानेपर मिथ्यात्वका उदय न आ पानेतक अनंतानुबंधी कषायके उदयसे जो अयथार्थ भाव रहता है उसे सासादन सम्यक्त्व कहते हैं ।

३ सम्यग्मिथ्यात्व—जहां ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्वरूप हो और न केवल मिथ्यात्वरूप हो किन्तु मिला

हुआ हो उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

४ अविरतसम्यक्त्व--जहां सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो गया हो किंतु किसी भी प्रकारका व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो उसे अविरतसम्यक्त्व कहते हैं। इस गुणस्थानमें उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व ये तीनों प्रकारके सम्यक्त्व हो सकते हैं।

५ देशविरत—जहां सम्यग्दर्शन भी प्रकट होगया हो और संयमासंयम भी होगया हो उसे देशविरत कहते हैं।

६ प्रमत्तविरत--जहां महाव्रतका भी धारण हो चुका हो किन्तु संज्वलनकषायका मंद उदय न होनेसे प्रमाद हो वह प्रमत्तविरत है।

७ अप्रमत्तविरत—जहां संज्वलनकषायका मंद उदय होनेसे प्रमाद नहीं रहा उसे अप्रमत्तविरत कहते हैं, इसके दो भेद हैं—१ स्वस्थान अप्रमत्तविरत, २ सातिशय अप्रमत्त विरत। स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थानमें पहुँचते हैं, और इस प्रकार छठेसे सातवेंमें सातवेंसे छठेमें परिणाम आते रहते हैं।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनिके अधःकरण परिणाम होते हैं और वे यदि चारित्रमोहनीयका उपशम प्रारम्भ करते हैं तो उपशमश्रेणि चढ़ते हैं सो वे दोनों (उपशम या क्षपकश्रेणि चढ़ने वाले) आठवें गुणस्थानमें पहुँचते हैं।

सातिशय अप्रमत्तविरतके परिणामका नाम अधःकरण इसलिए है कि इसके कालमें विवक्षित समयवर्ती मुनिके

परिणामके सदृश कुछ पूर्व उत्तरसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम हो सकते हैं।

८ अपूर्वकरण—इस गुणस्थानमें अगले अगले समयमें अपूर्व अपूर्व परिणाम होते हैं, ये उपशमक व क्षपक दोनों तरहके होते हैं। इस परिणामका अपूर्वकरण नाम इसलिए भी है कि इसके कालमें समानसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम सदृश भी हो जांय किन्तु उस विवक्षित समयसे भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियोंके परिणाम विसदृश ही होंगे।

इस गुणस्थानमें प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, कर्मोंकी स्थितिका घात होने लगता, स्थितिबंध कम होजाते हैं, बहुत सा अनुभाग नष्ट होजाता है, असंख्यात गुणी प्रदेशनिर्जरा होती है, अनेक अशुभप्रवृत्तियां शुभमें बदल जाती हैं।

९ अनिवृत्तिकरण—इस गुणस्थानमें चढ़ते हुए अधिक विशुद्ध परिणाम होते हैं, ये उपशमक, क्षपक दोनों प्रकारके होते हैं। इस परिणामका अनिवृत्तिकरण नाम इसलिए है-कि इसके कालमें विवक्षित समयमें जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा, यहां भी भिन्न समयवालोंके परिणाम विसदृश ही होंगे। इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीयकी २० प्रकृतियोंका (अप्रत्या० ४, प्रत्या० ४, संज्वलन ३, हास्यादि ९) उपशम या क्षय होजाता है।

१० सूक्ष्मसाम्पराय—नवमें गुणस्थानमें होनेवाले उपशम या क्षायके बाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्मलोभ रह जाता है ऐसा जीव

सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती कहा जाता है इस गुणस्थानमें सूक्ष्मसाम्परायचारित्र होता है जिसके द्वारा अन्तमें सूक्ष्मलोभका भी उपशम या क्षय कर देता है।

११ उपशान्तमोह—समस्त मोहनीयकर्मका उपशम हो चुकते ही उपशान्तगुणस्थानवर्ती जीव हो जाता है, इस गुणस्थानमें यथाख्यातचारित्र हो जाता है, किंतु उपशमका काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थानमें गिरना पड़ता है या मरना हो तो चौथे गुणस्थानमें एकदम आना पड़ता है।

१२—क्षीणकषाय—(क्षीणमोह) क्षपकश्रेणिसे चढ़नेवाला मुनि ही समस्त मोहनीयके क्षय होते ही क्षीणमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है, इस गुणस्थानमें यथाख्यातचारित्र हो जाता है तथा इसके अन्त समयमें ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अंतराय कर्मका भी क्षय हो जाता है।

१३ सयोगकेवली—चारों घातिया कर्मके नष्ट होते ही यह आत्मा सकलपरमात्मा हो जाता है, उन केवली भगवानके जबतक योग रहता है तबतक उन्हें सयोगकेवली कहते हैं, इनके विहार भी होता है, दिव्यध्वनि भी खिरती है, तीर्थङ्कर सयोगकेवली के समवशरणकी रचना होती है, सामान्य सयोगकेवलीके गंध-कुटीकी रचना होती है, इन सबका नाम अर्हंतपरमेष्ठी भी है, अंतिम अंतर्मुहूर्त में इनके बादरयोग नष्ट होकर सूक्ष्मयोग रह जाता है और अंतमें यह सूक्ष्मयोग भी नष्ट हो जाता है।

१४ अयोगकेवली—योगके नष्ट होते ही ये परमात्मा अयोग-

केवली कहलाते हैं, शरीरके क्षेत्रमें रहते हुए भी इनके प्रदेशोंका शरीरसे कुछ सम्बंध नहीं रहता, इनका काल "अ इ उ ऋ लृ" इन पांच ह्रस्व अक्षरोंके बोलनेके बराबर काल रहता है, उपान्त्य और अंत्यसमयमें शेषकी बची हुई ७२, और १३ प्रकृतियोंका नाश कर देते हैं इसके बाद ही ये गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते हैं।

जीवसमास

जीवसमास— जिन सदृश धर्मों द्वारा अनेक जीवोंका संग्रह किया जा सके उन सदृशधर्मोंका नाम जीवसमास है, ये १४ हैं—

१. एकेन्द्रियबादर पर्याप्त, २. एकेन्द्रियबादर अपर्याप्त, ३. एकेन्द्रियसूक्ष्म पर्याप्त, ४. एकेन्द्रियसूक्ष्म अपर्याप्त, ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त, ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त, १२. असैनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त, १३. सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४. सैनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त।

१ एकेन्द्रियबादर पर्याप्त—जिन जीवोंके एक स्पर्शन इन्द्रिय है तथा बादर शरीर (जो दूसरे बादरको रोक सके और जो दूसरे बादरसे रुक सके) है, और पर्याप्ति भी पूर्ण हो गई वे एकेन्द्रियबादर पर्याप्त हैं; ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रूप पांच प्रकारके होते हैं।

२ एकेन्द्रियबादर अपर्याप्ति—एकेन्द्रियबादरोंमें उत्पन्न होने वाले जीव उस आयुके प्रारम्भसे लेकर जबतक उनकी शरीर-

पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती तबतक वे वादर अपर्याप्त कहलाते हैं इनमेंसे जो जीव ऐसे हैं जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जायगा उन्हें लब्ध्यपर्याप्त कहते हैं, और जो जीव ऐसे हैं जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई परन्तु पर्याप्ति पूर्ण नियमसे करेंगे उन्हें निवृत्त्यपर्याप्त कहते हैं।

३ एकेन्द्रियसूक्ष्म पर्याप्त–इनका शरीर न दूसरेको रोक सकता और न दूसरेसे रुक सकता, शेष वर्णन सुगम है।

४ एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त–जो एकेन्द्रिय हैं और सूक्ष्मनाम कर्मके उदयवाले हैं तथा निवृत्त्यपर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं उन्हें एकेन्द्रियसूक्ष्म अपर्याप्त कहते हैं।

५ द्वीन्द्रिय पर्याप्त– जिनके स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रिय हैं और पर्याप्त हैं वे द्वीन्द्रिय पर्याप्त हैं।

६ द्वीन्द्रिय अपर्याप्त–द्वीन्द्रिय जीव जो निवृत्त्यपर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं वे द्वीन्द्रिय अपर्याप्त हैं।

७ त्रीन्द्रिय पर्याप्त–जिसके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय हैं और पर्याप्त हो चुके हैं वे त्रीन्द्रिय पर्याप्त हैं।

८ त्रीन्द्रिय अपर्याप्त–त्रीन्द्रिय जीव जो निवृत्त्यपर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं वे त्रीन्द्रिय अपर्याप्त हैं।

९ चतुरिन्द्रिय पर्याप्त–जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु ये चार इन्द्रिय हैं और पर्याप्त हो चुके हैं वे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त हैं।

१० चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त–चतुरिन्द्रिय जो निवृत्त्यपर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं वे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त हैं।

११ असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, ये पांचों इन्द्रियां हैं किन्तु मन नहीं है वे पर्याप्ति पूर्ण हो जानेके बाद असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं। ये जीव केवल तिर्यञ्चगतिमें होते हैं। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव भी केवल तिर्यञ्चगतिमें होते हैं।

१२ असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त—असंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव जो निवृ-त्यपर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं वे असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहलाते हैं।

१३ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त—जो पंचेन्द्रिय हैं और मनसहित हैं तथा पर्याप्ति भी जिनकी पूर्ण हो चुकी है वे सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं।

१४ सैनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त—संज्ञीपंचेन्द्रिय जीव जो निर्वृत्य-पर्याप्त या लब्ध्यपर्याप्त हैं वे सैनीपंचेन्द्रियअपर्याप्त कहलाते हैं।

पर्याप्ति

पर्याप्ति—आहारवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणाके परमाणु-ओंको शरीर, इन्द्रिय आदि रूप परिणमावनेकी शक्तिकी पूर्णताको पर्याप्ति कहते हैं। पर्याप्ति ६ हैं—१. आहारपर्याप्ति, २. शरीरपर्याप्ति, ३. इंद्रियपर्याप्ति, ४. श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति, ५. भाषापर्याप्ति, ६. मनःपर्याप्ति।

१. आहारपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल और रस भागरूप परिणमानेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं।

२. शरीरपर्याप्ति-जिन परमाणुओंको खलरूप परिणमाया था उनको हाड़ वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीरपर्याप्ति कहते हैं।

३. इंद्रियपर्याप्ति-आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणमावनेको तथा इन्द्रियद्वारा विषय ग्रहण करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इंद्रियपर्याप्ति कहते हैं।

४. श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति- आहारवर्गणाके परमाणुओंको श्वासोच्छ्वासरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति कहते हैं।

५. भाषापर्याप्ति-भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचनरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषापर्याप्ति कहते हैं।

६. मनःपर्याप्ति-मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें ८ पांखुरीके कमलाकार मनरूप परिणमावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मनःपर्याप्ति कहते हैं।

प्राण

प्राण-जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो उनको प्राण कहते हैं। प्राण १० हैं —

(१) स्पर्शनेन्द्रिय, (२) रसनेन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय,

(४) चक्षुरिन्द्रिय, (५) श्रोत्रेन्द्रिय, (६) मनोवल, (७) वचनवल, (८) कायवल, (९) आयु, (१०) श्वासोच्छ्वास ।

संज्ञा

संज्ञा–वांछाके संस्कारको संज्ञा कहते हैं। ये संज्ञा ४ हैं।

(१) आहारसंज्ञा, (२) भयसंज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, (४) परिग्रहसंज्ञा ।

१. आहारसंज्ञा–आहारसंबन्धी वाञ्छाके संस्कारको आहार-संज्ञा कहते हैं ।

२. भयसंज्ञा–भयसंबन्धी परिणामके संस्कारको भयसंज्ञा कहते हैं ।

३. मैथुनसंज्ञा–मैथुनसंबंधी वाञ्छाके संस्कारको मैथुनसंज्ञा कहते हैं ।

४. परिग्रहसंज्ञा–परिग्रहसंबंधी वाञ्छाके संस्कारको परिग्रहसंज्ञा कहते हैं ।

मार्गणा

मार्गणा—जिन धर्मविशेषोंसे जीवोंकी खोज होसके उन धर्मविशेषोंसे जीवोंको खोजना मार्गणा है। ये १४ हैं :—

१. गति, २. इन्द्रिय, ३. काय, ४. योग, ५. वेद, ६. कषाय ७. ज्ञान, ८. संयम, ९. दर्शन, १०. लेश्या, ११. भव्यत्व, १२. सम्यक्त्व, १३. संज्ञी, १४. आहारक ।

गतिमार्गणा

१. गतिमार्गणा—गतिनामा नामकर्मके उदयसे उस-उस गति-

विपयक भावके कारणभूत जीवकी अवस्थाविशेपको गति कहते हैं। इसकी मार्गणा ५ हैं।

१. नरकगति, २. तिर्यञ्चगति, ३. मनुष्यगति, ४.देवगति, ५. सिद्धगति (अगति)।

१. नरकगति—इस पृथ्वीके नीचे सात नरक हैं उनमें नारकी जीव रहते हैं उन्हें बहुत काल पर्यन्त घोर दुख सहना पड़ता है उसकी गतिको नरकगति कहते हैं।

२. तिर्यञ्चगति—नारकी, मनुष्य और देवके अतिरिक्त जितने संसारी जीव हैं वे सब तिर्यञ्च कहलाते हैं। एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामिल हैं) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असैनी पंचेन्द्रिय ये तो नियमसे तिर्यञ्च होते हैं और सिंह, घोड़ा, हाथी, कबूतर, मत्स्य आदि सैनी जीव उक्त लक्षणवाले तिर्यञ्च होते हैं उनकी गतिको तिर्यञ्चगति कहते हैं।

३. मनुष्यगति—स्त्री, पुरुप, बालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते हैं, इनकी गतिको मनुष्यगति कहते हैं।

४. देवगति—भवनवासी, व्यन्तर (जिनके निवासस्थान इस पृथ्वीके खरभाग व पंकभागमें हैं) ज्योतिपि (सूर्य चन्द्र तारादि) व वैमानिक (१६ स्वर्ग, नवग्रैवेयक, नवअनुदिश, पांच अनुत्तरमें रहनेवाले) इन चार प्रकारके देवोंकी गतिको देवगति कहते हैं।

५. सिद्धगति (अगति)—गतिसे रहित जीवोंकी गतिको सिद्ध गति कहते हैं। इनके गति नहीं है ये गतिरहित हैं।

इन्द्रिय मार्गणा

इन्द्रियावरणके क्षयोपशम होनेपर होनेवाले आत्माके चिह्न-विशेषको इन्द्रिय कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ हैं—

१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय, ५. पंचेन्द्रिय, और ६. अतीन्द्रिय।

एकेन्द्रिय आदिका वर्णन होचुका है।

अतीन्द्रिय— जो इन्द्रियों (द्रव्येन्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों) से रहित हैं वे अतीन्द्रिय कहलाते हैं।

कायमार्गणा

आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गलपिण्डको काय कहते हैं। इनकी मार्गणा ७ हैं :—

१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक, ३. अग्निकायिक, ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकाय।

जिनके पृथ्वी आदि शरीर हो वे पृथ्वीकायिक आदि कहलाते हैं।

अकाय—जिनके कोई प्रकारका काय नहीं रहा ये अकायिक (अकाय) कहलाते हैं।

योगमार्गणा

मन, वचन, कायके निमित्तको आत्मप्रदेशके परिस्पंद (हलन चलन) का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते हैं। इसकी मार्गणा १६ हैं :—

१. सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनोयोग,

४. अनुभयमनोयोग, ५. सत्यवचनयोग, ६. असत्यवचनयोग, ७. उभयवचनयोग, ८. अनुभयवचनयोग, ९. औदारिककाय-योग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग, ११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रियकमिश्रकाययोग, १३. आहारककाययोग, १४. आहारकमिश्रकाययोग, १५. कार्माणकाययोग, १६. अयोग।

१. सत्यमनोयोग—सत्य वचनके कारणभूत मनको सत्यमन कहते हैं उसके निमित्तसे होनेवाले योगको सत्यमनोयोग कहते हैं।

२. असत्यमनोयोग—असत्यवचनके कारणभूत मनको असत्य-मन कहते हैं और उसके निमित्तसे होनेवाले योगको असत्यमनो-योग कहते हैं।

३. उभयमनोयोग—उभय (सत्य असत्य दोनों) मनके निमित्त से होनेवाले योगको उभयमनोयोग कहते हैं।

४. अनुभयमनोयोग—अनुभय (न सत्य न असत्य) मनके निमित्तसे होनेवाले योगको अनुभयमनोयोग कहते हैं।

५. सत्यवचनयोग—सत्यवचनके निमित्तसे होनेवाले योगको सत्यवचनयोग कहते हैं।

६. असत्यवचनयोग—असत्यवचनके निमित्तसे होने वाले योगको असत्यवचनयोग कहते हैं।

७. उभयवचनयोग—उभय (सत्य असत्य दोनों) वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको उभयवचनयोग कहते हैं।

८. अनुभयवचनयोग—अनुभय (न सत्य न असत्य) वचनके

निमित्तसे होनेवाले योगको अनुभयवचनयोग कहते हैं।

९. औदारिककाययोग—मनुष्य तिर्यञ्चोंके शरीरको औदारिक-शरीर कहते हैं उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे औदारिककाययोग कहते हैं।

१०. औदारिकमिश्रकाययोग—कोई प्राणी मरकर मनुष्य या तिर्यञ्चगतिमें स्थानपर पहुँचते ही औदारिकवर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जबतक शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) उसके कार्माणमिश्रित औदारिकवर्गणाओं केद्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशमें परिस्पंदके लिये जो प्रयत्न होता है उसे औदारिकमिश्रकाययोग कहते हैं।

११. वैक्रियककाययोग—देव व नारकियोंके शरीरको वैक्रियक-काय कहते हैं उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे वैक्रियक-काययोग कहते हैं।

१२. वैक्रियकमिश्रकाययोग—कोई मनुष्य तिर्यञ्च मरकर देव या नरक गतिमें स्थानपर पहुंचतेही वैक्रियकवर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जबतक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) उसके कार्माणमिश्रित वैक्रियक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो प्रयत्न होता है उसे वैक्रियकमिश्रकाययोग कहते हैं।

१३. आहारककाययोग—सूक्ष्मतत्त्वमें संदेह होनेपर या तीर्थ वन्दनादिके निमित्त आहारकऋद्धिवाले छठे गुणस्थानवर्ती मुनियोंके मस्तिकसे १ हाथका धवल शुभ व्याघात रहित,

आहारकशरीर निकलता है उसे आहारककाय कहते हैं; उसके निमित्तसे होनेवाले योगको आहारककाययोग कहते हैं।

१४. आहारकमिश्रकाययोग—आहारकशरीरकी जबतक पर्याप्ति (पूर्ति) नहीं होती तबतक औदारिक व आहारक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदकेलिए जो प्रयत्न होता है उसे आहारकमिश्रकाययोग कहते हैं।

१५. कर्माणकाययोग—मोड़वाली विग्रहगतिको प्राप्त चारों गतियोंके जीवोंके तथा प्रतर और लोकपूरण समुद्धातको प्राप्त केवली जिनके कार्माणकाय होता है उसके निमित्तसे होनेवाले योगको कार्माणकाययोग कहते हैं।

१६. अयोग—अयोगकेवली व सिद्ध भगवान्‌के योग नहीं होता है।

वेदमार्गणा

पुंवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेदके उदयसे उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषाको वेद कहते हैं। इसकी मार्गणा ४ हैं:—

(१) पुंवेद, (२) स्त्रीवेद, (३) नपुंसकवेद, (४) अपगतवेद

१. पुंवेद (पुरुषवेद)—जिससे स्त्रीके साथ रमण करनेकी इच्छा हो।

२. स्त्रीवेद—जिससे पुरुषके साथ रमणका भाव हो।

३. नपुंसकवेद—जिससे दोनोंके साथ रमण करनेका भाव हो।

४ अपगतवेद—जहां वेदका अभाव हो।

कषायमार्गणा

जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचारित्र, सकलचारित्र, और यथाख्यातचारित्ररूप गुणको घातै उसे कषाय कहते हैं इनकी मार्गणा २६ हैं—

१-४. अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ, ५-८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, ९-१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, १३-१६, संज्वलन क्रोध मान, माया, लोभ, १७. हास्य, १८. रति, १९. अरति, २०. शोक २१. भय, २२. जुगुप्सा, २३. पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद, २५. नपुंसकवेद, २६. अकषाय।

१-४. अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ उन्हें कहते हैं जो आत्माके सम्यक्त्व गुणको घातैं।

५-८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ उन्हें कहते हैं जो देशचारित्रको घातैं। (देशचारित्र श्रावक-पंचमगुणस्थानवर्तीके होता है)।

९-१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ उन्हें कहते हैं जो सकलचारित्रको घातैं। (सकलचारित्र मुनियोंके होता है)

१३-१६. संज्वलन क्रोध मान माया लोभ उन्हें कहते हैं जो यथाख्यातचारित्रको घातैं। (यथाख्यातचारित्र ११, १२, १३, १४ वें गुणस्थानमें होता है)

१७. हास्य—हंसनेके परिणामको कहते हैं।

१८. रति—इष्टपदार्थमें प्रीति करनेको कहते हैं।

१६. अरति—अनिष्ट पदार्थमें अप्रीति करनेको कहते हैं।

२०. शोक—रंजके परिणामको कहते हैं।

२१. भय—डरको कहते हैं।

२२. जुगुप्सा—ग्लानि करनेको कहते हैं।

२३-२४-२५. पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद—का वर्णन हो चुका।

२६. अकषाय—कषायके अभावको कहते हैं।

ज्ञानमार्गणा

वस्तुके जाननेको ज्ञान कहते हैं इसकी मार्गणा ८ हैं :—

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनःपर्यय-ज्ञान, ५. केवलज्ञान, ६. कुमति, ७. कुश्रुत, ८. कुअवधि (विभंगावधि)।

१. मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनके निमित्तसे उत्पन्न होनेवाले ज्ञानको मतिज्ञान कहते हैं।

२. श्रुतज्ञान—मतिज्ञानसे जाने हुए पदार्थके सम्बन्धमें अन्य विशेष जाननेको श्रुतज्ञान कहते हैं।

३. अवधिज्ञान—इंद्रिय और मनकी सहायताके विना, आत्मीय शक्तिसे रूपी पदार्थोंको द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लेकर जाननेको अवधिज्ञान कहते हैं।

४. मनःपर्ययज्ञान—दूसरेके मनमें तिष्टते हुए (स्थित) रूपी पदार्थोंको इन्द्रिय मनकी सहायताके विना आत्मीय शक्तिसे जानना मनःपर्ययज्ञान कहते हैं।

५. केवलज्ञान—तीन लोक तीन कालवर्ती समस्त द्रव्य पर्यायों को एकसाथ स्पष्ट जानना केवलज्ञान है।

६. कुमति—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले मतिज्ञानको कुमति कहते हैं।

७. कुश्रुत—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले श्रुतज्ञानको कुश्रुत कहते हैं।

८. कुअवधि—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले अवधिज्ञानको कुअवधि कहते हैं।

संयममार्गणा

संयम—अहिंसादि पञ्च व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पांच समितियोंका पालन करना, क्रोधादि कषायोंका निग्रह करना, मनोयोग आदि तीनों योगोंको रोकना, पांचों इन्द्रियोंका विजय करना सो संयम है इसकी मार्गणा ८ हैं :—

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहारविशुद्धि, ४. सूक्ष्मसाम्पराय, ५. यथाख्यातचारित्र, ६. असंयम, ७. संयमासंयम, ८. असंयम–संयमासंयम–संयम तीनोंसे रहित।

१. सामायिक—सब प्रकारकी अविरतिसे विरक्त होना व समताभाव धारण करना सामायिक संयम है।

२. छेदोपस्थापना—भेदरूपसे व्रतके धारण करनेको या व्रतोंमें छेद (भंग) होनेपर फिरसे व्रतोंके पालन करनेको छेदोपस्थापना-संयम कहते हैं।

३. परिहारविशुद्धि—जिसमें हिंसाका परिहार प्रधान हो ऐसे

शुद्धिप्राप्त संयमको परिहारविशुद्धि संयम कहते हैं।

४. सूक्ष्मसाम्पराय-सूक्ष्मकषाय (लोभ) वाले जीवोंके जो संयम होता है उसे सूक्ष्मसाम्पराय संयम कहते हैं।

५. यथाख्यातसंयम-कषायके अभावमें जो आत्माका अनुष्ठान होता है उसमें निवास करनेको यथाख्यातसंयम कहते हैं।

६. असंयम-जहां किसी प्रकारके संयम या संयमासंयमका लेश भी न हो उसे असंयम कहते हैं।

७. संयमासंयम-जिनके त्रसकी अविरतिका त्याग हो चुका हो जिनके अणुव्रतका धारण है उनके चारित्रको संयमासंयम कहते हैं।

८. असंयम-संयम-संयमासंयमरहित-सिद्ध भगवान् सदा अपने शुद्धस्वरूपमें स्थित हैं उनके ये तीनों नहीं पाये जाते।

दर्शनमार्गणा

आत्माभिमुख अवलोकनको दर्शन कहते हैं इसकी मार्गणा ४ हैं:—

१. चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन।

१. चक्षुर्दर्शन- चक्षुरिन्द्रियजन्य ज्ञानसे पहले होनेवाले दर्शन को चक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२. अचक्षुर्दर्शन-चक्षुरिन्द्रियके अलावा अन्य इन्द्रिय व मन से उत्पन्न होनेवाले दर्शनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं।

३. अवधिदर्शन-अवधिज्ञानसे पहले होनेवाले दर्शनको

अवधिदर्शन कहते हैं।

४. केवलदर्शन-केवलज्ञानके साथ-साथ होनेवाले दर्शनको केवलदर्शन कहते हैं।

लेश्यामार्गणा

कषायसे अनुरंजित योगप्रवृत्तिको लेश्या कहते हैं इसकी मार्गणा ७ हैं—

१. कृष्णलेश्या, २. नीललेश्या, ३. कापोतलेश्या, ४. पीतलेश्या, ५. पद्मलेश्या, ६. शुक्ललेश्या, ७. अलेश्य।

१. कृष्णलेश्या-तीव्र क्रोध करनेवाला हो, वैरको न छोड़े, लड़नेका जिसका स्वभाव हो, धर्म और दयासे रहित हो, दुष्ट हो, जो किसीके वश न हो।

२. नीललेश्या-काम करनेमें मंद हो, स्वच्छंद हो, कार्य करनेमें विवेक रहितहो, विषयोंमें लम्पट हो, मानी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग उसके अभिप्रायको सहसा नहीं जान सकें, अति-निद्रालु दूसरोंके ठगनेमें चतुर, परिग्रहमें तीव्र लालसा हो।

३. कापोतलेश्या-रूसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्ष्या करे, दूसरोंका तिरस्कार करे, अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरेका विश्वास न करे, स्तुति करनेवालेपर संतुष्ट होवे, रणमें मरण चाहे, स्तुति करनेवालेको खूब धन देवे, अपना कार्य अकार्य न देखे।

४. पीतलेश्या-कार्य, अकार्य, सेव्य, असेव्यको समझनेवाला हो। सर्वसमदर्शी, दयापरायण, दानरत, कोमलपरिणामी हो।

५ पद्मलेश्या-त्यागी, भद्र, उत्तम कार्य करनेवाला, सहन-शील, साधुगुरूपूजारत हो।

६ शुक्ललेश्या-पक्षपात न करे, निदान न बांधे, सबमें समानताकी दृष्टि रखे, इष्ट राग अनिष्ट द्वेष न करे।

भव्यत्वमार्गणा

जिन जीवोंके अनन्त चतुष्टयरूप सिद्धि व्यक्त होनेकी योग्यता होवे वे भव्य हैं उनके भावको भव्यत्व कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं :—

१. भव्यत्व, २. अभव्यत्व, ३. अनुभय (न भव्यत्व न अभव्यत्व)।

उक्तयोग्यताके अभावको अभव्यत्व कहते हैं।

सिद्ध जीव न भव्य है और न अभव्य है।

सम्यक्त्वमार्गणा

मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत तत्त्वोंके यथार्थश्रद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं इसकी मार्गणा ६ हैं— १. क्षायिकसम्यक्त्व, २. उपशम सम्यक्त्व, ३. वेदक (क्षयोपशमिक) सम्यक्त्व, ४. मिथ्यात्व, ५. सासादनसम्यक्त्व, ६. सम्यग्मिथ्यात्व।

१. क्षायिकसम्यक्त्व-अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियोंके क्षयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिकसम्यक्त्व कहते हैं।

२. उपशमसम्यक्त्व—उक्त ७ प्रकृतियोंके उपशमसे जो सम्य-क्त्व होता है उसे उपशमसम्यक्त्व कहते हैं इसके दो भेद हैं :—

१. प्रथमोपशमसम्यक्त्व, २. द्वितीयोपशमसम्यक्त्व।

मिथ्यात्वके अनन्तर जो उपशमसम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशमसम्यक्त्व कहते हैं। अनादिमिथ्यादृष्टि व मिश्रप्रकृति, सम्यक्प्रकृतिको उद्वेलना कर चुकनेवाले जीवोंके अनंतानुबन्धी ४ व मिथ्यात्व इन पांचके उपशमसे प्रथमोपशमसम्यक्त्व होता है और ७ की सत्तावालोंके ७ प्रकृतियोंके उपशमसे प्रथमोपशम-सम्यक्त्व होता है।

क्षयोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर जो उपशमसम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशमसम्यक्त्व कहते हैं, यह ७ प्रकृतियोंके उपशमसे होता है। सप्तमगुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशमश्रेणि चढ़े तब क्षायिकसम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्व होना आवश्यक है, वहां यदि उपशमसम्यक्त्व करे तब द्वितीयोपशमसम्यक्त्व कहलाता है, द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमें मरण हो सकता है, यदि मरे तब देवगतिमें ही जावेगा, प्रथमोपशमसम्यक्त्वमें मरण नहीं होता।

३. वेदकसम्यक्त्व (क्षयोपशमिक)—अनंतानुबंधी ४ व मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व इन ६ प्रकृतियोंका उदयाभावी क्षय व उपशमसे तथा सम्यक्प्रकृतिके उदयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे वेदक-सम्यक्त्व कहते हैं। इस सम्यक्त्वमें सम्यक्प्रकृतिके उदयके कारण सम्यग्दर्शनमें चल मलिन व अगाढ़ (जोकि सूक्ष्म दोष हैं) दोष लगते रहते हैं।

४. मिथ्यात्व—मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे तत्त्वोंके अश्रद्धान-रूप विपरीत अभिप्रायको मिथ्यात्व कहते हैं।

५. सासादनसम्यक्त्व—सम्यक्त्वकी विराधना होनेपर अनंतानुबंधी कषायके उदयसे, यदि मिथ्यात्वका उदय न आये तो मिथ्यात्वका उदय न आनेतक, सासादनसम्यक्त्व कहलाता है।

६. सम्यग्मिथ्यात्व—सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे जो मिश्रपरिणाम होता है जिसे न तो सम्यक्त्वरूप ही कह सकते और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते हैं किन्तु कुछ समीचीन और कुछ असमीचीन है उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

संज्ञीमार्गणा

जो संज्ञ अर्थात् मनसहित हैं उन्हें संज्ञी कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं :—

१. संज्ञी, २. असंज्ञी, ३. अनुभय, (न संज्ञी न असंज्ञी)।

१. संज्ञी-सैनी पंचेन्द्रिय ही होते हैं ये चारों गतियोंमें पाये जाते हैं।

२. असंज्ञी-एकेन्द्रियसे लेकर असैनी पंचेन्द्रियतक होते हैं ये सब तिर्यञ्च हैं।

३. अनुभय-सयोगकेवली व अयोगकेवली व सिद्धभगवान् हैं ये न संज्ञी हैं क्योंकि मन नहीं, न असंज्ञी हैं क्योंकि अविवेकी नहीं। सयोगीके यदि द्रव्यमन है पर भावमन नहीं।

आहारकमार्गणा

शरीर, मन, वचनके योग्यवर्गणाओंको ग्रहण करना आहार कहलाता है।

जब कोई जीव मरकर दूसरी गतिमें जाता है तब

जन्मस्थानपर पहुँचते ही आहारक हो जाता है इससे पहले अना-हारक हो जाता है किन्तु ऋजुगतिसे जानेवाला अनाहारक नहीं होता है क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थानपर पहुँच जाता, तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव केवली जब केवलसमुद्घात करते हैं तब, २ प्रतरके समय, १ लोकपूरणका समय इन तीन समयों में अनाहारक होते हैं शेष समय आहारक होते हैं। अयोग केवली और सिद्धभगवान् अनाहारक ही होते हैं।

उपयोग

बाह्य तथा आभ्यन्तर कारणोंके द्वारा होनेवाली आत्माके चेतनागुणकी परिणतिको उपयोग कहते हैं, उपयोग २ हैं :—

१. साकारोपयोग, २. निराकारोपयोग।

१. साकारोपयोग—ज्ञानोपयोगको कहते हैं।

२. निराकारोपयोग—दर्शनोपयोगको कहते हैं।

ध्यान

एक विषयमें चिन्तवनके रुकनेको ध्यान कहते हैं। ध्यान १६ प्रकारका है—आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्म्यध्यान ४, शुक्लध्यान ४।

आर्तध्यान—१. इष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज, ३. वेदनाप्रभव, ४. निदान।

रौद्रध्यान—१. हिंसानंद, २. मृषानन्द, ३. चौर्यानन्द, ४. परिग्रहानंद।

धर्म्यध्यान—१. आज्ञाविचय, २. अपायविचय, ३. विपाकविचय, ४. संस्थानविचय।

शुक्लध्यान—१. पृथक्त्ववितर्कवीचार, २. एकत्ववितर्कावीचार, ३. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती, ४. व्युपरतक्रियानिवृत्ति।

१. इष्टवियोगज आर्तध्यान—इष्ट पदार्थके वियोग होनेपर उसके संयोगके लिए चिंतवन करना इष्टवियोगज आर्तध्यान है।

२. अनिष्टसंयोगज—अनिष्ट पदार्थके संयोग होनेपर उसके वियोगके लिए चिंतवन करना अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान है।

३. वेदनाप्रभव—शारीरिक पीड़ा होनेपर उसके सम्बन्धमें चिन्तवन करना वेदनाप्रभव आर्तध्यान है।

४. निदान—भोगविषयोंकी चाह सम्बन्धी चिन्तवनको निदान-नामक आर्तध्यान कहते हैं। आर्तध्यानमें दुःखरूप परिणाम रहता है, आर्ति=दुःख, उसमें होनेवालेको आर्त कहते हैं।

५. हिंसानन्द—कृत, कारित, आदि हिंसामें आनन्द मानना व हिंसाके लिये चिंतवन करना हिंसानंद रौद्रध्यान है।

६. मृषानन्द—झूठमें आनन्द मानना व झूठकेलिये चिंतवन करना सो मृषानंद रौद्रध्यान है।

७. चौर्यानंद—चोरीमें आनन्द मानना व चोरीके लिए चिंतवन करना चौर्यानंद रौद्रध्यान है।

८. परिग्रहानंद—परिग्रहमें आनन्द मानना व परिग्रह याने विषयकी रक्षाके लिए चिन्तवन करना परिग्रहानंद रौद्रध्यान है।

९. आज्ञाविचय—आगमकी आज्ञाकी श्रद्धासे तत्त्वचिन्तवन

करना आज्ञाविचय धर्म्यध्यान है।

१०. अपायविचय—अपने या परके रागादिक भाव जो दुःखके मूल हैं उनके विनाश होनेके विषयमें चिंतवन करना अपायविचय धर्म्यध्यान है।

११. विपाकविचय—कर्मोंके फलके सम्बन्धमें संवेगवर्द्धक चिंतवन करना विपाकविचय धर्म्यध्यान है।

१२. संस्थानविचय—लोकके आकार काल आदिके आश्रय जीवके परिभ्रमणादि विषयक असारताका चिंतवन करना व अरहंत, सिद्ध, मंत्रपद आदिके आश्रयसे तत्त्वचिंतवन करना संस्थानविचय धर्म्यध्यान है।

१३. पृथक्त्ववितर्कवीचार—अर्थ, योग, व शब्दोंके परिवर्तन सहित श्रुतके चिन्तवनको पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१४. एकत्ववितर्क-अवीचार—एकही अर्थमें एकही योगसे उन्हीं शब्दोंमें श्रुतके चिन्तवनको एकत्ववितर्क-अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१५. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती—सयोगकेवलीके अन्तिम अंतर्मुहूर्त में जबकि बादरयोग भी नष्ट हो जाता है तब सूक्ष्मकाययोगमें जो उपयोगकी स्थिरता है उसे सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुक्लध्यान कहते हैं।

१६. व्युपरतक्रियानिवृत्ति—समस्त योग नष्ट हो चुकनेपर अयोगकेवलीके यह व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान होता है।

आश्रव

कर्मोंके आनेके कारणभूत भावको आश्रव कहते हैं। इसके ५७ भेद हैं—

मिथ्यात्व ५. अविरति १२. कषाय २५. योग १५।

मिथ्यात्व ५.

१. एकांतमिथ्यात्व-अनंतधर्मात्मकवस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मकाही श्रद्धाना करना एकांतमिथ्यात्व है।

२. विपरीतमिथ्यात्व-वस्तुके स्वरूपसे विपरीत स्वरूपकी श्रद्धा करना विपरीतमिथ्यात्व है।

३. संशयमिथ्यात्व-वस्तुके स्वरूपमें संशय करना संशय-मिथ्यात्व है।

४. वैनयिक (विनय) मिथ्यात्व-देव कुदेवमें, तत्त्व अतत्त्वमें शास्त्र कुशास्त्रमें, गुरू कुगुरुमें, सभीको भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है।

५. अज्ञानमिथ्यात्व-हित, अहितका विवेक न रखना, अज्ञान-मिथ्यात्व है।

अविरति १२—

१–६–पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुका-यिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक, इन छह प्रकारके जीवोंकी रक्षा न करना पृथ्वीकाय-अविरति आदि ६ अविरति हैं।

७–१२. पांच इन्द्रिय व छटा मन इन ६ के विषयोंका त्याग न करना सो स्पर्शन-अविरति आदि ६ अविरति हैं।

कषाय २५—इनका वर्णन हो चुका है।

योग ५५–इनका भी वर्णन होचुका है।

भाव

भाव-अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम आदि होनेपर जो गुण (स्वभाव या विभावरूप) प्रकट हों उन्हें भाव कहते हैं, ये जीवमें ही होते हैं अन्यद्रव्यमें नहीं होते इसलिए ये जीवके निजतत्त्व कहलाते हैं।

ये भाव ५३ होते हैं—

औपशमिक २, क्षायिक ९, क्षायोपशमिक १८, औदयिक २१, और पारिणामिक ३.

औपशमिकभाव

औपशमिकभावके २ भेद हैं:— १. औपशमिकसम्यक्त्व, २. औपशमिकचारित्र।

१. औपशमिकसम्यक्त्व–इसका वर्णन हो चुका है।

२. औपशमिकचारित्र–चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमसे जो चारित्र हो उसे औपशमिकचारित्र कहते हैं।

क्षायिकभाव

क्षायिकभावके ९ भेद हैं:— १. क्षायिकज्ञान (केवलज्ञान), २. क्षायिकदर्शन, ३. क्षायिकदान, ४. क्षायिकलाभ, ५. क्षायिकभोग, ६. क्षायिकउपभोग, ७. क्षायिकवीर्य, ८. क्षायिकसम्यक्त्व, ९. क्षायिकचारित्र।

१. क्षायिकज्ञान–जो ज्ञानावरणकर्मके क्षयसे ज्ञान प्रकट हो उसे क्षायिकज्ञान (केवलज्ञान) कहते हैं।

२. क्षायिकदर्शन-जो दर्शनावरणकर्मके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिकदर्शन (केवलदर्शन) कहते हैं।

३. क्षायिकदान-जो दानान्तरायके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिकदान कहते हैं।

४. क्षायिकलाभ-जो लाभान्तरायके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिकलाभ कहते हैं।

५. क्षायिकभोग-जो भोगान्तरायके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिकभोग कहते हैं।

६. क्षायिकउपभोग-जो उपभोगान्तरायके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिक उपभोग कहते हैं।

७. क्षायिकवीर्य-जो वीर्यान्तरायके क्षयसे प्रकट हो उसे क्षायिकवीर्य कहते हैं।

८. क्षायिकसम्यक्त्व-इसका वर्णन हो चुका है।

९. क्षायिकचारित्र-चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके क्षयसे जो चारित्र हो उसे क्षायिकचारित्र कहते हैं।

क्षायोपशमिकभाव

क्षायोपशमिकभावके भेद— ज्ञान ४ (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्ययज्ञान); अज्ञान ३ (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि); दर्शन ३ (चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्श, अवधिदर्शन); लब्धि ५ (क्षायोपशमिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य) क्षायोपशमिकसम्यक्त्व, क्षायोपशमिकचारित्र, संयमासंयम।

(१-४) ज्ञान ४-इनका वर्णन हो चुका।

(५-७) अज्ञान ३-इनका वर्णन हो चुका।

(८-१०) दर्शन ३-इनका भी वर्णन हो चुका।

(११-१५) लब्धि ५-दानांतराय आदिके क्षयोपशमसे क्षायोपशमिकदान आदि होते हैं।

१६. क्षायोपशमिकसम्यक्त्व-इसका वर्णन हो चुका।

१७. क्षायोपशमिकचारित्र-अप्रत्याख्यानावरण ४ व प्रत्याख्यानावरण ४ इन आठ प्रकृतियोंके क्षयोपशमसे जो महाव्रतादिरूप चारित्र होता है उसे क्षायोपशमिकचारित्र कहते हैं।

१८. संयमासंयम—इसका वर्णन हो चुका।

औदयिक भाव

(१-४) गति ४—नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव। इनका वर्णन गतिमार्गणामें है।

(५-८) कषाय ४— क्रोध, मान, माया, लोभ। (इनका वर्णन हो चुका है)।

(९-११) लिङ्ग ३—पुंवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद (इनका वर्णन हो चुका)।

१२. मिथ्यादर्शन-इसका स्वरूप सम्यक्त्वमार्गणामें बताया है।

१३. अज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके उदयसे जो ज्ञानका अभावरूप भाव है उसे अज्ञानभाव कहते हैं, यह अज्ञान औदयिक है।

१४. असंयम —(इसका वर्णन संयममार्गणामें हो चुका)।

१५. असिद्ध—जबतक आठों कर्मोंका अभाव नहीं होता तबतक असिद्ध भाव है।

(१६-२१) लेश्या ६— कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म, शुक्ल इनका वर्णन लेश्यामार्गणामें हो चुका।

पारिणामिकभाव

पारिणामिकभाव— जो कर्मोंके उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम की अपेक्षाके विना होवे वह पारिणामिक भाव है। पारिणामिक-भावके ३ भेद हैं:—

१. जीवत्व, २. भव्यत्व, ३. अभव्यत्व।

१. जीवत्वभाव—जिससे जीवे वह जीवत्व है वह २ प्रकारका है पहिला ज्ञानदर्शनरूप और दूसरा दशप्राणरूप, इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व, शुद्धपरिणामिक भावहै। प्राणरूप जीवत्व अशुद्धपारिणामिक भाव हैं।

२-३. भव्यत्व, अभव्यत्व—इनका वर्णन भव्यत्वमार्गणामें किया है।

अवगाहना

जिन जीवोंके देहहै उनके देहप्रमाण तथा देहरहित (सिद्ध) जीवोंके जितने शरीरसे मोक्ष गये हैं उतने प्रमाण अवगाहनाका वर्णन करना इस स्थानका प्रयोजन है।

बंधप्रकृतियां १२०

आठ कर्मोंकी सब प्रकृतियां १४८ हैं वे इसप्रकार हैं—

ज्ञानावरणकी ५—१. मतिज्ञानावरण, २. श्रुतज्ञानावरण, ३. अवधिज्ञानावरण ४. मनःपर्ययज्ञानावरण ५. केवलज्ञानावरण।

दर्शनावरणकी ९ हैं—१. चक्षुर्दर्शनावरण, २. अचक्षुर्दर्शना-

वरण ३. अवधिदर्शनावरण, ४. केवलदर्शनावरण, ५. निद्रा ६. निद्रानिद्रा ७. प्रचला ८. प्रचलाप्रचला ९. स्त्यानगृद्धि ।

वेदनीयकर्मकी--२ प्रकृतियां हैं—

१. सातावेदनीय, २. असातावेदनीय ।

मोहनीयकर्मकी २८ प्रकृतियां हैं (दर्शनमोहनीयकी ३, चारित्रमोहनीयकी २५) ।

दर्शनमोहनीयकी ३ प्रकृतियां-मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्प्रकृति ।

इनमेंसे सिर्फ मिथ्यात्वका बंध होता है और जब प्रथमोपशम सम्यक्त्व हो तब मिथ्यात्वके ३ भाग होजाते हैं-मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति । इसप्रकार इन २ की सत्ता होजाती है और उदयमें भी आसकते हैं किन्तु इन २ का (सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति) बंध नहीं होता ।

चारित्रमोहनीयकी २५ प्रकृतियां—

१--४. अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ।

५-८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ ।

९-१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ ।

१३-१६. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ ।

१७. हास्य, १८. रति, १९. अरति, २०. शोक, २१. भय २२. जुगुप्सा २३. स्त्रीवेद २४. पुरुषवेद २५. नपुंसकवेद । [१७ से २५ तक इन ९ प्रकृतियोंको नोकषाय=ईषत (थोड़ी) कषाय भी कहते हैं ।]

आयुकर्मकी ४ प्रकृतियां हैं—१. नरकायु, २. तिर्यञ्चायु, ३. मनुष्यायु, ४. देवायु।

नामकर्मकी ६३ प्रकृतियाँ—गति ४; जाति ५ (एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय); शरीर ५ (औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण); अङ्गोपांग ३ (औदारिकाङ्गोपांग, वैक्रियकाङ्गोपांग, आहारकाङ्गोपांग); निर्माण, बंधन ५ (औदारिकबंधन, वैक्रियकबंधन, आहारकबंधन, तैजसबंधन, कार्माणबंधन); संघात ५ (औदारिकसंघात, वैक्रियकसंघात, आहारकसंघात, तैजससंघात, कार्माणसंघात); संस्थान ६ समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, हुंडकसंस्थान); संहनन ६ (वज्रर्षभनाराचसंहनन, वज्रनाराचसंहनन, नाराचसंहनन, अर्द्धनाराचसंहनन, कीलकसंहनन, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन); स्पर्श ८ (स्निग्ध, रूक्ष, शीत, उष्ण, गुरु, लघु, कोमल, कठोर); रस ५ (अम्ल, मधुर, कटु, तिक्त, कषायला); गंध २ (सुगंध, दुर्गन्ध); वर्ण ५ (काला, नीला, लाल, पीला, श्वेत); आनुपूर्व्य ४ (नरकगत्यानुपूर्व्य, तिर्यञ्चगत्यानुपूर्व्य, मनुष्यगत्यानुपूर्व्य, देवगत्यानुपूर्व्य); अगुरुलघु; उपघात; परघात; आतप; उद्योत; उच्छ्वास; प्रशस्तविहायोगति; अप्रशस्तविहायोगति; प्रत्येक; साधारण; त्रस; स्थावर; सुभग; दुर्भग; सुस्वर; दुस्वर; शुभ; अशुभ; सूक्ष्म; बादर; पर्याप्ति; अपर्याप्ति; स्थिर; अस्थिर; आदेय; अनादेय; यशःकीर्ति; अयशःकीर्ति और तीर्थङ्करप्रकृति।

इन ६३ प्रकृतियोंमें वंधप्रकृतियां ६७ हैं—शरीरमें बंधन और संघात गर्भित होजाते हैं इसलिये १० ये कम होगये और स्पर्श रस गंध वर्ण इन्हें ४ गिने इसलिये १६ ये कम होगये इस प्रकार ६७ प्रकृतियां नामकर्मकी बंधयोग्य हैं।

गोत्रकर्मकी २ हैं—१. उच्चगोत्र, २. नीचगोत्र।

अंतरायकी ५ प्रकृतियां हैं—१. दानांतराय, २. लाभान्तराय, ३. भोगान्तराय, ४. उपभोगान्तराय, ५. वीर्यान्तराय।

इस तरह ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ९, वेदनीयकी २, मोहनीयकी २६, आयुकी ४, नामकी ६७, गोत्रकी २, अंतरायकी ५ सब मिलाकर १२० प्रकृतियां बंधयोग्य हैं।

उदयप्रकृतियां

ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ९, वेदनीयकी २, मोहनीयकी २८, आयुकी ४, नामकर्मकी ६७ (जो बंध प्रकृतियोंमें हैं), गोत्रकी २, अंतरायकी ५, इस प्रकार १२२ प्रकृतियां उदययोग्य हैं।

सत्त्वप्रकृतियां

ज्ञानावरणकर्मकी ५, दर्शनावरणकर्मकी ९, वेदनीयकर्मकी २, मोहनीयकर्मकी २८, आयुकर्मकी ४. नामकर्मकी ९३, गोत्रकर्मकी २, अंतरायकी ५, ये सब मिलकर १४८ प्रकृतियां सत्त्वप्रकृतियां हैं। आठों कर्मोंकी सब मिलाकर प्रकृतियां १४८ ही हैं।

संख्या

किस स्थानमें जीव कितने हैं यह बतलाना इसका प्रयोजन है।

क्षेत्र

जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं यह बात क्षेत्रमें बतालाना है।

स्पर्शन

समुद्धात, उपपाद आदि प्रकारोंसे भूत, भविष्यत्, वर्तमानमें जीव कहांतक जा सकता है स्पर्शनमें यह बतलाना है।

काल

विवक्षित स्थानवाले जीव कितने कालतक लगातार उस स्थानमें रहते हैं।

अंतरकाल (विरहकाल)

विवक्षित स्थानको छोड़कर फिर उसीमेंजोाथनरा।वश्राजावे इतने बीचमें कोई विवक्षित जीव उस स्थानमें न रहे उस बीचके कालको अंतरकाल-कहते हैं।

जाति

उत्पत्तिस्थानको योनि या जाति कहते हैं। जाति ८४ लाख हैं।

ये सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त, शीत, उष्ण, शीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृतविवृत, इन ९ भेदोंके प्रभेदोंसे ८४ लाख होजाते हैं।

किन जीवोंकी कितनी जाति हैं

नित्यनिगोदकी	७ लाख
इतरनिगोदकी	७ लाख
पृथ्वीकायिककी	७ लाख
जलकायिककी	७ लाख
अग्निकायिककी	७ लाख
वायुकायिककी	७ लाख
वनस्पतिकायिककी	१० लाख
द्वीन्द्रियकी	२ लाख
त्रीन्द्रियकी	[illegible] लाख
चतुरिन्द्रियकी	[illegible] लाख
तिर्यञ्चपंचेन्द्रियकी	[illegible] लाख
देवकी	[illegible] लाख
नारककी	[illegible] लाख
मनुष्यकी	[illegible] लाख
	८४ लाख हैं

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्चकी ६२ लाख; एकेन्द्रियकी ५२ लाख; त्रसकी ३२ लाख; पंचेन्द्रियकी २६ लाख; विकलत्रयकी ६ लाख; जोड़ करनेपर होती हैं उसी प्रकार अन्यके भी लगाना चाहिये।

कुल

शरीरके भेदके कारणभूत नोकर्मवर्गणाओंके भेदको कुल

कहते हैं। ये सब १९७½ लाख कोटि (१९ नील ७५ खरब) होते हैं वे इसप्रकार हैं :—

पृथ्वीकायिक	२२ लाख कोटि
जलकायिक	७ लाख कोटि
अग्निकायिक	३ लाख कोटि
वायुकायिक	७ लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	२८ लाख कोटि
द्वीन्द्रिय	७ लाख कोटि
त्रीन्द्रिय	८ लाख कोटि
चतुरिन्द्रिय	९ लाख कोटि
जलचर	१२½ लाख कोटि
थलचर (पशु)	१० लाख कोटि
नभचर (पक्षी)	१२ लाख कोटि
छातीके सहारे चलने वाले तिर्यञ्च—दुमुही आदि।	९ लाख कोटि
देव	२६ लाख कोटि
नारकी	२५ लाख कोटि
मनुष्य	१२ लाख कोटि
	१९७½ लाख कोटि

अङ्कोंमें कुलोंका वर्णन

पृथ्वीकायिक	२२०००, ००, ००, ००, ०००
जलकायिक	७०००, ००, ००, ००, ०००

अग्निकायिक	३०००, ००, ००, ००, ०००
वायुकायिक	७०००, ००, ००, ००, ०००
वनस्पतिकायिक	२८०००, ००, ००, ००, ०००
द्वीन्द्रिय	७०००, ००, ००, ००, ०००
त्रीन्द्रिय	८०००, ००, ००, ००, ०००
चतुरिन्द्रिय	९०००, ००, ००, ००, ०००
जलचर	१२५००, ००, ००, ००, ०००
थलचर	१००००, ००, ००, ००, ०००
नभचर	१२०००, ००, ००, ००, ०००
छातीके सहारे चलने वाले उरुपरिसर्पादि	९०००, ००, ००, ००, ०००
देव	२६०००, ००, ००, ००, ०००
नारक	२५०००, ००, ००, ००, ०००
मनुष्य	१२०००, ००, ००, ००, ०००
	१९७५००, ००, ००, ००, ०००

कुछ और स्पष्टीकरण-तिर्यञ्च १३४॥ लाख कोटि, एकेन्द्रिय ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रियतिर्यञ्च ४३॥ लाख कोटि, पंचेन्द्रिय १०६॥ लाख कोटि, विकलत्रय २४ लाखकोटि, जोड़ करनेपर होते हैं, इसी तरह अन्य लगा लेना चाहिये ।

चौतीसठाणाकी संदृष्टियोंमें आद्य ज्ञातव्य

१—चौतीसठाणाके नकशोंमें शीर्षकवाले स्थानके आधारमें ३४ स्थानोंको घटित करना चाहिये।

२. सामान्यालाप—सामान्यवर्णन और जो अधिकसे अधिक हो उसका वर्णन है।

३. पर्याप्तालापमें—नानाजीवोंमें अधिकसे अधिकका वर्णन है किन्तु एक जीवमें जितने एकसाथ हों उसका वर्णन है।

४. अपर्याप्तालापमें—नानाजीवोंमें अधिकसे अधिकका वर्णन है किन्तु एक जीवमें जितने एकसाथ हों उसका वर्णन है।

विशेषतामें संकेतके प्रयोजन

५. क्रमशः—कभी कोई कभी कोई इस प्रकार एक एक करके उन सबका होता रहना सम्भव है।

६. यथायोग्य—परिवर्तन हो हो कर यथायोग्य कोई होता रहे इस तरह सब भी हो सकते हैं, कम भी हो सकते हैं।

७. ही—जिसके आगे "ही" है उस जीवके उस भवमें वही स्थान रहेगा किन्तु भव्य अभव्य सम्बन्धी स्थान प्रत्येक भवोंमें भव्य हो या अभव्य वही एक रहेगा।

८. एकवार एक—जैसे जिस अवस्थामें आहारक अनाहारक दोनों सम्भव हों वहां भी एकसमयमें एक रहेगा। और उसका परिवर्तन हो जायगा परन्तु बार बार परिवर्तन नहीं होता तथा जहां एक ही रहता वहां वही रहेगा।

|—जहाँ अधिक संख्या वाले आलापकी

विशेषतामें क्रम बतलाये गये वहां यथासंभव लगा लेने चाहिये।

१०. एकदा एक—जैसे योग एक जीवमें किसीमें १ किसीमें २ किसीमें ६ होते हैं परन्तु एक समयमें एक ही रहेगा।

११. -से-तक—प्रथम व अन्तिम व इसके बीचके यथायोग्य संख्या व नाम जानना चाहिये।

कषायोंको विशेष समझनेकेलिये इस नकशेका आश्रय लेवें

नाम	भेद	सामान्यालाप में	पर्याप्तालाप नानाजीवोंमें	पर्याप्तालाप एकजीवमें	अपर्याप्तालाप नानाजीवोंमें	अपर्याप्तालाप एकजीवमें
कषाय						
हास्यादि						
वेद						
भय						
जुगुप्सा						
जोड़						

आश्रवोंको विशेष समझनेकेलिये इस नकशेका आश्रय लेवें

आश्रव नाम	भेद	सामान्यालाप में	पर्याप्तालाप नानाजीवोंमें	पर्या० एक० कमसे कम	पर्या० एक० अधिक	अपर्याप्तालाप नानाजीवोंमें	अप० एक० कमसे कम	अप० एक० अधिकसेअ०
मिथ्यात्व	५							
इंद्रियमनअ०	६							
कायअविरति	६							
कषाय	१६							
हास्यादि	४							
वेद	३							
भय	१							
जुगुप्सा	१							
योग	१५							
जोड़	५७							

भावोंको विशेष समझनेकेलिये निम्नांकित नक्शेका आश्रय लेवें

भाव नाम	भेद	सामान्यालाप नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप एक जीवमें	अपर्याप्त० नाना जीवोंमें	अपर्याप्त० एक जीवमें
औपशमिक—	२					
क्षायिक	९					
क्षायो० ज्ञान	४					
अज्ञान	३					
दर्शन	३					
लब्धि	५					
वेदकसम्यक्त्व	१					
सराग चारित्र	१					
संयमासंयम	१					
औद० गति	४					
कषाय	४					
लिङ्ग	३					
मिथ्यादर्शन	१					
अज्ञान	१					
असंयम	१					
असिद्ध	१					
लेश्या	६					
पारिणामिक	३					
जोड़	५३					

मिथ्यात्व गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवमें	नाना जीवोंमें	एक जीवमें
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	७	[१] पर्याप्त सम्बंधी	७	[१] अप० सम्बंधी
पर्याप्ति	६	६	[६-५-४] ए.व,मन-बिना, मन-भाषा विना	६	[६-५-४] अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४। सव, मन,मनश्रोत्र, मनश्रोत्रचक्षुआदि विना	७	७-०-६-५-४-३ मन वचन उ० विना.मन वचनश्रोत्रउ० आदि विना
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१ ही	४	१ ही
इन्द्रिय	५	५	१ ही एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रियआदिमें से १	५	१ ही एके० द्वी० आदिमें से १
काय	६	६	१ ही	६	१ ही
योग	१३	१०	[९-२-१] (एकदा-एक)	३	१-२ एक बारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	[७-८-९-६] ४+२+१, ४+२+१+१, ४+२+१+१+१, ३+२	२५	[७-८-९]

मिथ्यात्व गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें	नाना जीवमें	एक जीवमें
ज्ञान	३	३	[३-२] क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	[१-२] क्रमशः १	२	[१-२] क्रमशः १
लेश्या	६	६	१यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
संज्ञी	२	२	१ ही संज्ञी या-असंज्ञी	२	१ ही संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एक बार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	[१] यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	५५	५२	[१० से १८]१+१+१+३+२+१+१, १+१+६+४++२+१+१+१+१	४५	[११-से १८]१+१+१+४+२+१+१
भाव	३४	३४	[२१ से २८]	३३	२१ से २७

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
वंधप्रकृति	११७
उदयप्रकृति	११७
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनंतानंत

क्षेत्र(निवास)	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल एकजीव सादिमिथ्यादृष्टि-अन्तर्मुहूर्त से-देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन
अन्तर	एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे--देशोन १३२ सागर
जाति	८४ लाख
कुल	१९७॥ लाखकोटि

सासादन गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवमें	नाना जीवोंमें	एक जीवमें
गुणस्थान	१	१	१ सासादन	१	१ सासादन
जीवसमास	८	१	१ सैनीपंचेन्द्रियप०	७	[१]अपर्याप्तसंबंधी
पर्याप्ति	६	६	६	६अप.	[६-५-४]
प्राण	१०	१०	१०	७	[७-६-५-४-३]
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१ ही	३	[१]इसके अपर्याप्तमें नरकगतिनहींहोती
इन्द्रिय	५	१	१ ही पचेन्द्रिय	५	[१]एकेन्द्रिय,द्वी-इन्द्रियआदिमेंसे१
काय	४	१	१ ही त्रसकाय	४	[१]पृथ्वी,जल,वनस्पतित्रसमें से १
योग	१३	१०	६	३	१ एकबार एक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	[७-८-६]	२५	[७-८-६]
ज्ञान	३	३	२-३ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	२ क्रमशः १	२	१-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ सासादन	१	१ सासादन

संज्ञी	२	१	१ संज्ञी	२	१ संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२ एकवार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	५०	५७	[१० से १७ तक] २+१+१+४+ २+१+१०+१ +६+४+२+ १+१+१+१	४०	[१० से १७ तक]
भाव	३२	३२	[२१ से २७ तक]	३१	[२० से २७ तक]

अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक

बंधप्रकृति	१०१
उदयप्रकृति	१११
सत्वप्रकृति	१४५
संख्या	पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण
निवासक्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण
स्पर्शन	लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण, $\frac{६}{१४}$ व $\frac{१२}{१४}$
काल	एक समयसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक। एकजीव— १ समयसे ६ आवलि तक
अंतर	एक समयसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक। एकजीव— पल्योपमके असंख्यातवें भागसे देशोन अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन
जाति	५६ लाख
कुल	१८७॥ लाख कोटि

मिश्र गुणस्थानमें—

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीवोंमें	एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ मिश्रगुणस्थान	अपर्याप्तालाप नहीं होता
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रियपर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४	
गति	४	४	१	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	१०	१०	६ (एकदा एक)	
वेद	३	३	१	
कषाय	२१	२१	६–७–८	
ज्ञान	३	३	२–३ क्रमशः १ (मिश्र ज्ञान)	
संयम	१	१	१ असंयम	
दर्शन	२	२	२ क्रमशः १	
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	१	१	१ सम्यग्मिथ्यात्व	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः १
ध्यान	६	६	१ यथायोग्य
आश्रव	४३	४३	६ से १६ तक
भाव	३२	३२	[२१ से २८ तक]
अवगाहना	घनांगुलके संख्यातवें भागसे १००० योजनतक		
बंधप्रकृति	७४		
उदयप्रकृति	१००		
सत्वप्रकृति	१४७		
संख्या	पल्योपमके असंख्यातवें भाग		
निवासक्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रमें		
स्पर्शन	लोकके असंख्यातवें भाग ८/१४ राजू		
काल	अंतर्मुहूर्तसे पल्योपमके असंख्यातवें भागतक।		
	अंतर्मुहूर्तसे अंतर्मुहूर्त तक।		
अन्तर	एकसमयसे पल्योपमके असंख्यातवें भागतक।		
	एकजीव-अंतर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन।		
जाति	२६ लाख		
कुल	१०६॥ लाख कोटि		

अविरतसम्यक्त्व गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें	नाना जीवमें	एक जीवमें
गुणस्थान	१	१	१ चौथा	१	१ चौथा
जीवसमास	२	१	१ सैनीपचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१३	१०	६ (एकदाएक)	२	१-२ (एकदाएक)
वेद	३	३	१	२	१ (पुरुष.नपुंस में)
कषाय	२१	२१	६–७–८	२०	६-७-८
ज्ञान	३	३	२–३क्रमशः १	३	२-३ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	३	३	२–३क्रमशः १	३	२-३ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३	१ यथायोग्य	३	१

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१ (एकवार एक)
उपयोग	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
ध्यान	१०	१०	१ यथायोग्य	१०	१
आश्रव	४६	४३	९ से १६ तक	३६	९ से १६ तक
भाव	३६	३६	[२२ से २९तक]	३६	[२२ से २९तक]
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	७७				
उदयप्रकृति	१०४				
सत्वप्रकृति	१४८				
संख्या	पल्योपमके असंख्यातवें भाग				
क्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४ राजू				
काल	सर्वकाल। एकजीव-साधिक ६६ सागर				
अन्तर	X। एकजीव—अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्त्तन				
जाति	२६ लाख				
कुल	१०६॥ लाखकोटि				

देशविरत गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवोंमें	एकजीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ पांचवां	इस गुणस्थानमें अपर्याप्तालाप नहीं होते
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४	
गति	२	२	१ मनुष्य, तिर्यंचमेंसे एक	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ (एकदाएक)	
वेद	३	३	१	
कषाय	१७	१७	५-६-७	
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ संयमासंयम	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	३	३	१ पीत, पद्म शुक्ल में से एक	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	३	३	१ यथायोग्य	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः १
ध्यान	११	११	१ यथायोग्य
आश्रव	३६	३६	८–से १४
भाव	३१	३१	२४–मे २६ तक

अवगाहना संख्यात घनांगुलसे १००० योजन तक

बंधप्रकृति	६७
उदयप्रकृति	८७
सत्वप्रकृति	१४७
संख्या	पल्योपमका असंख्यातवां भाग
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ६/१४ राजू
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन१ करोड़ पूर्ववर्ष
अन्तर	×।एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गलपरिवर्तन
जाति	१८ लाख (मनुष्य-१४, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय-४)
कुल	५५।। लाखकोटि (मनुष्य-१२ तिर्यंचपंचेन्द्रिय ४३।।)

प्रमत्तविरत गुणस्थानमें—

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें
गुणस्थान	१	१	१ छटवां
जीवसमास	१	१	१ सैनी पंचेन्द्रिय प०
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	४	४	४
गति	१	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय
योग	११	११	६-११ में(एकदाएक)
वेद	३	३	१
कषाय	१३	१३	४-५-६
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १
संयम	३	३	३-२
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३	१ यथायोग्य

इसमें अपर्याप्त नहीं होते, आहारक मिश्रमें अपर्याप्तकी भी विवक्षा हो सकती पर उसे प्रायः गौण ही माना है। इसके अपर्याप्तमें अपर्याप्तके अनुसार लगाना।

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	७	७	१ यथायोग्य
आश्रव	२४	२४	५-६-७
भाव	३२	३२	[२९ से २[illegible] तक]

अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक। अपर्याप्तमें आहारक शरीरकी अपेक्षा १ हाथ
बंधप्रकृति	६३
उदयप्रकृति	८१
सत्वप्रकृति	१४६
संख्या	कोटि प्रथक्त्व (५६३९८२०६ तक)
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल। एक जीव—अन्तर्मुहूर्त
अन्तर	×। एक जीव—अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

अप्रमत्तविरत गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवमें	एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ सातवां	इस गुणस्थानमें अपर्याप्त नहीं है।
जीवसमास	१	१	१ सैनी पंचेन्द्रिय प०	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	३	३	३ आहार संज्ञा विना	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदा एक	
वेद	३	३	१	
कषाय	१३	१३	४-५-६	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	३	३	३--२	
दर्शन	३	३	३--२ क्रमशः १	
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	
भव्यत्व	१	१	१	
सम्यक्त्व	१	१	१ यथायोग्य	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	४	४	१ यथायोग्य
आश्रव	२२	२२	५-६-७
भाव	३२	३२	[२४ से २७ तक]

अवगाहना	३॥ हाथ से-५२५ धनुष तक, अपर्याप्तमें—आहारक शरीरकी अपेक्षा १ हाथ
बंधप्रकृति	५६
उदयप्रकृति	७६
सत्त्वप्रकृति	१४६
संख्या	संख्यात (२६६६६१०३)
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल। एकजीव—अन्तर्मुहूर्त
अन्तर	×। एकजीव—अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाखकोटि

अपूर्वकरण-गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ आठवां	इस गुणस्थानमें आगति नहीं होती
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रियपर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	३	३	३-२इसगुणस्थानमें कुछ पूर्वभागतक भय संज्ञारहतीहै व उत्तर भागमें नहीं रहती	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदाएक	
वेद	३	३	१	
कषाय	१३	१३	१३ में ४-५-६	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	२	२	२	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या	

भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	२	२	१ औपशमिक या-क्षायिक
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१	१	१ प्रथक्त्ववितर्क वीचार शुक्लध्यान
आश्रव	२२	२२	५-६-७
भाव	२६	२६	[२२ से २६ तक]

अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
बंधप्रकृति	५८
उदयप्रकृति	७२
सत्वप्रकृति	१३८, १३६, १४२
संख्या	उपशमश्रेणीमें २६६ तक, क्षपकश्रेणीमें ५६८ तक
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	उपशमश्रेणीमें एक समयसे अंतर्मुहूर्त तक, क्षपकश्रेणी में अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त तक
अन्तर	उपशमश्रेणीमें एकसमयसे वर्षप्रथक्त्वतक, क्षपकश्रेणीमें एक समयसे ६ माह तक। एक जीव उपशमक-एकसमयसे देशोनअर्द्धपुद्गलपरिवर्तनतक
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाखकोटि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीवोंमें	एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ नवमां	इसमें अपर्याप्त नहीं होते।
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय प०	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	२	२	२ प्रथम भागमें । १ द्वि०भागमें व बादमें १	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदा एक	
वेद	३व०	३व०	१/द्वितीय भागमें ० व बाद में ०	
कषाय	१३	१३	१३ में ४—५—६ /तृ० /च० /पं० / ३ / २ / १ /	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	२	२	२	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	१	१	१ शुक्ल लेश्या	

भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व ही
सम्यक्त्व	२	२	१ औपशमिक व क्षायिक
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२
ध्यान	१	१	१ शुक्लध्यान पहिला
आश्रव	२२	२२	२-३
भाव	२६	२६	[१८ से २५ तक]
अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक		
बंधप्रकृति	२२		
उदयप्रकृति	६६		
सत्वप्रकृति	१४२-१३६-१३८, १२२, ११४, ११३, ११२, १०६, १०५, १०४, १०३		
संख्या	२६६ व ५६८		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग		
काल	१ समयसे अन्तर्मुहूर्त, व अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त तक		
अन्तर	१ समयसे वर्ष प्रथक्त्व, व एक समयसे ६ माह तक। एक जीव उपशमक—१ समयसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन		
जाति	१४ लाख		
कुल	१२ लाख कोटि		

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नानाजीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ सूक्ष्म साम्पराय
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	१	१	१ सूक्ष्मपरिग्रहसंज्ञा
गति	१	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय
योग	६	६	६ में एकदाएक
वेद	×	×	× अपगत वेद
कषाय	१	१	१(संज्वलनसूक्ष्मलोभ)
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ सूक्ष्म साम्पराय
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	१	१	१ शुक्ल लेश्या
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	२	२	१औपशमिकवक्षायिक

इस गुणस्थानमें अपर्याप्त नहीं होते

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१	१	१ प्रथक्त्ववितर्कवीचार
आश्रव	१०	१०	२
भाव	२२	२२	[१८ से २१ तक]
अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक		
बंधप्रकृति	१७		
उदयप्रकृति	६०		
सत्वप्रकृति	१४२,१३६,१०२		
संख्या	२९९,५९८		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग		
काल	१समयसेअन्तमुर्हूर्ततक,अन्तमुर्हूर्तसे अंतमुर्हूर्ततक		
अन्तर	१ समयसे वर्षप्रथक्त्व, १समयसे६माहतक। एक जीव उपशमक-१समयसे देशोन अर्द्धपुद्गल-परिवर्तन तक।		
जाति	१४ लाख		
कुल	१२ लाख कोटि		

उपशान्तकषाय गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवमें	एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ उपशान्तकषाय (उपशान्तमोह)	इस गुणस्थानमें अपर्याप्त नहीं होते।
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय प०	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	×	×	× अपगत संज्ञा	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदाएक	
वेद	×	×	× अपगतवेद	
कषाय	×	×	× अकषाय	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ यथाख्यात	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व ही	

सम्यक्त्व	२	२	१ औपशमिक या क्षायिक
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१	१	१ प्रथक्त्व वितर्क वीचार शुक्ल ध्यान
आश्रव	६	६	६ में एकदा एक
भाव	२१	२१	[१७ से २० तक]

अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक।
बंधप्रकृति	१
उदयप्रकृति	५६
सत्वप्रकृति	१४२, १३६
संख्या	२६६
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	१ समयसे अन्तर्मुहूर्त तक
अन्तर	१ समयसे वर्ष प्रथक्त्व (३ से ६) तक। एक जीव-१ समयसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तनतक
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

क्षीणकषाय गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवमें	एक जीवमें	
गुणस्थान	१	१	१ क्षीणकषाय (क्षीणमोह)	इस गुणस्थानमें अपर्याप्त नहीं है
जीवसमास	१	१	१ सैनी पंचेन्द्रियपर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	—	—	— अपगत संज्ञा	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदा एक	
वेद	—	—	— अपगत वेद	
कषाय	—	—	— अकषाय	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ यथाख्यात	
दर्शन	३	३	३-२- क्रमशः १	
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्वही	
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिक	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	२	२	१(पहिले पहला, बादमें दूसरा शुक्लध्यान)
आश्रव	६	६	६ में एकदा एक
भाव	२०	२०	[१७ से २० तक]

अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुषतक
बंधप्रकृति	१
उदयप्रकृति	५७
सत्वप्रकृति	१०१
संख्या	५६८
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्ततक
अन्तर	१ समयसे ६ माहतक
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

सयोगकेवली गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप (समुद्घातमें)
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	
गुणस्थान	१	१	१ तेरहवां	१
जीवसमास	२	१	१ सैनी (उपचारसे) पंचेन्द्रिय (द्रव्यापेक्षया) पर्याप्त	१ अपर्याप्त सम्बन्धी
पर्याप्ति	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	४	४	४ वचन, कायबल, आयु, स्वासोच्छ्वास	२कायबल, आयु
संज्ञा	०	०	० अपगतसंज्ञा	०
गति	१	१	१ मनुष्यगति	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१
योग	७	७	७-१ एकदा एक	२ में एकदाएक
वेद	०	०	० अपगतवेद	०
कषाय	०	०	० अकषाय	०
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	१
संयम	१	१	१ यथाख्यात	१
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	१
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या (उपचार मे)	१

भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिक	१
संज्ञी	०	०	० न संज्ञी न असंज्ञी	०
आहारक	२	१	१ आहारक	२ एकवार एक (समुद्घातमें अनाहारक)
उपयोग	२	२	२ युगपत्	२ युगपत्
ध्यान	१	१	१ सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती (अंतिम अंतर्मुहूर्तमें)	
आश्रव	७	७	१ यथायोग्य	
भाव	१४	१४	१४	
अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक			
बंधप्रकृति	१			
उदयप्रकृति	४२			
सत्त्वप्रकृति	८५			
संख्या	लाख प्रथक्त्व (८६८५०२)			
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यातभाग, सर्वलोक			
स्पर्शन	सर्वलोक (समुद्घातकी अपेक्षा) लोकके असंख्यात भाग, असंख्यातवां भाग			
काल	सर्वकाल			
अन्तर	×			
जाति	१४ लाख			
कुल	१२ लाख कोटि			

अयोगकेवली गुणस्थानमें—

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नानाजीवापेक्षा	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१
जीवसमास	१	१	१ पर्याप्तसम्बन्धी (उपचार से)
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१	१	१ आयु
संज्ञा	०	०	० अपगत संज्ञा
गति	१	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय (उपचारसे)
काय	१	१	१ त्रसकाय
योग	०	०	० अयोग
वेद	०	०	० अवेद
कषाय	०	०	० अकषाय
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान
संयम	१	१	१ यथाख्यात
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	०	०	० अलेश्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिक

संज्ञी	०	०	० न संज्ञी न असंज्ञी
आहारक	१	१	१ अनाहारक
उपयोग	२	२	२ युगपत्
ध्यान	१	१	१ व्युपरतक्रियानिवृत्ति-शुक्लध्यान
आश्रव	—	—	— आश्रवरहित
भाव	१३	१३	१३
अवगाहना	•	३॥ हाथसे ५२५ धनुप तक	
बंधप्रकृति	०		
उदयप्रकृति	१२		
सत्वप्रकृति	८५–१३		
संख्या	५६८		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग		
काल	अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्ततक		
अन्तर	१ समयसे ६ माहतक		
जाति	१४ लाख		
कुल	१२ लाख कोटि		

अतीत गुणस्थानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप नहीं होता		न अपर्याप्तालाप होता
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	—	—	—अतीतगुणस्थान	
जीवसमास	—	—	—अतीत जीवसमास	
पर्याप्ति	—	—	—अतीत पर्याप्ति	
प्राण	—	—	—अतीत प्राण	
संज्ञा	—	—	—अतीत संज्ञा	
गति	—	—	—अगति	
इन्द्रिय	—	—	—इन्द्रियरहित	
काय	—	—	—काय रहित	
योग	—	—	—योगरहित	
वेद	—	—	—वेदरहित	
कषाय	—	—	—कषायरहित	
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	
संयम	—	—	—तीनों(संयम,असंयम, संयमासंयम)सेरहित	
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	
लेश्या	—	—	—अलेश्य	
भव्यत्व	—	—	—न भव्य न अभव्य	
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिकसम्यक्त्व	

संज्ञी	—	—	— न संज्ञी न असंज्ञी
आहारक	१	१	१ अनाहारक
उपयोग	२	२	२ युगपत्
ध्यान	×	×	×
आश्रव	×	×	×
भाव	१०	१०	१० यदि लब्धिकी विवक्षा न हो तो ५
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुषतक		
बंधप्रकृति	०		
उदयप्रकृति	०		
सत्वप्रकृति	०		
संख्या	अनंत		
क्षेत्र	सिद्धलोक (४५ लाखयोजन)		
स्पर्शन	,, (,,)		
काल	सर्वकाल		
अन्तर	×		
जाति	×		
कुल	×		

नरकगतिमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें	नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१ (१-२-३-४ मेंएक)	२	१ (मिथ्या० अवि० में १)
जीवसमास	२	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७ मनो० वच० श्वासो० विना
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ नरक गति	१	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	११	६	६ मेंएकदाएक	२	२मेंएकबार एक
वेद	१	१	१ नपुन्सकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	६-७-८-६	२३	६-७-८-६
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः१	५	३-२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	३	३	१ नियत कोई१	३	१ नियत कोई

भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य (मिथ्या.क्षा०वे०में)
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एक बार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	११	११	१ यथायोग्य	११	१ यथायोग्य
आश्रव	५१	४६	९ से १८ तक	४२	९ से १८ तक
भाव	३३	३३	[२१ से २३ तक] यथा—२३-२२-२१-२४-२२, २२/२७/२१	३०	२२-२३-२१

अवगाहना	७ धनुष ३ हाथ ६ अंगुलसे ५०० धनुष तक
बंधप्रकृति	१०१, १००, ९९·९९—९८+, ९५.
उदयप्रकृति	७६
सत्वप्रकृति	१४१ / १४६ / १४५ / ३ नरकमें / ४-५-६ वें / ७ वें मे /
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ६/१४
काल	सर्वकाल। एकजीव-१००००वर्षसे ३३सागर तक
अन्तर	X। एकजीव-अन्तमुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक
जाति	४ लाख
कुल	२५ लाख कोटि

तिर्यञ्च गतिमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें	नाना जीवमें	एक जीवमें
गुणस्थान	५	५	१(१-२-३-४-५ में कोई)	३	१(१-२-४मेंकोई
जीवसमास	१४	७	१(पर्याप्त सम्बन्धी ७ में कोई)	७	१(अपर्याप्तसंबंधी ७ में कोई)
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अपर्याप्त
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१हीतिर्यञ्चगति	१	१ ही
इन्द्रिय	५	५	१ ही(एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रियआदिमें)	५	१ ही
काय	६	६	१ ही	६	१ ही
योग	११	९	१(९-२-१में-एकदाएक)	२	२ मेंएकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९-६-५	२५	७-८-९-६
ज्ञान	६	६	३-२मेंक्रमशः१	५	३-२ क्रमशः १
संयम	२	२	१(असंयम,संयमासंयममेंएक)	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२में क्रमशः१	३	३-२में क्रमशः

लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	४	१ यथायोग्य (मि.सा.क्षा.वे.)
संज्ञी	२	२	१	२	१
आहारक	२	१	१ अहारक	२	२ एक बारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	११	११	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५३	५१	८ से १८ तक	४४	९ से १८ तक
भाव	३९	३९	२८-२७-२७-२६-२७-२६-२८ २६-२६-२४	३६	२९-२८-२८-२७- २९-२५

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजन तक
बंधप्रकृति	११७/१११/१०९ ।
उदयप्रकृति	१०७सा./९९पं./९७पं.प/९६भो/७१ल/७९भो
सत्वप्रकृति	१४७/१४५ल
संख्या	अनंतानंत
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल । सादितिर्यंचएकजीव—क्षुद्रभवसे असंख्यातपुद्‌गलपरिवर्तनतक
अन्तर	×।एकजीव—क्षुद्रभवग्रहणकालसे९००सागर तक।
जाति	६२ लाख
कुल	१३४॥ लाखकोटि

मनुष्यगतिमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवमें	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१४	१४	१ (चौदहोंमेंसे १)	५	१(१-२-४-६-१३में)
जीवसमास	२	१	१सैनीपंचेन्द्रिय प०	१	१सैनीपंचे० अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४-३-२-१ अ०सं०	४	४ अपगतसंज्ञा
गति	१	१	१ ही मनुष्यगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	११	१०	९ में एकदाएक	३	१-२मेंएकदाएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९-६-७-८, ५-६-७-४-३-२-१-अपगतकषाय	२५	७-८-९-६-७-८-४-५-६ अकषाय
ज्ञान	८	८	२-३-४में एकदाएक व केवल ज्ञान १	६	२-३-४-१ में एकदाएक
संयम	७	७	१ यथायोग्य	४	१(असं०,यथाख्यातमेंएक सा.छे)
दर्शन	४	४	३-२में क्रमशः, व १	४	३-२मेंक्रमशः, व १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य

भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	४	१ यथायोग्य
संज्ञी	१ च०	१ च०	१ संज्ञी व अनुभय	१ च०	१ व अनुभय
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ युगपत्‌व क्रमशः	२	२ क्रमशः व युग०
ध्यान	१६	१६	१ यथायोग्य	११	१
आश्रव	५५	५३-५२	०-१ से १८ तक	४५-४४	१ से १८ तक
भाव	५०	५०	२८-२७-२६-२५-३१-२९-२८-२६	४६	२८-२७-२९-२७-१४
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे ३ कोश तक				
बंधप्रकृति	१२० । ११२ । १०९ ।				
उदयप्रकृति	१०२ सामा० । १०० पर्या० मनु० । ९६ मनुष्यिनी । ७८ भोग० । ७१ लब्ध्यप० ।				
सत्त्वप्रकृति	१४८ । १४५ लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य				
संख्या	। असंख्यात (लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यसहित)				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग, सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक, लोकके असंख्यातभाग, असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल । एकजीव-क्षुद्रभव या अंतर्मुहूर्तसे ४७ पूर्वकोटी ३ पल्य तक ।				
अन्तर	× । एकजीव-क्षुद्रभवग्रहणसे असंख्यातपुद्गलपरिव० तक				
जाति	१४ लाख				
कुल	१२ लाख कोटि				

देवगतिमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवमें	नाना जीवोंमें	एक जीवमें
गुणस्थान	४	४	१	३	१(१-२-४मेंसे)
जीवसमास	२	२	१सैंनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ सैंनीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ ही देवगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	११	९	९ में एकदाएक	२	२ एकबारएक
वेद	२	२	१(पु० स्त्री०में)	२	१ (पु०स्त्री०में)
कषाय	२४	२४	६-७-८-९	२४	६-७-८-९
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः१	५	३-२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	६	३	१	६	१
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१	५	१(मि०सा०द्वि० वे०क्षा०)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकवार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१	१०	१
आश्रव	५२	५०	९ से १८ तक	४३	९ से १८ तक
भाव	३७	३४	२३-२२-२२ -२१-२४-२२	३६	२२-२१-२४- २२

अवगाहना	१ हाथसे ७ हाथ तक—(२५ धनुष तक)
बंधप्रकृति	१०४।१०३-१०४-१०१-९७-७२। १०१-१०२-९९-९६-७१।
उदयप्रकृति	७७।७६ सौ०से नवग्रैवक। ७०अनुदिश अनु०। ७६ भवनत्रिक देव, देवी।
सत्वप्रकृति	१४७ बारवें स्वर्ग तक। १४६ तेरहवेंसे ग्रैव०। १४६ अनु०अ०।१४६ भवनत्रिक, देवी
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४, [illegible]/१४ राजू
काल	सर्वकाल। एकजीव-१०००० वर्षसे ३३सागर तक
अन्तर	×। एकजीव-अंतमुहूर्तसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तक।
जाति	४ लाख
कुल	२६ लाख कोटि

गतिरहित (सिद्धगतिमें)

स्थान			सामान्यालाप
गुणस्थान			अतीतगुणस्थान
जीवसमास			अतीत जीवसमास
पर्याप्ति			अतीत पर्याप्ति
प्राण			अतीत प्राण
संज्ञा			अतीत संज्ञा
गति			अगति(सिद्धगति)
इन्द्रिय			अतीन्द्रिय
काय			अतीत काय
योग			अयोग
वेद			अपगत वेद
कषाय			अकषाय
ज्ञान	१	१	केवलज्ञान
संयम			संयम,असंयम, संयमासंयम रहित
दर्शन		१	केवलदर्शन
लेश्या			अलेश्य
भव्यत्व			न भव्य न अभव्य
सम्यक्त्व		१	क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी			न संज्ञी न असंज्ञी
आहारक		१	अनाहारक
उपयोग		२	युगपत्
ध्यान			अतीतध्यान
आश्रव			अनाश्रव
भाव	०	१०	क्षायिक ९, जीवत्व
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक		
बंधप्रकृति	०		
उदयप्रकृति	०		
सत्वप्रकृति	०		
संख्या	अनन्त		
क्षेत्र	४५ लाख योजन		
स्पर्शन	४५ लाख योजन		
काल	सर्वकाल		
अन्तर	०		
जाति	०		
कुल	०		

एकेन्द्रियमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१
जीवसमास	४	२	१	२	१
पर्याप्ति	४	४	४	४	४ अपर्याप्त
प्राण	४	४	४	३	३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	५	५	१ ही	५	१ ही
योग	३	१	१	२	२ में एकदाएक
वेद	१	१	१	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-९	२३	७-८-९
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१ अचक्षुदर्शन
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि०सा०)

संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से १८ तक	३७	१०से १८ तक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४-२३

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजनतक
बंधप्रकृति	१०९
उदयप्रकृति	८०
सत्वप्रकृति	१४५
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। सादिएकेन्द्रिय एकजीव–क्षुद्रभवग्रहण कालसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक
अन्तर	०। सादि एकेन्द्रिय एकजीव–क्षुद्रभव ग्रहणसे २ हज़ार सागर, १ करोड़ पूर्व वर्ष।
जाति	५२ लाख
कुल	६७ लाख कोटि

द्वीन्द्रियमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१(मि०सासा०)
जीवसमास	२	१	१	१	१
पर्याप्ति	५	५	५	५	५ अपर्याप्ति
प्राण	६	६	६	४	४
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही द्वीन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	४	२	२ में एकदाएक	२	२ एकबार एक
वेद	१	१	१	१	१
कषाय	२३	२३	७—८—६	२३	७—८—६
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१ अचक्षुदर्शन
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि०सा०)

संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३६	३७	११से १८ तक	३८	१०से अठारहतक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४–२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १२ योजनतक				
बंधप्रकृति	१०६				
उदयप्रकृति	८१				
सत्वप्रकृति	१४५				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	सर्वलोक, लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल । एकजीव-क्षुद्रभवग्रहणसे-- संख्य हजार वर्ष				
अन्तर	X। एकजीव-क्षुद्रभवग्रहणसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक।				
जाति	२ लाख				
--	· लाख कोटि				

त्रीन्द्रियमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि० सा०)
जीवसमास	२	१	१त्रीन्द्रियपर्याप्त	१	१
पर्याप्ति	५	५	५	५	५ अपर्याप्ति
प्राण	७	७	७	५	५
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ही त्रीन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	४	२	२ एकदा एक	२	२ एकबारएक
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-९	२३	७-८-९
ज्ञान	२	२	२ कुमति,कुश्रुत क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१अचक्षुदर्शन
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि०सा०)

संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	४०	३८	११ से १८ तक	३६	१०से अठारहतक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४—२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे ३ कोश तक				
बंधप्रकृति	१०६				
उदयप्रकृति	८१				
सत्वप्रकृति	१४५				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	सर्वलोक, लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल। एकजीव- क्षुद्रभवग्रहणसे संख्यात हजार वर्ष				
अन्तर	×। एकजीव—क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तक।				
जाति	२ लाख				
कुल	८ लाख कोटि				

चतुरिन्द्रियमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि० सा०)
जीवसमास	२	१	१ चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	१	१
पर्याप्ति	५	५	५	५	५ अपर्याप्ति
प्राण	८	८	८	६	६
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ही चतुरिन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	४	२	२ एकदा एक	२	२ एकबारएक
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७–८–६	२३	७–८–६
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	२चक्षु०अचक्षु० क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि० सा०)

संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	४१	३६	११ से १८तक	४०	१० से १८तक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४—२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १ योजनतक				
बंधप्रकृति	१०६				
उदयप्रकृति	८१				
सत्वप्रकृति	१४५				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, सर्वलोक				
काल	सर्वकाल । क्षुद्रभवग्रहणसे—संख्यात हजार वर्ष				
अन्तर	×। एकजीव-क्षुद्रभवसेअसंख्यातपुद्गलपरिवर्तनतक।				
जाति	२ लाख				
कुल	६ लाख कोटि				

पंचेन्द्रियमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१४	१४	१	५	१(१-२-४-६-१३)
जीवसमास	४	२	१	२	१
पर्याप्ति	६	६	६—५	६	६-५ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-६-४-१	७	७-७-२
संज्ञा	४	४	४-३-२-१-०	४	४-०
गति	४	४	१ ही	४	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	१५	११	९-१०-११-७-१ एकदाएक	४	१-३-२में एक बार एक
वेद	३	३	१-०	३	१-०
कषाय	२५	२५	६-७-८-९-५-४-३-२-१-०	२५	६-७-८-९-५-४-०
ज्ञान	८	८	४-३-२क्रमशः१ व केवलज्ञान१	६	३-२-१क्रमशः १ व केवलज्ञान १ इसमें मनः प० व विभंगावधि नहीं होता
संयम	७	७	१ यथायोग्य	४	१(असंयम,यथाख्यात, सा.छे.)
दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः१ व केवल ज्ञान १	४	३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान १

लेश्या	६	६	१-० यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१, यथायोग्य	५	१(यथा० मिश्र न)
संज्ञी	२	२	१-०संज्ञीया अ०व०	२	१-०
आहारक	२	२	१आहारक (१४वे गुणस्थानमेंअना०)	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२क्रमशःवयुगपत	२	२क्रमशःवयुगपत्
ध्यान	१६	१६	१ यथायोग्य	११	१
आश्रव	५७	५४-५३	०-१से अठारह तक	४५	१ से १८ तक
भाव	५३	५२	गुणस्थान व गतिके अनुसार यथासंभव	५०	गुणस्थान आदि के अनुसार यथासंभव
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक व संख्यात घनांगुल				
बंधप्रकृति	१२०/११२/१०६				
उदयप्रकृति	११४				
सत्वप्रकृति	१४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवांभाग,असंख्यातभाग, सर्वलोक				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४, व सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। क्षुद्रभवग्रहणकालसे-१००८सागरपूर्वकोटिपृथक्त्व				
अन्तर	×। एकजीव—क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक				
जाति	२६ लाख				
कुल	१०६॥ लाख कोटि				

इन्द्रिय रहितमें

स्थान		आलाप			
गुणस्थान			अतीतगुणस्थान		
जीवसमास			अतीतजीवसमास		
पर्याप्ति			अतीत पर्याप्ति		
प्राण			अतीत प्राण		
संज्ञा			अतीत संज्ञा		
गति			अगति		
इन्द्रिय			इन्द्रियरहित		
काय			अतीत काय		
योग			अयोग		
वेद			अपगतवेद		
कषाय			अकषाय		
ज्ञान		१	केवलज्ञान		
संयम			असंयम, संयम, संयमासंयमरहित		
दर्शन		१	केवलदर्शन		
लेश्या			अलेश्य		
भव्यत्व			नभव्य नअभव्य		
सम्यक्त्व		१	क्षायिकसम्यक्त्व		

संज्ञी			नसंज्ञी न असंज्ञी
आहारक		१	अनाहारक
उपयोग		२	युगपत्
ध्यान			अतीतध्यान
आश्रव			अनाश्रव
भाव		१०	१०
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुप तक		
बंधप्रकृति	०		
उदयप्रकृति	०		
सत्वप्रकृति	०		
संख्या	अनन्त		
क्षेत्र	४५ लाख योजन (ढ़ाई द्वीपके ऊपर)		
स्पर्शन	४५ लाख योजन		
काल	सर्वकाल		
अन्तर	×		
जाति	×		
कुल	×		

पृथ्वीकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१(,मि॰सासा॰मेंसे)
जीवसमास	४	२	१सूक्ष्मपृथ्वीप. याबादरपृ. पर्या.	२	१सू॰पृ॰प॰या बा॰ पृ॰ अ॰
पर्याप्ति	४	४	४ आ॰, श॰, इन्द्रिय,श्वासो॰	४	४ अपर्याप्ति
प्राण	४	४	४कायबल, स्पर्शन आयु, स्वासो॰	३	३ काय, स्प॰, आयु
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ही एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ही पृथ्वीकाय	१	१ ही
योग	३	१	१औदारिक काय॰	२	२औ.मि.एकबारण.
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-६	२३	७-८-६
ज्ञान	२	२	२कुमति,कुश्रुत क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१

लेश्या	३	३	१ कृष्ण, नी. का. में यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि०सा०) में
संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से १८ तक	३७	१०से १८ तक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४--२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भाग				
बंधप्रकृति	१०९				
उदयप्रकृति	७९				
सत्वप्रकृति	१४५				
संख्या	असंख्यात लोक प्रमाण				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल । एकजीव—क्षुद्रभवग्रहणकाल से—असंख्यात लोक प्रमाणकाल तक ।				
अन्तर	×। एकजीव—क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक ।				
जाति	७ लाख				
कुल	२२ लाख कोटि				

जलकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षा	एक जीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षा	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि. सा. में से)
जीवसमास	४	२	१ बादर जल या सूक्ष्मजलका. प०	२	१ बा. ज. या सू. ज का. अ.
पर्याप्ति	४	४	४	४	४ अपर्याप्ति
प्राण	४	४	४	३	३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ जलकाय	१	१ ही
योग	३	१	१ औदारिक काययोग	२	२ औमि, कार्मा. । एकबार एक
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-९	२३	७-८-९
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मि.सा.में)
संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से अठारहतक	३७	१०से अठारहतक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४–२३

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भाग
बंधप्रकृति	१०९
उदयप्रकृति	७८
सत्वप्रकृति	१४५
संख्या	असंख्यात लोक प्रमाण
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक,
काल	सर्वकाल । एकजीव-क्षुद्रभवसे--असंख्यात लोक प्रमाणकाल ।
अन्तर	X। एकजीव-क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गल परि-वर्तन काल तक ।
जाति	७ लाख
कुल	७ लाख कोटि

अग्निकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
जीवसमास	४	२	१बादरअग्निपर्या., या सूक्ष्मअग्निप०	२	१ अपर्याप्तसम्बन्धी
पर्याप्ति	४	४	४	४	४
प्राण	४	४	४	३	३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ अग्निकाय	१	१ ही
योग	३	१	१औदारिक काययोग	२	२औमि,का./एकबारएक
वेद	१	१	१नपुन्सक वेद	१	१
कषाय	२३	२३	७—८—६	२३	७—८—६
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व

संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकवार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से १८ तक	३७	११से अठारह तक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भाग				
बंधप्रकृति	१०५				
उदयप्रकृति	७७				
सत्वप्रकृति	१४४				
संख्या	असंख्यातलोक प्रमाण				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल । एकजीव—क्षुद्रभवसे—असंख्यातलोक प्रमाण काल तक				
अन्तर	×।एकजीव—क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक ।				
जाति	७ लाख				
कुल	३ लाख कोटि				

वायुकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
जीवसमास	४	२	१ वा.सू.वा.अ. में से	२	१ अपर्याप्त
पर्याप्ति	४	४	४	४	४ अपर्याप्ति
प्राण	४	४	४	३	३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ वायुकाय	१	१ ही
योग	३	१	१ औदारिक काययोग	२	२ एकबारएक
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-६	२३	७-८-६
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	मिथ्यात्व
संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से अठारहतक	३७	११से अठारहतक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भाग
बंधप्रकृति	१०५
उदयप्रकृति	७७
सत्वप्रकृति	१४४
संख्या	असंख्यात लोक प्रमाण
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल । एकजीव—क्षुद्रभवसे—असंख्यात लोक प्रमाण तक ।
अन्तर	X। क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक ।
जाति	७ लाख
कुल	७ लाख कोटि

वनस्पतिकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ मिथ्या० सासा. में मे
जीवसमास	४	२	१	२	१
पर्याप्ति	४	४	४	४	४
प्राण	४	४	४	३	३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ही तिर्यंचगति	१	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ एकेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही वनस्पति	१	१ ही
योग	३	१	१ औदारिक काययोग	२	२ औमि. कार्मा. एकबार एक
वेद	१	१	१ नपुंसकवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-६	२३	७-८-६
ज्ञान	२	२	२ क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	१	१	१ अचक्षुदर्शन	१	१
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	२	१	१ मिथ्यात्व	२	१ (मिथ्या० सा० में से)
संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	३८	३६	११से अठारहतक	३७	१०से अठारहतक
भाव	२५	२५	२४	२५	२४-२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक				
बंधप्रकृति	१०९				
उदयप्रकृति	७९				
सत्वप्रकृति	१४५				
संख्या	अनंतानंत				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। सादिवनस्पति एकजीव–क्षुद्रभवसे–असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण तक				
अन्तर	×। एकजीव–क्षुद्रभवसे असंख्यात लोकप्रमाण काल तक।				
जाति	१० लाख				
कुल	२८ लाख कोटि				

त्रसकायिकमें

स्थान	सामान्यालाप	सामान्यालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना	एकजीवापेक्षया	नाना	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१४	१४	१	५	(१-२-४-६-१३में)
जीवसमास	१०	५	१द्वी;त्री,च;अ. पं;सं.पं. पर्याप्त	५	१
पर्याप्ति	६	६	५—६	६	५-६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४।१।	७	७-७-६-५-४-२
संज्ञा	४	४	४—३—२—१-०	४	४—०
गति	४	४	१ ही	४	१ ही
इन्द्रिय	४	४	१द्वी०त्री.चतु. पंचे. में से	४	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रस	१	१ ही
योग	१५	११	९-५-२-१-एकदाएक	४	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९-६-५ ४-३-२-१-०	२५	७-८-९-६-५-४-०
ज्ञान	८	८	२-३-४क्रमशः१ व केवलज्ञान१	६	२-३क्रमशः१व केवलज्ञान १
संयम	७	७	१	४	१(असंयम,यथाख्यात, सा०छे;)
दर्शन	४	४	२-३-क्रमशः १ व केवलदर्शन १	४	१-२-३ क्रमशः१ व केवल. १

लेश्या	६व०	६व०	१ यथायोग्य व०	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ ही	५	१
संज्ञी	२	२	१संज्ञीयाअसंज्ञी	२	१
आहारक	२	२	१आहारक(१४वें गुणस्थानमें अना०	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२क्रमशःवयुगपत्	२	२क्रमशःवयुगपत्
ध्यान	१६	१६	१	११	१
आश्रव	५७	५४-५३	०-१से १८ तक	४५	१ से १८ तक
भाव	५३	५३	गुणस्थानादिके अ०	४८	गुणस्थानानुसार

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवेंसे १००० योजन तक
बंधप्रकृति	१२०।११२।
उदयप्रकृति	११७
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग,असंख्यातभाग,सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल । एकजीव-क्षुद्रभवसे दो हजार सागर पूर्वकोटि पृथक्त्व तक ।
अन्तर	×। एकजीव-क्षुद्रभवग्रहणसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक ।
जाति	३२ लाख
कुल	१३०॥ लाखकोटि

अकायमें

स्थान		आलाप
गुणस्थान		अतीत गुणस्थान
जीवसमास		अतीत जीवसमास
पर्याप्ति		अतीत पर्याप्ति
प्राण		अतीव प्राण
संज्ञा		अतीत संज्ञा
गति		अगति
इन्द्रिय		अतीतेन्द्रिय
काय		अकाय
योग		अयोग
वेद		अपगतवेद
कषाय		अकषाय
ज्ञान	१	केवलज्ञान
संयम		असंयम, संयम, संयमासयम रहित
दर्शन	१	केवलदर्शन
लेश्या		अलेश्य
भव्यत्व		न भव्य व अभव्य
सम्यक्त्व	१	क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी		न संज्ञी न असंज्ञी	
आहारक	१	अनाहारक	
उपयोग	२	युगपत्	
ध्यान		अतीतध्यान	
आश्रव		अनाश्रव	
भाव	१०	१०	
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक		
बंधप्रकृति	०		
उदयप्रकृति	०		
सत्वप्रकृति	०		
संख्या	अनन्त		
क्षेत्र	४५ लाख योजन (ढाई द्वीपकी सीधमें ऊपर)		
स्पर्शन	४५ लाख योजन(ढाई द्वीपकी सीधमें ऊपर)		
काल	सर्वकाल		
अन्तर	×		
जाति	×		
कुल	×		

सत्य व अनुभय मनोयोगमें

स्थान	सामान्यालाप	अपर्याप्तालाप		
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	१३	१३	१(१से१३ तकमेंसे)	
जीवसमास	१	१	१सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०-४(४प्राणसयोगी-की अपेक्षा)	
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते
गति	४	४	१	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	
योग	१	१	१स्व (सत्य-या अनु-भय मनोयोग)	
वेद	३व०	३व०	१ व अपगतवेद	
कषाय	२५ व०	२५ व०	७-८-९-६-५-४-३-२-१-०	
ज्ञान	८	८	४-३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान १	
संयम	७	७	१	

दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः १ व केवलदर्शन १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य
संज्ञी	१व०	१व०	१ संज्ञी व अनुभय
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	१५	१
आश्रव (मनोयो. ४व)	४३	४३	१ से १८ तक
भाव	५३	५३	गुणस्थानादि अनुभाग
अवगाहना	संख्यात घनांगुल या घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक		
बंधप्रकृति	१२०		
उदयप्रकृति	१०९		
सत्वप्रकृति	१४८		
संख्या	असंख्यात		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग $\frac{८}{१४}$ राजु, सर्वलोक		
काल	सर्वकाल । एकजीव-एकसमयसे-अन्तर्मुहूर्त तक		
अन्तर	×। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तनकाल तक		
जाति	२६ लाख		
कुल	१०६॥ लाख कोटि		

असत्य व उभय मनोयोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१२	१२	१ (१से१२वेंतकमेंसे)
जीवसमास	१	१	१सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	४व०	४व०	४–३–२–१–०
गति	४	४	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ ही त्रसकाय
योग	१	१	१ स्व (असत्य या उभयमनो योग)
वेद	३व०	३व०	१—०
कषाय	२५ व०	२५ व०	७-८-९-६-५-४-४ ३-२-१-०
ज्ञान	७	७	२-३-४ में क्रमशः १
संयम	७	७	१ यथायोग्य
दर्शन	३	३	२–३ क्रमशः १
लेश्या	६	६	६-३-१ मेंयथायोग्य१
भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१
आश्रव	४३	४३	१ से १८ तक
भाव	४५	४५	गुणस्थानादिके अनु-सार लगाना
(स्वमनो-योग)			

अवगाहना	संख्यात घनांगुल या घनांगुलके असंख्यातवे भागसे १००० धनुपतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१०६
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४ राजू, सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव–एकसमयसे अन्तर्मुहूर्ततक।
अन्तर	×। एकजीव–अंतर्मुहूर्तसे–असंख्यात पुद्गल परिवर्तनकाल तक।
जाति	२६ लाख
कुल	१०८॥ लाख कोटि

सत्यवचनयोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१३	१३	१(१से १३वें तकमेंसे)
जीवसमास	१	१	१ सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०-४(४सयोगीकी अपेक्षा)
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०
गति	४	४	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ ही त्रसकाय
योग	१	१	१ सत्य वचन योग
वेद	३व०	३व०	१-०
कषाय	२५ व०	२५ व०	७-८-९-६-५-४-३-२-१-०
ज्ञान	८	८	४-३-२क्रमशः१व केवलज्ञान१
संयम	७	७	१ यथायोग्य
दर्शन	४	४	३-२क्रमशः१ व केवलदर्शन१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही

सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	१५	१
आश्रव	४३	४३	१ से १८ तक
भाव	५३	५३	गुणस्थानादिके अनुसार लगाना चाहिये

अवगाहना	संख्यात घनांगुल या घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१०९
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४ राजू, सर्वलोक
काल	सर्वकाल । एकजीव–एकसमयसे–अन्तर्मुहूर्त-काल तक ।
अन्तर	× । एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक ।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाख कोटि

असत्य व उभय वचनयोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१२	१२	१ (पहिले से बारहवें तक में से)
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्या०
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	४	४	४-३-२-१-०
गति	४	४	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय
योग	१	१	१ स्व०
वेद	३	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९-६-५-४-३-२-१-०
ज्ञान	७	७	४-३-२ क्रमशः १
संयम	७	७	१
दर्शन	३	३	२-३ क्रमशः
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही

सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१
आश्रव	४३	४३	१ से अठारह तक
भाव	४५	४५	गुणस्थानादिके अनुसार लगाना

अवगाहना	संख्यात घनांगुल या घनांगुलके असंख्यातवें भाग से १००० योजन तक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१०६
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग $\frac{८}{१४}$ राजू, सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव–एक समयसे–अन्तर्मुहूर्त काल तक।
अन्तर	×। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन कालतक।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाख कोटि

अनुभय-वचनयोग में

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंके	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१३	१३	१(१लेसे१३वेंतकमेंसे)
जीवसमास	५	५	१(द्वी.,त्री.,चतु.,अ.पं.,स.पं.पर्याप्तमेंसे)
पर्याप्ति	६	६	६-५
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४(४ सयोगीकी अपेक्षा)
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०
गति	४	४	१ ही
इन्द्रिय	४	४	१द्वी,त्री ,चतु.,पंचे.मेंसे
काय	१	१	१ ही त्रसकाय
योग	१	१	१ अनुभय वचनयोग
वेद	३व०	३व०	१—०
कषाय	२५ व०	२५ व०	७-८-९-६-५-४-३-२-१-०
ज्ञान	८	८	४-३-२क्रमशः१ व केवल ज्ञान १
संयम	७	७	१ यथायोग्य
दर्शन	४	४	३-२क्रमशः१वकेवलदर्शन१

लेश्या	६	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१
संज्ञी	२	२	१ संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	१५	१
आश्रवं	४३	४३	१ से अठारह तक
भाव	५३	५३	गुणस्थानादिकेअनुसारलगाना

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	११२
सत्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४ राजू, सवलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-एकसमयसे-अंतर्मुहूर्तकालतक।
अन्तर	×। एकजीव-अंतर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक।
जाति	३२ लाख
कुल	१३०॥ लाखकोटि

औदारिककाययोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१३	१३	१(१लेसे १२वें तक)
जीवसमास	७	७	१(पर्याप्तसम्बंधी ७मेंसे)
पर्याप्ति	६	६	६--५--४
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०
गति	२	२	१ (ति०म०)
इन्द्रिय	५	५	१(एके.द्वी,त्री.चतु. पं० में से)
काय	६	६	१
योग	१	१	१औदारिक काययोग
वेद	३व०	३व०	१-०
कपाय	२५व०	२५व०	७-८-९-६-५-४-३-२-१-०
ज्ञान	८	८	४-३-२क्रमशः १ व केवलज्ञान १
संयम	७	७	१ यथायोग्य
दर्शन	४	४	३-२क्रमशः१व केवल दर्शन १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य

भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य
संज्ञी	२	२	१ संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	१५	१ यथायोग्य
आश्रव	४३	४३	१ से १८ तक
भाव	५१	५१	गुणस्थानादि के अ०
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यात भागसे १००० योजन तक		
बंधप्रकृति	१२०		
उदयप्रकृति	१०६		
सत्त्वप्रकृति	१४८		
संख्या	अनंतानंत		
क्षेत्र	सर्वलोक		
स्पर्शन	सर्वलोक		
काल	सर्वकाल। एकजीव--एकसमयसे--अन्तमुर्हूर्तकाल कम २२ हजार वर्ष तक।		
अन्तर	×। एकजीव-१समयसे ३३ सागर ६ अन्तमुर्हूर्त २ समय तक		
जाति	७६ लाख		
कुल	१४६॥ लाख कोटि		

औदारिक मिश्र काययोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	अपर्याप्तालाप	
			नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४(१-२ ४-१३)	इसमें पर्याप्त नहीं है	४	१ (१-२-४-१३ वें में से)
जीवसमास	७		७	१(अपर्याप्तसम्बंधी ७में से)
पर्याप्ति	६अप.		६अप.	६-५-४ अपर्याप्ति
प्राण	७		७	७-७-६-५-४-३-२
संज्ञा	४व०		४व०	४ व अतीत संज्ञा
गति	२		२	१ (तिर्यंच, मनुष्य)
इन्द्रिय	पांचों		पांचों	१एक.द्वी.त्री.चतु.पंचे.में से
काय	६		६	१
योग	१		१	१ औदारिकमिश्रकाय योग
वेद	३व०		३व०	१ व अपगत वेद
कषाय	२५व.		२५व.	७-८-९-६ व अकषाय
ज्ञान	६मनः विभं. विना		६	३-२क्रमशः१ व केवलज्ञान१
संयम	२		२	१ असंयम या यथाख्यात
दर्शन	४		४	३-१क्रमशः१वकेवलदर्शन१
लेश्या	६		६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२		२	१ ही
सम्यक्त्व	४		४	१ यथायोग्य

संज्ञी	२व०	इसमें पर्याप्त नहीं होते	२व०	१ संज्ञीया असंज्ञीवअनुभय
आहारक	१		१	१ आहारक
उपयोग	२		२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	११		११	१
आश्रव	४३		४३	१ से १८ तक
भाव	४५		४५	गुणस्थान इन्द्रियादि के अनुसार लगाना

अवगाहना	घनांगुलअसंख्यातवेंभागसेकुछकम१०००योजनतक
बंध प्रकृति	११४ तक
उदयप्रकृति	९८ तक
सत्वप्रकृति	१४६ तक
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-एकसमयसे-अन्तर्मुहूर्तकालतक।
अन्तर	×। एकजीव-१समय से-३३सागर व अन्तर्मुहूर्त तक कम १ करोड़ पूर्व।
जाति	७६ लाख
कुल	१४६॥ लाख कोटि

वैक्रियक काययोग

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	
		नानाजीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(१-२-३-४ में से)
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रियपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	४	४	४
गति	२	२	१(नरक व देवमें से)
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ ही त्रसकाय
योग	१	१	१ वैक्रियककाययोग
वेद	३	३	१(देवमें स्त्री पु०में १ व नरक में नपुं०१)
कषाय	२५	२५	७–८–९–६
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३–२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्यदेवमेंशुभ में१ नारकीमेंअशुभमें१
भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१
आश्रव	४३	४३	६ से १८
भाव	३६	३६	२३-२२-२२-२१- २२-२१-२४-२२
अवगाहना			१ हाथसे ५०० धनुषतक
बंधप्रकृति	१०४		
उदयप्रकृति	८६		
सत्त्वप्रकृति	१४८		
संख्या	असंख्यात		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवांभाग, ८/१४, १३/१४ राजू (कुछ कम)		
काल	सर्वकाल। एकजीव-एकसमयसे-अंतर्मुहूर्तकालतक।		
अन्तर	X। एकजीव-१समयसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक।		
जाति	८ लाख		
कुल	५१ लाख कोटि		

वैक्रियक मिश्र काययोगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	अपर्याप्तालाप	
			नाना जीवोंके	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	३(१-२-४)	वैक्रियक- मिश्र- काययोगमें- पर्याप्त- नहीं- होते।	३	१ (१-२-४ मेंसे)
जीवसमास	१		१	१ सैनी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
पर्याप्ति	६ अप.		६	६ अपर्याप्ति
प्राण	७		७	७
संज्ञा	४		४	४
गति	२		२	१ (नरक देवमेंसे)
इन्द्रिय	१		१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१		१	१ त्रसकाय
योग	१		१	१ वैक्रियक मिश्रकाययोग
वेद	३		३	१ देवके २ में एक नारकके नपुंसक
कषाय	२५		२५	७-८-९-६
ज्ञान	५		५	३-२ क्रमशः १
संयम	१		१	१ असंयम
दर्शन	३		३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	६		६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२		२	१ ही
सम्यक्त्व	५		५	१ यथायोग्य

संज्ञी	१	इसमें पर्याप्ति नहीं होती	१	१ संज्ञी
आहारक	१		१	१ आहारक
उपयोग	२		२	२ क्रमशः
ध्यान	१०		१०	१
आश्रव	४३		४३	६ से १८ तक
भाव	३८		३८	२२-२१-२५-२३

अवगाहना	कुछकमवैक्रियक काययोगियोंकी अवगाहनाप्रमाण
बंधप्रकृति	१०२
उदयप्रकृति	७६
सत्त्वप्रकृति	१४६
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	अन्तमुर्हूर्तसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक । एकजीव—अन्तमुर्हूर्तसे अन्तमुर्हूर्ततक ।
अन्तर	एकसमयसे बारह मुहूर्ततक । एकजीव-साधिक १०हजारवर्षसेअसंख्यात पुद्गलपरिवर्तनकालतक ।
जाति	८ लाख
कुल	५१ लाखकोटि

आहारक व आहारकमिश्र काययोगमें

नोट - आहारक काययोगका वर्णन पर्याप्तालापमें व आहारक मिश्र काययोगका वर्णन अपर्याप्तालाप में है।

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ प्रमत्त विरत	१	१ प्रमत्त विरत
जीवसमास	२	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ अपर्याप्त (औ. शरीरकी अपेक्षा)
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ पर्या. (औ.) अ. (आहारक)
प्राण	१०	१०	१०	१०	१० औ. अपेक्षा
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ ही मनुष्यगति	१	१ ही मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	१ म्भ०	१	१ आ. काययोग	१	१ आ. मि. काय.
वेद	१	१	१ पुरुषवेद	१	१ पुरुषवेद
कषाय	११	११	४-५-६	११	४-५-६
ज्ञान	३	३	३-२ मतिश्रुत, अ. या म. श्रु. (क्र. १)	३	३-२ क्रमशः १
संयम	२	२	१ सामा. छेदो. में	२	१
दर्शन	३	३	२-३ क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	३	३	१ पीत, पद्म, शु. में	३	१

भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व ही	१	१
सम्यक्त्व	२	२	१ वेदक व क्षायिक में से	२	१
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	७	७	१	७	१
आश्रव	१२ (योग स्व.)	१२ (योग स्व.)	५-६-७	१२	५-६-७
भाव	२७	२७	२६--२४	२७	२६-२४

अवगाहना	औदारिककी अपेक्षा ३॥ हाथसे ५२५ धनुषतक। आहारक शरीरकी अपेक्षा १ हाथ
बंधप्रकृति	६३, आहारक मिश्रमें ६२
उदयप्रकृति	६१, आहारक मिश्र काययोगमें ५७
सत्त्वप्रकृति	१४६
संख्या	५४ व संख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	एक समयसे अन्तर्मुहूर्त तक, आहारक मिश्र काययोगी—अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त तक।
अन्तर	एकसमयसे वर्ष पृथक्त्व तक। एकजीव—अन्तर्मुहूर्त से-८या७अन्तर्मुहूर्तकम अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनकालतक
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

कार्माण काय योगमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप	अपर्याप्तालाप	
			नाना जीव	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४।१.२ ४-१३	कार्माण—काययोगमें—पर्याप्त—नहीं—होते	४	१(१-२-४-१३ वांमें) से
जीवसमास	७		७	७ अपर्याप्त सम्बन्धी
पर्याप्ति	६अप.		६अप०	६-५-४ अपर्याप्ति
प्राण	७		७	७-७-६-५-४-३-२
संज्ञा	४व०		४व०	४ व संज्ञा रहित
गति	४		४	१ ही
इन्द्रिय	५		५	१ एके० द्वी० त्री० चतु० पंचेन्द्रिय में से
काय	६		६	१
योग	१		१	१ कार्माण काययोग
वेद	३व०		३व०	१ व अपगत वेद
कषाय	२५व०		२५व०	७-८-९-६ व अकषाय
ज्ञान	६		६(विना मनः विभं.)	३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान १
संयम	२		२	१ असंयम या यथाख्यात
दर्शन	४		४	१-२-३ क्रमशः १ व केवलदर्शन १
लेश्या	६		६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२		२	१ ही
सम्यक्त्व	५		५ मिश्र वि	१ यथायोग्य

संज्ञी	२च०	इसमें पर्याप्त नहीं होते	२च०	१ संज्ञी या असंज्ञी व अनुभय
आहारक	१		१	१ अनाहारक
उपयोग	२		२	२ क्रमशः व युगपत्
ध्यान	११		११	१
आश्रव	४३		४३	१ व ६ से १८ तक
भाव	४८		४८	१४-२३-२१-२१-२२

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे त्यक्त शरीर. प्रमाण (१००० योजन तक)
बंधप्रकृति	११२
उदयप्रकृति	८६
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव—एकसमयसे ३ समय तक
अन्तर	X। एकजीव०-३ समय कम क्षुद्रभवसे असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल तक।
जाति	८४ लाख
कुल	१९७॥ लाख कोटि

अयोग में

स्थान		
गुणस्थान		अयोग केवली व अतीत गुणस्थान
जीवसमास		सैनीपंचेन्द्रिय (उपचारसे) पर्याप्त व अतीत जीवसमास
पर्याप्ति	६	६ पर्याप्ति व अतीत प्राण
प्राण	१	१ प्राण व अतीत प्राण
संज्ञा		अतीत संज्ञा
गति		मनुष्य गति व अगति
इन्द्रिय		पंचेन्द्रिय व इन्द्रियरहित
काय		त्रसकाय व अकाय
योग		अयोग
वेद		अपगतवेद
कषाय		अकषाय
ज्ञान	१	केवलज्ञान
संयम		परमयथाख्यात संयम, व संयम, असंयम, संयमासंयम रहित
दर्शन	१	केवल दर्शन
लेश्या		अलेश्य
भव्यत्व		भव्यत्व, न भव्यत्व न अभव्यत्व
सम्यक्त्व	१	क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी		न संज्ञी न असंज्ञी
आहारक	१	अनाहारक
उपयोग	२	२ युगपत्
ध्यान		व्युपरत क्रिया निवृत्ति व अतीत ध्यान
आश्रव		अनाश्रव
भाव		१३ व १०
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक	
बंधप्रकृति	×	
उदयप्रकृति	१२ व०	
सत्त्वप्रकृति	८५ व कर्मरहित	
संख्या	अनन्तानन्त	
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवांभाग व४५ लाखयोजन लोकाग्रपर	
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवांभाग व४५ लाखयोजन लोकाग्रपर	
काल	सर्वकाल	
अन्तर	×	
जाति	× तथा १४ लाख	
कुल	× तथा १२ लाखकोटि	

पुरुषवेदमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	९	९	१(१ले से ९ वें तकमें से)	४	१
जीवसमास	४	२	१(सैनी व असैनी पंचे. पर्या०में)	२	१(सै. अ. पं. अपर्याप्तमें से)
पर्याप्ति	६	६	६-५	६	६-५अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-९	७	७-७
संज्ञा	४	४	४-३-२	४	४
गति	३	३	१ (तिर्य. मनु. देवमें से)	३	१
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	९-१०-२में एकदा.	४	२-१में एकदाएक
वेद	१	१	१. पुरुषवेद	१	१
कषाय	२३	२३	७-८-९-६-५-४-३-२	२३	७-८-९-६-५-४
ज्ञान	७	७	२-३-४क्रमशः १	५	३-२ क्रमशः १
संयम	५	५	१(असं.,देश सं., सा.छे.परि.मेंसे१)	३	१ (अ. सा. छे. में से)
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः १	३	३-२क्रमशः १

लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही .	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५ मि. वि	१ यथायोग्य
संज्ञी	२	२	१संज्ञी या असंज्ञी	२	१संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१३	१३	१	१०	१
आश्रव	५५	५२	३से १८ ,तक	४३	६ से १८ तक
भाव	४२	४२	गुणस्थानादि के अनुसार	३८	गुणस्थानादि के अनुसार

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे ३ कोश तक
बंधप्रकृति	१२०–११२
उदयप्रकृति	१०७
सत्त्वप्रकृति	गुणस्थानवत् १४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४, १/१४, ६/१४
काल	सर्वकाल। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे ६०० सागरतक
अन्तर	×। एकजीव-१ समयसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल तक।
जाति	२२ लाख
कुल	८१॥ लाख कोटि

स्त्री वेदमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	९	९	१ (१लेसे ९तकमेंसे)	२	१(१ले २रे में से)
जीवसमास	४	२	१(सैनी, असैं०पंचे० पर्याप्तमें से)	२	१
पर्याप्ति	६	६	६-५	६	६-५
प्राण	१०	१०	१०-९	७	७-७
संज्ञा	४	४	४-३-२	४	४
गति	३	३	१(तिर्य.मनु.देवमेंसे)	३	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ ही पंचेन्द्रिय	१	१ ही
काय	१	१	१ ही त्रसकाय	१	१ ही
योग	१३	१०	९-२में एकदाएक	३	२-१ एकबारएक
वेद	१	१	१ स्त्रीवेद	१	१ स्त्री वेद
कषाय	२३	२३	७-८-९-६-५-४-३	२३	७-८-९-६
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः१	२	२ क्रमशः१ कुम; कुश्रुत
संयम	४	४	१ (असं.देश.सामा० छेदों मेंसे)	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः१	२	२ क्रमशः-१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	३	१ (अशुभमें)

भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	२	१(मिथ्या.सासा.मेंसे)
संज्ञी	२	२	१ संज्ञी या असंज्ञी	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१३	१३	१	८	१
आश्रव	५३	५०	२से १८ तक	४३	६ से १८ तक
भाव	४१	४१	गुणस्थानादिके अनुसार	२८	गुणस्थानादिके अनुसार
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे ३ कोश तक				
बंधप्रकृति	१२०/१०७				
उदयप्रकृति	१०५				
सत्त्वप्रकृति	गुणस्थानवत् १४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग ८/१४ १/१४ ५/१४ सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। एकजीव—एक समयसे—शतपृथक्त्वपल्य. तक।				
अन्तर	×।एकजीव०—क्षुद्रभवसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तनकाल तक।				
जाति	२२ लाख				
कुल	८१॥ लाखकोटि				

नपुंसकवेद में

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	९	९	१(१ले से ९वें तक क्रमसे	३	१(१-२-४में से)
जीवसमास	१४	७	१पर्याप्तसंबंधीमेंसे	७	१अपर्याप्तसंबंधीमें
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४-३-२	४	४
गति	३	३	१(नरक, तिर्यंच, मनु० में से)	३	१
इन्द्रिय	५	५	५	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	९-२में एकदा एक	३	२-१ एकबार एक
वेद	१	१	१ नपुन्सकवेद	१	१ नपुंसकवेद
कषाय	२३	२३	७-८-९-६-५-४-२-२	१३	७-८-९-६
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः १	२	२कुमति, कुश्रुत क्रमशः १
संयम	४	४	१(अ दे. सा छे. मेंसे)	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२-१ क्रमशः १	३	३-२-१ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	४	१

संज्ञी	२	२	१	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१३	१३	१	१०	१
आश्रव	५३	५०	२ से १८ तक	४३	६ से १८ तक
भाव	४१	४१	गुणस्थानादिके अ०	२६	गुणस्थानादिकेअनु०
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	१२०/१०८				
उदयप्रकृति	११४				
सत्त्वप्रकृति	१४८ गुणस्थानवत्				
संख्या	अनंतानंत				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक ८/१४, ६/१४, लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल । एकजीव सादिनपुंसक- एक समयसे- असंख्यात पुद्गल परिवर्तन काल ।				
अन्तर	×। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे ६०० सागर तक ।				
जाति	८० लाख				
कुल	१७१॥ लाख कोटि				

अपगतवेदमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	६ व अ.	६	१ (६-१०-११-१२-१३-१४ में)	१	१ (तेरहवां)
जीवसमास	२ व अ.	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ सैनी पं. (उपचारसे) अ.
पर्याप्ति	६ व अ.	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१० व अ.	१०	१०-४-१	२	२ (केवलि समुद्घात)
संज्ञा	१ व अ.	१	१ व अतीत	अतीत	अतीत संज्ञ
गति	१ व अ.	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१ पं. व अतीत	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१ व अ.	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	११ व अ.	६	६-५-१ में एकदा.	२	१ औ. मि. कार्मा.
वेद			अपगतवेद		अपगतवेद
कषाय	४ व अ.	४	४-३-२-१ अक.	अक०	अकषाय
ज्ञान	५	५	४-३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान १	१	१ केवलज्ञान
संयम	४	४	१ (सा. छे. सू. य. मे से)	१	१ यथाख्यात चा.
दर्शन	४	४	२-३ में क्रमशः १ व केवलदर्शन १	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	१ व अ.	१	१ शुक्लले. व अले.	१	१ शु. (उपचारसे)

भव्यत्व	१वअ.	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	२	२	१ उपशमसम्य.वा क्षायिक सम्य०	१	१ क्षायिक
संज्ञी	२वअ.	२	सैनी व द्वयरहित	१	१न संज्ञी न अ.
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१(३समयअना.) (शेषसमयआ.)
उपयोग	२	२	२क्रमशः व युग.	२	युगपत्
ध्यान	४वअ.	४	१(४शु.ध्यानमेंसे१)	३शु.१	सूक्ष्म क्रिया प्रति०
आश्रव	१५	१३	२-१मेंएकदा.व०	१	१
भाव	३४-१०	३४	२४-२३-२२-२१-२०-१६-१८-१७-१४-१३	१४	१४

अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
बंध प्रकृति	गुणस्थानके अनुसार व०
उदयप्रकृति	गुणस्थानके अनुसार व०
सत्त्वप्रकृति	गुणस्थानके अनुसार व०
संख्या	६००८६४ व ६०१७६१ के मध्य तक व अनन्त
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवांभाग, असंख्यात कईभाग,सर्वलोक
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवांभाग,असंख्यात कई भाग,सर्वलोक
काल	सर्वकाल। (एकजीव)-उपशमक-एकसमयसे-अन्त-मुहूर्त। क्षपक-अन्तमुहूर्तसे देशोन पूर्वकोटि वर्षतक
अन्तर	०। उपशमक एकजीव० —अन्तमुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन।
जाति	१४ लाख व०
कुल	१२ लाख कोटि व०

अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	२	२	१(मिथ्यात्वसा-सादनमें से)	२	१(मिथ्यात्वसा-सा० में से)
जीवसमास	१४	७	१ (पर्याप्तसंबंधी ७ में से)	७	१(अप० ७मेंसे)
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	९-२-१मेंएकदाएक	३	२-१एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	१०	१०	४-५-६ (विवक्षित स्वकेसाथहास्यादि	१०	४-५-६(विवक्षित स्वकेसाथहास्यादि)
ज्ञान	३ अ.	३	३-२क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	२	२	२-१क्रमशः १	२	२-१ क्रमशः१

लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	२	(१मि.;सासादनमेंसे)	२	१
संज्ञी	२	२	१संज्ञी या असंज्ञी	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकबारएक
उपयोग	२	२	क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१	८	१
आश्रव	५५	५२	१० से १८तक	४५	१०से १८ तक
	४०	३७		३०	
भाव	३४	३४	२८-२७-२६	३३	२७-२६
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११७				
उदयप्रकृति	११७(इसमें भी विवक्षावश१५कषायकमकरसकते हैं)				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	अनन्तानंत				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल । एकजीव-१समयसे अंतर्मुहूर्ततक किसी एक कषायकी अपेक्षा ।				
अन्तर	×।एकजीव०-किसी एक कषायकी अपेक्षा-१ समय या अंमुहूर्तसे देशोन १३२ सागर ।				
जाति	८४ लाख				
कुल	१९७॥ लाखकोटि				

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नानाजीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया	नानाजीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२	२	१(तृतीय, च.में)	१	१(चतुर्थगुण०)
जीवसमास	२	१	१सैनीपंचे. प.	१	सैनी पंचे०अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	.६ अप०
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेद्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१३	१०	९ में एकदाएक	३	१-२मेंएकवारएक
वेद	३	३	१	२	१ (पु.नं. में)
कषाय	१०	१०	४-५-६(विवक्षित स्वके साथ हा०	६	४-५-६(विवक्षित स्वके साथ हा०
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	४	४	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य (क्षा.वे०द्वि.में)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	४६/३५	४३/३२	८ से १६ तक	३५/२४	८ से १६ त
भाव	३६	३६	२८-२७	३५	२८-२७
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	७७				
उदयप्रकृति	१०४(इसमेंभीविवक्षावश११कषायकमकरसकतेहैं)				
सत्त्वप्रकृति	१४८—१४१				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल। एकजीव-१समयसे अन्तर्मुहूर्ततक किसी१ कषायकी अपेक्षा।				
अन्तर	×। एकजीव०-अंतर्मुहूर्तसे देशोन अर्ध पुद्गल परिवर्तन।				
जाति	२६ लाख				
कुल	१०६॥ लाखकोटि				

प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नानाजीव नानाकाल	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	१	१	१ (देशसंयत)	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं है
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४	
गति	२	२	१ (मनुष्य, तिर्यंचमें से)	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदाएक	
वेद	३	३	१	
कषाय	१०	१०	४-५-६ (विवक्षित स्वके साथ हास्यादि)	
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ देशसंयम	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य (शुभमें से)	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	३	३	१ यथायोग्य(क्षा.वे.औ.में)	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते।
आहारक	१	१	१ आहारक	
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	
ध्यान	११	११	१ यथायोग्य	
आश्रव	३७	३७	८ से १४ तक	
	३०	३०		
भाव	३१	३१	२६—२५	

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजन तक
बंधप्रकृति	६७
उदयप्रकृति	८७ (इसमें भी विवक्षावश ७ कषाय कम कर सकते हैं)
सत्त्वप्रकृति	१४७—१४०
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल। एकजीव—एकसमयसे-अन्तर्मुहूर्त तक किसी एक कषाय की अपेक्षा
अन्तर	×। एकजीव०--अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्धपुद्गल परिवर्तन काल तक।
जाति	१८ लाख
कुल	५५॥ लाख कोटि

संज्वलन क्रोध, मान, मायामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप			अपर्याप्तालाप		
		नानाजीवापेक्षया		एकजीवापेक्षया	नानाजीवापेक्षया		एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४		१ (६-७-८-९वेंमेंसे)	१		१ प्रमत्तविरत
जीवसमास	२	१		१ सैनी पंचे० पर्याप्त	१		१ सै. पं. अप० (आ०)
पर्याप्ति	६	६		६	६		६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०		१०	७		७ (आहारक)
संज्ञा	४	४		४-३-२	४		४
गति	१	१		१ मनुष्यगति	१		१ ही
इन्द्रिय	१	१		१ ही पंचेन्द्रिय	१		१ ही
काय	१	१		१ ही त्रसकाय	१		१ ही त्रसकाय
योग	११	१०		१०-९ मेंएकदाए.	१		१
वेद	३ व अ.	३ व अ.		१ व अपगतवेद	१		१ पुरुषवेद
कषाय	१०	१०		स्व १ हास्यादि ९ में ४-५-६-२-१	८		४-५-६ (हास्यादि ७ व स्वमें)
ज्ञान	४	४		२-३-४ मेंक्रमशः १	३		३-२ क्रमशः १
संयम	३	३		३-२ मेंक्रमशः १	२		१ (सा. छे०)
दर्शन	३	३		३-२ क्रमशः १	३		३-२ क्रमशः १
लेश्या	३	३		१ यथायोग्य	३		१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१		१ भव्यत्व	१		१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३		१ यथायोग्य (औ. क्षा. वे. में)	२		१ (क्षा० वे. में)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	७-४-१मेंएकदाएक	७	७ मेंएकदाएक
आश्रव	२४	२३	२ से ७ तक	१२	५ से ७ तक
	२१	२०		६	
भाव	२६	२६	२७-२६-२५-२४-२३	२७	२६
	२६	२६	२४-२३-२२-२१-२०	२४	२३

अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
बंधप्रकृति	६३
उदयप्रकृति	८१(इसमेंभी विवक्षावश३कषाय कमकरसकतेहैं)
सत्त्वप्रकृति	१४६-१३६
संख्या	८६०६६१०३ तक
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल। एकजीव-१समयसे अन्तर्मुहूर्ततक किसी १ कषायकी अपेक्षा
अन्तर	०।एकजीव०-अंतर्मुहूर्तसेदेशोनअर्धपुद्गलपरिवर्तन।
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

संज्वलन लोभमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया	नाना जीवापे	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	५	५	१(६-७-८-९-१०वें में से)	१	१ प्रमत्तविरत
जीवसमास	२	१	१सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	१	१ सै.पं. अपर्याप्त (आ०)
पर्याप्ति	६	६	६	६	६अ.(आहारक)
प्राण	१०	१०	१०	७	७ (आहारक)
संज्ञा	४	४	४-३-२-१	४	४
गति	१	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	११	१०	१०-९में एकदा.	१	१आहारक मिश्र
वेद	३वअ.	३वअ.	१ व अपगतवेद	१	१ पुरुषवेद
कषाय	१०	१०	४-५-६-२-१	८	४-५-६ (हा.७ व स्वमें)
ज्ञान	४	४	४-३-२मेंक्रम.१	३	३-२क्रमशः १
संयम	४	४	३-२में एकदाएक	२	१ (सा. छे.)
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
लेश्या	३	३	३-१में यथायोग्य	३	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व

सम्यक्त्व	३	३	१ यथायोग्य (औ.ज्ञा.वे.में)	२	१ (ज्ञा. वे.में)
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	७-४-१में एक	७	७में एकदाएक
आश्रव	२१	२०	२ से ७ तक	६	५ से ७ तक
भाव	२६ २६	२६ २६	२४-२३-२२-२१-२०-१६-१८	२७ २४	२६ २३
अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक				
बंधप्रकृति	६३				
उदयप्रकृति	८१				
सत्त्वप्रकृति	१४६-१३६				
संख्या	८६१०००००				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल। एकजीव-एकसमयसे-अन्तर्मुहूर्त तक				
अन्तर	०। एकजीव०-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन।				
जाति	१४ लाख				
कुल	१२ लाख कोटि				

हास्यादि पट्कमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	८	८	१(१-२-३-४-५-६-७-८वें में से)	४	३(१-२-४-६वें में से)
जीवसमास	१४	७	१ (पर्याप्तसंबंधी ७ में से)	७	१ (अपर्याप्त सं० ७ में से)
पर्याप्ति	६	६	४-५-६	६	४-५-६ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४-३	४	४
गति	४	४	१ ही	४	१ ही
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१५	११	९-२-१मेंएकदाएक	४	१-२मेंएकदाएक
वेद	३	३	१	३	१
कपाय (हास्यादि स्व)	२०	२०	६-५-४-३	२०	६-५-३
ज्ञान	७	७	४-३-२क्रमशः १	६	३-२ क्रमशः १
संयम	५	५	१(असं,देश.सा.छे.प. में से)	३	१(असं.सा.छे.)
दर्शन	३	३	३-२-१क्रमशः १	३	३-२-१ क्रमशः १

लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५ मि.वि.	१ यथायोग्य
संज्ञी	२	२	१संज्ञी याअसंज्ञीमेंसे	२	१संज्ञी याअसंज्ञीमें
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१३	१३	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	[illegible]	[illegible]	४ से १५तक या५से १८तक विषयानुसार	[illegible]	५ से १५ तक या ६ से १८ तक
भाव	४४	४४	२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२८	४०	२६-२७-२८-२६

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१२२ (इसमें विवक्षावश ५ नोकषाय कम कर सकते हैं)
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-१ समयसे अन्तमुहूर्त तक किसी एकमें
अन्तर	०। एक जीव ०-अन्तर्मुहूर्त ।
जाति	८४ लाख
कुल	१६७॥ लाख कोटि

अकषायमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	४ व अ.	४	१ (११-१२-१३ १४ वें में से)	१	सयोगकेवली
जीवसमास	२ व अ.	१	१ सैनी पंचे. प.	१	१ सैनी पं. अप.
पर्याप्ति	६ व अ.	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१० व अतीत	१०	१०-४-१	२	२ का. व. आयु
संज्ञा	०	०	अतीत संज्ञ	०	अतीत संज्ञ
गति	१ व अ.	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१ व अतीत	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१ व अ.	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	११ व अ.	६	६ ५-१ एकदा एक व अयोग	२	२ एकदा एक
वेद	०	०	अपगतवेद	०	अपगतवेद
कषाय	०	०	अकषाय	०	अकषाय
ज्ञान	५	५	४-३-२ क्रमशः व केवलज्ञान १	१	१ केवलज्ञान
संयम	२ यथा. त्रिक रहित	१	१ यथाख्यात संयम	१	१ यथाख्यात
दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः १ व केवलदर्शन १	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	२	२	१ (शुक्ललेश्या या अलेश्य)	१	१ शुक्ललेश्या

भव्यत्व	भव्य. व द्वयरहित	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	२	२	१(उप. स. या क्षा.)	१	१ क्षायिक सम्य.
संज्ञी	संज्ञी या द्वयरहित	संज्ञी या द्व. रहित	संज्ञी या द्वयरहित	०	न संज्ञी न असंज्ञी
आहारक	२	२	१ आहारक (१४वें गुणस्थानमें अना.)	२	२ एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युग.	१	२ युगपत्
ध्यान	४ व ध्यानातीत	४	१ (चार शुक्ल ध्यानमें एक)		
आश्रव	११ व अना.	६ व अना.	१ व अनाश्रव	२	१(औ. मि. व का.)
भाव	३०, १०	३०	२१, २०, १८, १४, १३	१४	१४

अवगाहना	३॥ हाथसे धनुप तक
बंधप्रकृति	१ व ०
उदयप्रकृति	५९ व ०
सत्त्वप्रकृति	१३९ व ०
संख्या	२९९ + ५९८ + ८९८५०२ + ५९८ = ९०७९९७ व अनंत
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यातभाग, सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक (समुद्घात की अपेक्षा) लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग।
काल	सर्वकाल। (एकजीव)-उपशमक-१ समयसे अन्तर्मुहूर्त। क्षपक-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन पूर्वकोटि वर्ष।
अन्तर	×। एकजीवउपशमक-अन्तर्मुहूर्तसे अर्द्धपुद्गल परिवर्तन
जाति	१४ लाख व जाति रहित
कुल	१२ लाखकोटि व कुल रहित

कुमति कुश्रुत ज्ञानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप			अपर्याप्तालाप
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	३ २	३ २	१ (मि. सासा. मि. मेंसे) नोट-मिश्रज्ञानकीअपेक्षा मिश्र नहीं होता	२	१ (मि. सासा. में)
जीवसमास	१४	७	(पर्याप्तसंबंधी ७मेंसे)	७	१ (अप. ७में से)
पर्याप्ति	६	६	६—५—४	६	६-५-४ अप०
प्राण	१०	१०	१०-६-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	६-२-१ एकदाएक	३	२-१ एकवारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-६-६	२५	७-८-६
ज्ञान	१	१	१ स्व स्व	१	१ स्व
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	२	२	२-१ क्रमशः १	१	२-१ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	२ ३	२ ३	१(मि.,सा.मेंसे) मिश्रकीविवक्षामेंमिश्र	२	१मिथ्या.सासा.में
संज्ञी	२	२	१संज्ञीयाअसंज्ञी	२	१संज्ञीयाअसंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१(४आर्त४रौद्रमें)	८	१
आश्रव	५५	५२	१० से १८ तक	४५	१०से १८ तक
भाव	३२	३२	२६-२५-२१-२०	३२	२६-२५-२१-२०
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११७				
उदयप्रकृति	११७				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	अनंतानंत				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वलोक। सादि अज्ञानी एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन कालतक।				
अन्तर	०। एकजीव-सादिअज्ञानी-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन१३२ सागर				
जाति	८४ लाख				
कुल	१९७॥ लाखकोटि				

विभङ्गावधि ज्ञान (कुअवधिज्ञान) में

स्थान	सामान्यालाप	नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप एकजीवा पेक्षया
गुणस्थान	२	२	१ (मिथ्यात्व, सासा. में से) मिश्रहोनेसेतीसरा गुण. भी कह सकते हैं ।
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रियपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०
संज्ञा	४	४	४
गति	४	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय
योग	१०	१०	६ में एकदाएक
वेद	३	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९ (मि. गुणकीविवक्षामें ६ भीकहसकते हैं)
ज्ञान	१	१	१ विभङ्गावधि
संयम	१	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य

भव्यत्व	२	२	१ ही
सम्यक्त्व	२	२	१ यथा.(मि. सासादनमें) मि. क्षायि. वेमि. औपशमकमेंसे
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य
आस्रव	५२	५२	१० से १८ तक
भाव	३२	३२	२६,२५,२१, २०
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजन तक		
बंधप्रकृति	११७		
उदयप्रकृति	१०४		
सत्त्वप्रकृति	१४८		
संख्या	असंख्यात		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, सर्वलोक		
काल	सर्वकाल। एकजीव-१ समयसे देशोन ३३ सागरतक।		
अन्तर	०। एक जीव-अन्तर्मुहूर्तसे असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन काल तक।		
जाति	२६ लाख		
कुल	१०६॥ लाख कोटि		

मतिश्रुत ज्ञानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	९	९	१(४-५-६-७-८-९-१०-११-१२वेंमेंसे)	२	१(अविरत सम्य० व प्रमत्त विरत)
जीवसमास	२	१	१सैनीपंचे. प.	१	१सैनी पंचे०प०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१वअ.संज्ञ	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-९-५-१मेंएक०	४	२-१मेंएकवारएक
वेद	३	३	१	२	१(नपु. पुरुषमें)
कषाय	२१	२१	६-७-८-५-४-३-२-१ व अक०	२१	६-७-८-५-६
ज्ञान	१	१	१ स्व	१	१ स्व
संयम	७	७	१ यथायोग्य	३	१(असं.,सा.छे.)
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३	१(क्षा.वे.औ.मेंसे)	३	१(क्षा.द्वि.वे.मेंसे)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	४८	४५	१ से १६ तक	३५	६ से १६ तक
भाव	३८	३८	२६,२८,२६, २५,२४,२३	३१	२५,२४,२३, २२, २१

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	७६
उदयप्रकृति	१०६
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४
काल	सर्वकाल।एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे-६६सागर४पूर्वकोटि
अन्तर	०। एक जीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्धपुद्गल परिवर्तन काल।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाखकोटि

अवधिज्ञानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	९	९	१(४-५-६-७-८-९-१०-११-१२वें में)	२	१ (चौथा, छटवां)
जीवसमास	२	१	१सैनी पंचे० पर्याप्त	१	१सैनी पं. अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४व ०	४व ०	४-३-२-१-०	४	४
गति	४	४	१	३	१(नरक बिना)
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-९मेंएकदाए.	४	२-१मेंएकवारएक
वेद	३व ०	३व ०	१ व०	२	१(पुंवेद, नपुं.में)
कषाय	२१	२१	६-७-८-५-४-३-२-१-०	२०	६-७-८-५-४
ज्ञान	१	१	१ स्व	१	१ स्व०
संयम	६	६	१(असं., दे., सा., छे., परि., सू. में)	३	१(असं., सा. छे. में)
दर्शन	३	३	३-२ में क्रमशः १	३	३-२क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	४	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३	१(क्षा. वे. औप. मेंसे)	३	१ यथायोग्य

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	४८	४५/४५	१ से १६ तक	३६/३७	९ से १६ तक
भाव	३८	३८	गुणस्थानानुसार		
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १०००योजनतक				
बंधप्रकृति	७९				
उदयप्रकृति	१०६				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४, ६/१४				
काल	सर्वकाल । एकजीव अन्तर्मुहूर्तसे-६६ सागर ४ पूर्वकोटि, क्षयोपशमापेक्षया				
अन्तर	०। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन काल-तक				
जाति	२६ लाख				
कुल	१०६॥ लाख कोटि				

मनःपर्ययज्ञानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	७	७	१(६-७-८-९-१०-११-१२वें में से)	मनःपर्यय ज्ञानमें अपर्याप्त नहीं होता
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	
गति	१	१	१मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ एकदाएक	
वेद	१	१	१ पुंवेद	
कषाय	११व०	११व०	४-५-६-३-२-१-०	
ज्ञान	१	१	१ स्व	
संयम	४	४	१ (सा.छे.सू.य.मेंसे)	
दर्शन	३	३	३-२ में क्रमशः १	
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	३	३	१ (क्षा. वे. द्वि. में से)	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	६	६	१ यथायोग्य
आश्रव	२०	२०	१ से ७ तक
भाव	२७	२७	गुणस्थानानुसार
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुषतक		
बंधप्रकृति	६५		
उदयप्रकृति	७७		
सत्त्वप्रकृति	१४६		
संख्या	असंख्यात (प्रमत्त गुणस्थानीय संख्याके भीतर)		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग		
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तमुर्हूर्तसेदेशोन(अन्तमुर्हूर्त ८ वर्ष कम) पूर्वकोटि वर्षतक क्षयो०		
अन्तर	०।एकजीव-अन्तमुर्हूर्तसेदेशोनअर्धपुद्गलपरिवर्तन।		
जाति	१४ लाख		
कुल	१२ लाख कोटि		

केवलज्ञानमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया	नाना जीवापे०	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२व अ.	२	१ १३-१४वेंमेसे)	१	१ (१३ वां)
जीवसमास	२व अ.	१	१सैनीपंचे(उपचार से) पर्याप्त	१	१(सैनीपं.अ.उप०)
पर्याप्ति	६व०	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	४व०	४	४-१	२	२
संज्ञा	०	०	० अतीत संज्ञ	०	०
गति	१व.सि	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१व अ.	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१व अ.	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	७व अ.	७	५-१मेंएकदा.वअयोग	२	२ एकवारएक
वेद	०	०	० अपगतवेद	०	०
कषाय	०	०	० अकषाय	०	०
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	१	१ केवलज्ञान
संयम	१व. त्रि.र०	१	१ यथाख्यातसंयम	१	१ यथाख्यात
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	१व अ.	१	१शुक्कलेश्यावअलेश्य	१	१ शुक्क (उपचारसे)
भव्यत्व	१व. द्वयर०	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
०त्व	१	१	१क्षायिक सम्यक्त्व	१	१क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी	द्वय रहित	०	द्वयरहित	०	०
आहारक	२	२	१ अहारक (१४वें में अनाहारक)	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	युगपत्	२	२ युगपत्
ध्यान	२ वश्र.	२	१ (सूक्ष्म.व्यु.मेंसे)	१	१ सूक्ष्मक्रिया०
आश्रव	७ वश्र नाश्रव	५ वश्र नाश्रव	१	२	१
भाव	१४	१४	१०-१३-१४	१४	१४
अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुप तक				
बंधप्रकृति	१ व०				
उदयप्रकृति	४२ व०				
सत्त्वप्रकृति	८५ व०				
संख्या	अनन्त				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, लोकके असंख्यात भाग व सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक, लोकके असंख्यातभाग, लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल				
अन्तर	०				
जाति	१४ लाख व जाति रहित				
कुल	१२ लाख कोटि व कुल रहित				

असंयम

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(१-२-३-४में से)	३	१(१-२-४ में से)
जीवसमास	१४	७	१(पर्याप्त सम्बन्धी ७ में से)	७	१(अप. सं. ७में)
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-६-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	६-२-१मेंएकवाएक	३	२-१मेंएकवारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	८-७-६-५-६	२५	८-७-६-५
ज्ञान	६	६	३-२ क्रमशः१	५	३-२ क्रमशः१
संयम	१	१	१ असंयम	१	१असंयम
दर्शन	३	३	३-२-१क्रमशः१	३	३-२-१ क्रमशः१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ हो	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५ मि.वि.	१(मि.सा.द्वि.क्षा.वे.)

संज्ञी	२	२	१ संज्ञी या असंज्ञी	२	१ संज्ञी या असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एक बार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५५	५२	९ से १८ तक	४५	९ से १८ तक
भाव	४१	४१	२९,२८,२७, २६,२३	४०	२७,२६,२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११८				
उदयप्रकृति	११९				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	अनंतानंत				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। सादि असंयमी एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन कालतक।				
अन्तर	०। एकजीव०—अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्तकम १ करोड़ पूर्ववर्ष तक				
जाति	८४ लाख				
कुल	१९७॥ लाखकोटि				

संयमासंयम में

स्थान	सामान्यालाप	नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप	अपर्याप्तालाप
			एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	१	१	१ पांचवां	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४	
गति	२	२	१ (मनुष्य, तिर्यंच में)	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ एकदा एक	
वेद	३	३	१	
कषाय	१७	१७	५-६-७	
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ संयमासंयम	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	३	३	१ (पी. प. शुक्लमेंसे)	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	३	३	१ (औ. क्षा. वे. में)	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	इसमें क्षपकश्रेणी नहीं है
आहारक	१	१	१ आहारक	
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	
ध्यान	११	११	१ यथायोग्य	
आश्रव,	३७	३७	८ से १४ तक	
भाव	३१	३१	२५-२३	
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक			
बंधप्रकृति	६७			
उदयप्रकृति	८७			
सत्त्वप्रकृति	१४७			
संख्या	असंख्यात			
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग			
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८			
काल	सर्वकाल । एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त पृथक्त्व कम पूर्व कोटि वर्ष तक ।			
अन्तर	०। एकजीव०-अंतर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन काल			
जाति	१८ लाख			
कुल	५५॥ लाख कोटि			

सामायिक छेदोपस्थापना में.

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(६-७-८-९वेंमेंसे)	१	१ प्रमत्तविरत
जीवसमास	२	१	१सैनीपंचेंद्रिय पर्या.	१	१ सैनीपं. अप.
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४-३-२	४	४
गति	१	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय.	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	११	१०	९-१०में एकदाएक	१	१ आहारकमिश्र
वेद	३वअ.	३वअ.	१ वअपगतवेद	१	१ पुंवेद
कषाय	१३	१३	५-४-३-२-१-६	११	४-५-६
ज्ञान	४	४	४-३-२क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
संयम	१	१	१ स्व	१	१ स्व
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः १	३	३-२ क्रमश
लेश्या	३	३	१यथायोग्य(शुभमें)	३	१
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	३	३	१(औ.क्षा.वे.मेंसे)	२	१ (क्षा.वे.

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	७	१
आश्रव	२४	२४	२ से ७ तक	१२	२ से ७ तक
भाव	३१	३१	२७-२६-२५-२४-२३-२२	२७	२६-२४
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक				
बंधप्रकृति	६५				
उदयप्रकृति	८१				
सत्त्वप्रकृति	१४६				
संख्या	८६२६६१०३ तक				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग				
काल	सर्वकाल। एकजीव-अंतर्मुहूर्तसे अंतर्मुहूर्त ८ वर्ष कम पूर्वकोटिवर्ष तक।				
अन्तर	०। एकजीव०-अंतर्मुहूर्तसे-देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन तक				
जाति	१४ लाख				
कुल	१२ लाखकोटि				

परिहार विशुद्धिमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	२	२	१(प्रमत्त.अप्रमत्तमें)	इस स्थानमें अपर्याप्त—नहीं—होते
जीवसमास	१	१	१ सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४-३	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ एकदाएक	
वेद	१	१	१ पुरुषवेद	
कषाय	११	११	४-५-६	
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः१	
संयम	१	१	१ स्व	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः१	
लेश्या	३	३	१ यथायोग्य	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	२	२	१ (क्षा०वेदकमें)	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	इसमें अपर्याप्त नहीं होते
आहारक	१	१	१ आहारक	
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	
ध्यान	७	७	१ यथायोग्य	
आश्रव	२०	२०	५ से ७ तक	
भाव	२७	२७	२६–२४	

अवगाहना	३॥ हाथ से ५२५ धनुषतक
बंधप्रकृति	६५
उदयप्रकृति	७७
सत्त्वप्रकृति	१४६
संख्या	८६०६७३०६ से कम
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल । एकजीव- अन्तर्मुहूर्तसे ३८ वर्ष कम एक करोड़ पूर्ववर्ष तक ।
अन्तर	०। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन ।
जाति	१४ लाख
कुल	१२ लाख कोटि

सूक्ष्मसाम्परांय में

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवाः	एक जीवापेक्षया	
गुणस्थान	१	१	१ (दशवां)	इस स्थान में अपर्याप्त नहीं होते
जीवसमास	१	१	१ सैनीपं० पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	१	१	१ परिग्रह संज्ञा	
गति	१	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	९	९	९ में एकदाएक	
वेद	०	०	० अपगतवेद	
कषाय	१	१	१ सूक्ष्मलोभ	
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ सू०	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	२	२	१ (औ० या क्षायिक)	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१	१	१ प्रथक्त्ववितर्कवीचार
आश्रव	१०	१०	२
भाव	२२	२२	२१-२०-१६-१८
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक		
बंधप्रकृति	१७		
उदयप्रकृति	६०		
सत्त्वप्रकृति	१४६, १३८, १०२		
संख्या	८६७		
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग		
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग		
काल	१ समयसे अन्तर्मुहूर्त, अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त		
अन्तर	१ समयसे ६ माह तक, एक समयसे वर्ष प्रथक्त्व एकजीवउपशमक०-अन्तर्मुहूर्तसे देशोनअर्ध पुद्गल परिवर्तन		
जाति	१४ लाख		
कुल	१२ लाख कोटि		

इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते।

यथाख्यात चारित्रमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१ (११-१२-१३-१४वें मेंसे)	१	१ (१३ वां)
जीवसमास	२	१	१सैनी पंचे० पर्याप्त	१	१सै.पं.अ.(उप.से)
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०-४-१	२	२
संज्ञा	०	०	० अतीत संज्ञ	०	०
गति	१	१	१ मनुष्यगति	१	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	११	६	६-५ एकदाएक	२	२ एकवारएक
वेद	०	०	० अपगत वेद	०	०
कषाय	०	०	अकषाय	०	०
ज्ञान	५	५	४-३-२क्रमशः १ व केवलज्ञान १	१	१ केवलज्ञान
संयम	१	१	१ स्व	१	१ स्व
दर्शन	४	४	३-२-क्रमशः १ व केवलदर्शन १	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	१ व अले०	१ व अले०	१ शुक्लेश्या व अलेश्य	१	१ शुक्ललेश्या

भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	२	२	१(औप० क्षायिकमें)	१	१ क्षायिक
संज्ञी	१व. अनु.	१व. अनु.	१ व अनुभय	अनु०	अनुभय
आहारक	२	२	१ आहारक (१४वें में अनाहारक)	२	२ एकबारएक
उपयोग	२	२	२क्रमशःव युगपत्	२	२ युगपत्
ध्यान	४	४	१ यथायोग्य	१	१सूक्ष्म क्रिया०
आश्रव	११	९	१	२	१ एकबारएक
भाव	२९	२९	१९-१७-२०-१९-१८-१७-१४-१२	१४	१४
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक				
बंधप्रकृति	१ व०				
उदयप्रकृति	६०				
सत्त्वप्रकृति	१४६, १३८, १००, ८५, १३				
संख्या	८९९९९७ तक				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग, सर्वलोक				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग व सर्वलोक				
काल	सर्वकाल।(एकजीव)—उपशमक—१ समयेसे अन्तमुहूर्ततक। क्षपक—अन्तमुहूर्तसे देशोन एक करोड़ पूर्व वर्ष तक।				
अन्तर	०। एक जीव उपशमक०—अन्तमुहूर्तसे देशोन अर्द्ध-पुद्गल परिवर्तन।				
जाति	१४ लाख				
कुल	१२ लाखकोटि				

असंयमसंयमासंयमसंयमरहितमें

स्थान		आलाप
गुणस्थान	०	०
जीवसमास		०
पर्याप्ति		०
प्राण		०
संज्ञा		०
गति		० (सिद्धगति)
इन्द्रिय		० (अतीन्द्रिय)
काय		० (अकाय)
योग		० (अयोग)
वेद		० (अपगतवेद)
कषाय		० (अकषाय)
ज्ञान	१	१ केवलज्ञान
संयम		० (त्रिकरहित)
दर्शन	१	१ केवलदर्शन
लेश्या		० अलेश्य
भव्यत्व		० अनुभय
सम्यक्त्व	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी	० अनुभय
आहारक	१ अनाहारक
उपयोग	२ युगपत्
ध्यान	० अतीत ध्यान
आश्रव	०
भाव	१०
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक (प्रदेश)
बंधप्रकृति	०
उदयप्रकृति	०
सत्त्वप्रकृति	०
संख्या	अनन्त
क्षेत्र	४५ लाख योजन
स्पर्शन	४५ लाख योजन
काल	सर्वकाल
अन्तर	०
जाति	०
कुल	०

चक्षुदर्शनमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१२	१२	१(१से१२वें तकमें)	४	(१-२-४-६ में)
जीवसमास	६	३	१ (च.प.अ.पं. सै. पं.प. में)	३	१(च.अ.सै.अ. पं. अ.)
पर्याप्ति	६	६	६—५	६	६-५ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८	७	७-७-६
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	२	२	१(चतु.पंचेंद्रियमें)	२	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-९-२एकदाएक	४	२-१एकवारएक
वेद	३व०	३व०	१ व०	३	१
कषाय	२५व.	२५व.	९-८-७-६-५-४ ३-२-१-०	२५	९-८-७-६-५-४
ज्ञान	७	७	४-३-२क्रमशः१	५	३-२क्रमशः १
संयम	७	७	१ यथायोग्य	३	१(असं.सा.छे.)
दर्शन	१	१	१ स्व	१	१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	एक ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	(मि.सा.चा.वे.द्वि

संज्ञी	२	२	१संज्ञीयाअसंज्ञी	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	१ से १८ तक	४६	६ से १८ तक
भाव	४४	४४	गुणस्थानादिके अनुसार	३६	गुणस्थानादिके अनुसार

अवगाहना	अंगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	११४
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४, सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तमुहूर्तसे दो हजार सागर तक क्षयोपशमकी अपेक्षा।
अन्तर	०। एक जीव०-क्षुद्रभवग्रहणसे देशोन अर्धपुद्गल परिवर्तन काल तक।
जाति	२८ लाख
कुल	११५॥ लाखकोटि

अचक्षुर्दर्शनमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१२	१२	१(१से१२तकमें)	४	१(१-२-४-६वेंमें)
जीवसमास	१४	७	१(पर्याप्तिसंब.७मेंसे)	७	१(अपर्या.सं.७में)
पर्याप्ति	६	६	६—५—४	६	६-५-४ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४-३-२-१-०	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१(एके.द्वी.आदि में)	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१५	११	१०-९-२-१एकदाएक	४	२-१एकवारएक
वेद	३—०	३—०	१—०	३	१
कषाय	२५	२५	९-८-७-६-५-४-३-२-१-०	२५	९-८-७-६-५-४
ज्ञान	७	७	४-३-२क्रमशः१	५	३-२ क्रमशः१
संयम	७	७	१ यथायोग्य	३	१(असं.सामा.छे.में)
दर्शन	१	१	१ स्व	१	१ स्व
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५ मि.बि.	१

संज्ञी	२	२	१संज्ञीया असंज्ञी	२	१ सं. या असं.
आहारक	२	१	१आहारक	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	१से अठारहतक	४६	६से अठारहतक
भाव	४४	४४	गुणस्थानादिके अनुकूल	३६	गुणस्थानादिके अनुकूल

अवगाहना	अंगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१२०
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-सिद्ध होनेवाले भव्यजीवकी अपेक्षा-अनादि-सान्त।
अन्तर	०
जाति	८४ लाख
कुल	१६७॥ लाख कोटि

अवधिदर्शनमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	६	६	१(४थे से १२वेंतकमें)	२	१(अवि.प्रम.मेंसे)
जीवसमास	२	१	१ सैनी पं० पर्याप्त	१	१सै.पं.अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४–०	४–०	४-३-२-१-०	४	४–३
गति	४	४	१ ही	४	१ ही
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय ही	१	प०ही
काय	१	१	१ त्रसकाय ही	१	१ त्रस ही
योग	१५	११	६-१०एकदाएक	४	२-१एकवारएक
वेद	३–०	३–०	१-०	२	१(पुं. नपुं.मेंसे)
कषाय	२१–०	२१–०	८-७-६-५-४-३-२-१-०	२०	८-७-६-५-४
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
संयम	७	७	१ यथायोग्य	३	१(असं.सा.छे.में)
दर्शन	१	१	१ स्व	१	१ स्व
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व ही	१	१ भ०
सम्यक्त्व	३	३	१(क्षा.वे.औ.में)यथा.	३	१

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१ यथायोग्य	१२	१ यथायोग्य
आश्रव	४८	४४	१से सोलहतक	३६	५से सोलहतक
भाव	३६	३६	गुणस्थानादिके अनुकूल।	३५	गुणस्था.

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	७६
उदयप्रकृति	१०६
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	संख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ६/१४, ८/१४ रा०
काल	सर्वकाल। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे ६६ सागर ४ करोड़ पूर्व, क्षयोपशमकी अपेक्षासे
अन्तर	०। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे अर्द्धपुद्गल परिवर्तन।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाखकोटि

केवलदर्शनमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप नाना जीवोंमें	पर्याप्तालाप एकजीवापेक्षया	अपर्याप्तालाप नाना जीवोंमें	अपर्याप्तालाप एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२—०	२	१ (१३-१४वें मेंसे)	१	१ (१३वां)
जीवसमास	२—०	१	१सैं.पं.पर्या.(उप.से)	१	१सैं.पं.अ.(उप.)
पर्याप्ति	६—०	६	६	६	६ अप.
प्राण	४—०	४	४-१वच.काय.आयु.स्वा. या आयुमात्र	२	२आयु,कायबल
संज्ञा	०	०	०	०	०
गति	१—०	१	१मनुष्यगति ही	१	१ म.
इन्द्रिय	१—०	१	१पं०ही (उपचारेण)	१	१ पं.
काय	१—०	१	१त्रसकाय(उपचारेण)	१	१ त्र.
योग	७—०	७—०	५-१-०	२	२ एकबारएक
वेद	०	०	०(अपगत वेद)	०	०
कषाय	०	०	०(अकषाय)	०	०
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	१	१ केवलज्ञान
संयम	१वत्रि. रहित	१	१ यथाख्यात संयम	१	१यथाख्यात सं.
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	१—०	१—०	१ शुक्ललेश्या व०	१	१ शुक्ललेश्या
भव्यत्व	१वअ-नुभय	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१क्षायिक सम्यक्त्व	१	१ क्षा०

संज्ञी	०(अनुभय)	०	०(नसं.नअसं.)	०	०
आहारक	२	२	१आहारक(१४वें में अनाहारक)	२	२ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ युगपत्	२	२ युगपत्
ध्यान	२—०	२—०	१(सू.व्यु.मेंसे)व.	१	१सूच्मक्रिया०
आश्रव	७—०	७—०	१	२	१
भाव	१४-१०-	१४	१४-१३	१४	१४
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक				
बंधप्रकृति	१—०				
उदयप्रकृति	४२—०				
सत्त्वप्रकृति	८५—०				
संख्या	८९९१०० व अनन्त				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, लोकके असंख्यात भाग, व सर्वलोक				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, लोकके असंख्यात भाग व सर्वलोक				
काल	सर्वकाल				
अन्तर	०				
जाति	१४ लाख व ०				
कुल	१२ लाख कोटि व ०				

कृष्ण व नील लेश्यामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(१-२-३-४थे मेंसे)	३	१(१-२-४थेमें)
जीवसमास	१४	७	१(पर्याप्तसं.७मेंसे)	७	१(अप.सं.७ में)
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१(एकेंद्रियादिमें)	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	९-२-१एकदाएक	३	१-२एकवारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	९-८-७-६	२५	९-८-७-६
ज्ञान	६	६	३-२क्रमशः१	५	३-२क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२-१क्रमशः१	३	३-२-१क्रमशः१
लेश्या	१	१	१ स्व	१	१ स्व
भव्यत्व	२	२	१ हो	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	३	१(मि.सा.वे.में)

संज्ञी	२	२	१ संज्ञी या असं.	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकबार एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५५	५२	९ से अठारह तक	४५	९ से अठारह तक
भाव	३६	३६	२४-२०-२१-२२-२३	३३	२४-२२-२१
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११८				
उदयप्रकृति	११९				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	अनन्तानन्त				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तमुहूर्तसे ३३ न १७ सागरतक				
अन्तर	०। एकजीव-० अंतमुहूर्तसे साधिक ३३ सागरतक।				
जाति	८० लाख				
कुल	१७१॥ लाख कोटि				

कापोत लेश्यामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(१-२-३-४थेमें से	३	१(१-२-४में)
जीवसमास	१४	७	१(पर्या.सं.७ में)	७	१(अप.सं.७में)
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अप.
प्राण	१०	१०	१० ९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१(एकेंद्रियादि में)	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	९-२-१एकदाएक	२	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	९-८-७-६	२५	९-८-७-६
ज्ञान	६	६	३-२क्रमशः१	५	३-२क्रमशः१
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२-१क्रमशः१	३	३-२-१क्रमशः१
लेश्या	१	१	१ स्व	१	१ स्व
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	४	१(मि.सा.वे.क्षा)

संज्ञी	२	२	१ संज्ञीयाअसंज्ञी	२	१ संज्ञीयाअसंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकआहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१०	१०	१ यथायोग्य	१०	१ यथायोग्य
आश्रव	५५	५२	६ से १८ तक	४५	६ से १८ तक
भाव	३६	३६	२४,२३,२२, २१, २०	३४	२५-२३-२२- २१

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	११८
उदयप्रकृति	११६
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे ७ सागर तक।
अन्तर	०। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे साधिक ३३ सागर।
जाति	८० लाख
कुल	१७१॥ लाखकोटि

पीतलेश्यामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	७	७	१(१लेसे७वेंतकमें)	४	१(१-२-४-६वां
जीवसमास	२	१	१सैं.पंचे.पर्या.	१	१सैंनीपं.अपर्या०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४-३	४	४
गति	३	३	१(तिर्य.मनु.देवमें)	२	१ (दे०म०में)
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	१५	११	१०-९में एकदाएक	४	१-२एकवारएक
वेद	३	३	१	२	१(पु.स्त्री में)
कषाय	२५	२५	९-८-७-६-५-४	२३	९-८-७-६-४
ज्ञान	७	७	४-३-२ क्रमशः१	५	३-२क्रमशः १
संयम	५	५	१(सा.छे.प.संय-मा. असं०में)	३	१ (असं०सा.छे.)
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः१
लेश्या	१	१	१ पीतलेश्या	१	१ पीतलेश्या
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१२	१२	१ यथायोग्य	१२	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	५ से १८ तक	५२	५ से १८ तक
भाव	३८	३८	२५-२४-२३-२२-२१	३३	२४-२२-२१
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे१००० योजनतक				
बंधप्रकृति	१११				
उदयप्रकृति	१०८				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४, ८/१४				
काल	सर्वकाल । एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे २अन्तर्मुहूर्त२॥ सागर तक ।				
अन्तर	०। एकजीव-अंतर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक ।				
जाति	२२ लाख				
कुल	८१॥ लाखकोटि				

पद्मलेश्यामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	७	७	१(१लेसे७वें तक)	४	१(१-२-४-६ वां)
जीवसमास	२	१	१सैनीपं.पर्याप्त	१	१सैनीपं.अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	३	३	१(ति.मनु.देवमें)	२	१(दे.मनु. में)
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-६ में एकवारएक	४	२-१एकवार एक
वेद	३	३	१	१	१ पुरुषवेद
कषाय	२५	२५	६-८-७-६-५-४	२३	६-८-७-६-४
ज्ञान	७	७	४-३-२ क्रमशः१	५	३-२क्रमशः १
संयम	५	५	१(सा.छे.प.दे.अ.में)	३	१(अ.सा.छे.)
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः१	३	३-२क्रमशः १
लेश्या	१	१	१ पद्मलेश्या	१	१ पद्मलेश्या
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१ (मिश्रविना)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१ एकबार
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१२	१२	१ यथायोग्य	१२	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	५ से १८ तक	४४	५ से १८ तक
भाव	३८	३८	२५-२४-२३-२२-२१	३२	२४-२२-२१

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजनतक
बंधप्रकृति	१०८
उदयप्रकृति	१०८
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ६/१४
काल	सर्वकाल। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे २ अन्तर्मुहूर्त १८॥ सागर तक।
अन्तर	०। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक।
जाति	२२ लाख
कुल	८१॥ लाखकोटि

शुक्ललेश्यामें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीव	एकजीवापेक्षया	नाना जीव	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१३	१३	१ (अयोगवि. १३ मेंसे)	५	१ (१-२-४-६-१३)
जीवसमास	२	१	१ सं. पं. पर्या.	१	१ सैनी पं० अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४—०	४—०	४—३—०	४—०	४-०
गति	३	३	१ (म. ति. देवमेंसे)	२	१ (म. देवमें)
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-९ में एकदा एक	४	२-१ एकदा एक
वेद	३—०	३—०	१ व अपगतवेद	१—०	१ पुरुषवेद व अप.
कषाय	२५—०	२५—०	९-८-७-६-२-४-३-२-१ व अकषाय	२३	९-८-७-६-४-०
ज्ञान	८	८	४-३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान	६	३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान
संयम	७	७	१ यथायोग्य	४	१ (अ. सा. छे. य.)
दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः १ व केवलदर्शन १	४	३-२ क्रमशः १ व केवलदर्शन १
लेश्या	१	१	१ शुक्ललेश्या	१	१ शुक्ललेश्या
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१ (मिश्र विना)

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	२-१एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः व युगपत्	२	२क्रमशः वयुगपत्
ध्यान	१५	१५	१ यथायोग्य	१३	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	१से १८ तक	४४	१से १८ तक
भाव	४७	४७	गुणस्थानादिके अनुसार	४०	गुणस्थाना-नुसार
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	१०४				
उदयप्रकृति	१०६				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग व सर्वलोक				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग, ८/१४, व सर्वलोक				
काल	सर्वकाल । एकजीव--अन्तर्मुहूर्तसे साधिक ३३ सागर				
अन्तर	०।एकजीव--अन्तर्मुहूर्तसे असं०पुद्गल परिवर्तन।				
जाति	२२ लाख				
कुल	८१॥ लखकोडि				

अलेश्यमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीव में	एक जीवापेक्षया	
गुणस्थान	१व०	१	१ अयोग केवली	इसमें अपर्याप्त नहीं होते
जीवसमास	१व०	१	१सै.पं.(उपचारेण) पर्या०	
पर्याप्ति	६व०	६	६	
प्राण	१व०	१	१ आयु	
संज्ञा	०	०	० अतीतसंज्ञ	
गति	१व०	१	१ मनुष्यगति	
इन्द्रिय	१व०	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१व०	१	१ त्रसकाय	
योग	०	०	० अयोग	
वेद	०	०	० अपगतवेद	
कषाय	०	०	० अकषाय	
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	
संयम	१त्रि० रहित	१	१ यथाख्यात	
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	
लेश्या	०	०	०	
भव्यत्व	१वत्रि० रहित	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायिक सम्यक्त्व	

संज्ञी	०	०	०	इसमें अपर्याप्त नहीं होते ।
आहारक	१	१	१ अनाहारक	
उपयोग	२	२	२ युगपत्	
ध्यान	१ व०	१	१ व्युपरत क्रिया०	
आश्रव	०	०	०	
भाव	१३–१०	१३	१३	

अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुप तक
बंधप्रकृति	०
उदयप्रकृति	१२ व०
सत्त्वप्रकृति	८५ व०
संख्या	अनन्त
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल ।
अन्तर	०
जाति	१४ लाख व०
कुल	१२ लाख कोटि व०

भव्यमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१४	१४	१(१लेसे१४तकमेंसे)	५	१(१-२-४-६-१३)
जीवसमास	१४	७	१(पर्या.संबंधी७ में)	७	१(अपर्या.सं.७मेंसे)
पर्याप्ति	६	६	६—५—४	६	६-५-४अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४-३-२-१-०	४	४-०
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१५	११	९-१०-२-१एकदाएक	२	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	९-८-७-६-५-४-३-२-१-०	२५	९-८-७-६-४-०
ज्ञान	८	८	४-३-२क्रम.१वकेव.	६	३-२क्रमशः१वकेव.
संयम	७	७	१ यथायोग्य	४	१(अ. सा. छे. य.)
दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः १ व केवलदर्शन १	४	३-२क्रमशः १वकेव
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१यथायोग्य

संज्ञी	२	२	१संज्ञीयाअसंज्ञी	२	१
आहारक	२	२	१ आहारक(१४वें मे अना०)	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२क्रमशः व युग०	२	२क्रमशःवयुग०
ध्यान	१६	१६	१यथायोग्य	१३	१
आश्रव	५७	५३	१ से १८ तक	४६	१ से १८ तक
भाव	५२	५२	गुणस्थानानुसार	४८	२६-२७-२६-२५-२४ २३

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	१२२
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल
अन्तर	०
जाति	८४ लाख
कुल	१९७॥ लाख को

अभव्यमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप			अपर्याप्तालाप
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	७	१	७	१
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४ अप०
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	९-२-१एकदाएक	३	१-२एकवारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	९-८-७	२५	९-८-७
ज्ञान	३	३	३-२क्रमशः१	२	२क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१असंयम
दर्शन	२	२	२-१क्रमशः१	२	१-२-क्रमशः१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	१	१	१ अभव्यत्व	१	१ अभव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व

संज्ञी	२	२	१संज्ञी या असंज्ञी	२	१
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	५५	५२	११ से १८ तक	४५	११ से १८ तक
भाव	३३	३२	२८-२७-२६	३२	२७-२६
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे१००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११७				
उदयप्रकृति	११७				
सत्त्वप्रकृति	१४?				
संख्या	अनन्त				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल				
अन्तर	०				
जाति	८४ लाख				
कुल	१६७॥ लाख कोटि				

भव्याभव्यद्वयरहितमें

स्थान	आलाप
गुणस्थान	० अतीत गुणस्थान
जीवसमास	० अतीत जीवसमास
पर्याप्ति	० अतीत पर्याप्ति
प्राण	० अतीत प्राण
संज्ञा	० अतीत संज्ञ
गति	० सिद्ध गति
इन्द्रिय	० अतीन्द्रिय
काय	० अकाय
योग	० अयोग
वेद	० अपगतवेद
कषाय	० अकषाय
ज्ञान	१ केवलज्ञान
संयम	० त्रिक रहित
दर्शन	१ केवलदर्शन
लेश्या	० अलेश्य
भव्यत्व	० अनुभय
सम्यक्त्व	१ क्षायिक सम्यक्त्व

संज्ञी	० अनुभय
आहारक	१ अनाहारक
उपयोग	२ युगपत्
ध्यान	० अतीतध्यान
आश्रव	०
भाव	१०
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुपतक (प्रदेशापेक्षया)
बंधप्रकृति	०
उदयप्रकृति	०
सत्त्वप्रकृति	०
संख्या	अनन्त
क्षेत्र	४५ लाख योजन
स्पर्शन	४५ लाख योजन
काल	सर्वकाल
अन्तर	०
जाति	०
कुल	०

मिथ्यात्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१
जीवसमास	१४	७	१	७	१
पर्याप्ति	६	६	६–५–४	६	६-५-४ अप.
प्राण	१०	१०	१०-९-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१३	१०	६-२-१ एकदाएक	३	१-२ एकबार एक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-९-६	२५	७-८-९
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः १	२	१-२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	१-२ क्रमशः १	२	१-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१

संज्ञी	२	२	१	२	१
आहारक	२	१	१	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	५२	५२	१० से १८ तक	४५	११ से १८ तक
भाव	३४	३४	२८-२७-२३-२६	३३	२७-२६

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजनतक०
बंधप्रकृति	११७
उदयप्रकृति	११७
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। सादि मिथ्यादृष्टि एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तन कालतक।
अन्तर	०। एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे देशोन १३२ सागरतक।
जाति	८४ लाख
कुल	१९७॥ लाखकोटि

सासादन सम्यक्त्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ सासादन	१	१ सासादन
जीवसमास	८	१	१सं.पंचें.पर्या.	७	१सैनीपं.अपर्या
पर्याप्ति	६	६	६	६	६-५-४ अपर्याप्त
प्राण	१०	१०	१०	७	७-६-५-४
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	४	४	१	३	१ (नरकगति-विना)
इन्द्रिय	५	१	१ पंचेन्द्रिय	५	१
काय	४	१	१ त्रसकाय	४	१(प्र.ज.व.त्रसमें
योग	१३	१०	६ एकदाएक	३	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	७-८-६	२५	७-८-६
ज्ञान	३	३	२-३क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१ असंयम
दर्शन	२	२	२ क्रमशः१	२	१-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ सासादन	१	१ सासादन

संज्ञी	२	१	१ संज्ञी	२	१ संज्ञीया असं.
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२ एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	५०	४७	१० से १७ तक	४०	१० से १७ तक
भाव	३२	३२	२७-२६	३१	२६
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजनतक				
बंधप्रकृति	१०१				
उदयप्रकृति	१११				
सत्त्वप्रकृति	१४७				
संख्या	पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण				
क्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण				
स्पर्शन	लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण, ८/१४, १२/१४				
काल	एक समयसे पल्योपमके असंख्यातवें भागतक। एकजीव–१समयसे ६ आवलि तक।				
अन्तर	एक समयसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक. एकजीव०-पल्योपम के असंख्यातवें भागसे देशोन अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन				
जाति	५६ लाख				
कुल	१८७॥ लाखकोटि				

सम्यग्मिथ्यात्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	
गुणस्थान	१	१	१ (तृतीयगुणस्थान)	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते।
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचे० पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४	
गति	४	४	१	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	१०	१०	६ एकदाएक	
वेद	३	३	१	
कषाय	२१	२१	६–७–८	
ज्ञान	३	३	२–३ क्रमशः १	
संयम	१	१	१ असंयम	
दर्शन	२	२	२ क्रमशः १	
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	
भव्यत्त्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	१	१	१ सम्यग्मिथ्यात्व	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	इसमें अपर्याप्त नहीं होते।
आहारक	१	१	१ आहारक	
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	
ध्यान	६	६	१ यथायोग्य	
आश्रव	४३	४३	६ से १६ तक	
भाव	३२	३२	२७—२६	
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजनतक			
वंधप्रकृति	७४			
उदयप्रकृति	१००			
सत्त्वप्रकृति	१४५			
संख्या	पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक			
क्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग			
स्पर्शन	लोकके असंख्यातवें भाग			
काल	अन्तमुर्हूर्तसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक। एकजीव-अन्तमुर्हूर्तसे अन्तमुर्हूर्त।			
अन्तर	एक समयसे पल्योपमके असंख्यातवें भागतक। एकजीव-अंतमुर्हूर्तसे देशोनअर्द्ध पुद्गलपरिवर्तन।			
जाति	२६ लाख			
कुल	१०६॥ लाखकोटि			

प्रथमोपशम सम्यक्त्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	
गुणस्थान	४	४	१(४ थे से ७वें तक)	इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते
जीवसमास	१	१	१ सैनीपंचे. पर्याप्त	
पर्याप्ति	६	६	६	
प्राण	१०	१०	१०	
संज्ञा	४	४	४—३	
गति	४	४	१	
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	
काय	१	१	१ त्रसकाय	
योग	१०	१०	९ एकदाएक	
वेद	३	३	१	
कषाय	२१	२१	८-७-६-५-४	
ज्ञान	३	३	३-२ क्रमशः १	
संयम	४	४	१(अ.सा.छे.देश.में)	
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	
सम्यक्त्व	१	१	१ प्रथमोपशमसम्यक्त्व	

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी
आहारक	१	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः
ध्यान	१२	१२	१ यथायोग्य
आस्रव	४१	४१	५ से १६ तक
भाव	३४	३४	२६-२७-२८-२६

इस स्थानमें अपर्याप्त नहीं होते

अवगाहना	संख्यात अंगुलसे १००० योजनतक
बंधप्रकृति	७७
उदयप्रकृति	१००
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग तक
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४
काल	अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपमका असंख्यातवां भागतक एकजीव-अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त तक।
अन्तर	एक समयसे ७ रात दिन तक। एकजीव-असंख्यातवर्षसंदेशोनअर्द्ध पुद्गल परिवर्तनकालतक।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाख कोटि

द्वितीयोपशम सम्यक्त्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवापेक्षया	एकजीवापेक्षया	नाना जीवापेक्षया	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	८	८	१ (४थेसे ११वें तक)	१	१ (अविरत सं०)
जीवसमास	२	१	१ सैनी पं० पर्याप्त	१	१ सैनी पं० अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	४	४
गति	२	१	१ मनुष्यगति	१	१ देवगति
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	१२	१०	९ एकदाएक	२	१-२एकबार एक
वेद	३व०	३व०	१	१	१ पुरुषवेद
कषाय	२१व०	२१व०	८-७-६-५-४-३ २-१-०	२१	८-७-६
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
संयम	६	६	१ यथायोग्य	१	१ असंयम
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः १	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	३	१ (शु. प. पी.)
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	१	१ द्वितीयोपशम०

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१३	१३	१ यथायोग्य	१०	१
आश्रव	४५	४३	१ से १६ तक	३३	६ से १६ तक
भाव	३५	३४	२६-२७-२६-२४-२१ -१७-१८-१६-२०	२६	२६-२४

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे ५२५ धनुषतक
बंधप्रकृति	७७
उदयप्रकृति	६४
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	संख्यात
क्षेत्र	लकोका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन-	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	अन्तर्मुहूर्तसे अन्तर्मुहूर्त तक
अन्तर	एकसमयसे वर्ष प्रथक्त्व(३ से ६ वर्षके बीच)तक। एकजीव०अन्तर्मुहूर्तसेदेशो.अर्द्ध पुद्गलपरिवर्तनतक।
जाति	१८ लाख
कुल	३८ लाख कोटि

क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	४	४	१(४-५-६-७वें में)	२	१ (४-६ वां)
जीवसमास	२	१	१सैनी पं० पर्याप्त	१	१सैनीपंचे०अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४	४	४-३	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	१५	११	१०-९ एकदाएक	४	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	२	१ (पु. न. में)
कषाय	२१	२१	८-७-६-५-४	२०	८-७-६-४
ज्ञान	४	४	४-३-२ क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
संयम	५	५	१(अ. सा- छे .प. देश० में)	३	१(अ.सा.छे. में)
दर्शन	३	३	३-२ क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः१
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	१	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	१	१ क्षायोपशमिक०

संज्ञीय	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२ एकवा एक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१२	१२	१ यथायोग्य	१२	१ यथायोग्य
आश्रव	४८	४४	५ से १६ तक	३६	५ से १६ तक
भाव	३७	३७	२९-२७-२६ २५-२४	३४	२९–२७– २६–२४
अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे १००० योजन तक				
बंधप्रकृति	७९				
उदयप्रकृति	१०६				
सत्त्वप्रकृति	१४८				
संख्या	असंख्यात				
क्षेत्र	लोकके असंख्यातवें भाग				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, ८/१४				
काल	सर्वकाल। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे ६६ सागर।				
अन्तर	०। एकजीव–अन्तर्मुहूर्तसे देशोन अर्द्धपुद्गल परिवर्तनकालतक।				
जाति	२६ लाख				
कुल	१०६॥ लाख कोटि				

क्षायिक सम्यक्त्वमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	११व०	११	१ (४थेसे १४ वें तकमेंसे)	३	१(४-६-१३ वें में)
जीवसमास	२व०	१	१सै. पंचे. पर्याप्त	१	१सैनी. पंचे. अप.
पर्याप्ति	६व०	६	६	६	६ अपर्याप्ति
प्राण	१०व०	१०	१०—४—१	७	७—२
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	४व०	४व०
गति	४व०	४	१	४	१
इन्द्रिय	१व०	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१व०	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	१५व०	११व०	१०-६-५-१-०एकदा.	४	१-२एकवारएक
वेद	३व०	३व०	१ व ०	२व०	१ (पुं.न. में)
कषाय	२१व०	२१व०	८-७-६-५-४-३-२-१-०	२०	८-७-६-४-०
ज्ञान	५	५	४-३-२ क्रमशः १ व केवल.	४	३-२क्रमशः व केवलज्ञान १
संयम	७वन्नि करहि.	७	१	४	१(अ.सा.छे. य.)
दर्शन	४	४	३-२ क्रमशः१ व केवलदर्शन	४	३-२क्रमशः१ व केवलज्ञान
लेश्या	६व०	६व०	१यथायोग्य व०	४	१यथा.(का.पी.प.शु.)

भव्यत्व	१व०	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१क्षायिक सम्यक्त्व	१	१ क्षा. सम्यक्त्व
संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	२	१ आहारक(१४ वेंमें अना०)	२	१-२एकवारएक
उपयोग	२	२	२क्रमशः व युगपत्	२	२क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	१६	१ यथायोग्य	१३	१ यथायोग्य
आश्रव	४८व०	४४व०	०-१-से १६तक	३६	१ से १६ तक
भाव	४६	४६	२९-२७-२५-२१-२० १९-१८-१७-१५-१३-१०	४०	१६-२६-२४

अवगाहना	संख्यात घनांगुलसे ३ कोशतक
बंधप्रकृति	७९
उदयप्रकृति	१०६
सत्त्वप्रकृति	१४१
संख्या	असंख्यात व अनन्त
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग
काल	सर्वकाल । एकजीव सिद्ध न होनेतककी अपेक्षा-१ समयसे साधिक तेतीस सागर ।
अन्तर	०
जाति	२६ लाख व ०
कुल	९४ या ८५ लाख कोटि व ०

संज्ञीमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीव	एकजीवापेक्षया	नाना जीव	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१२	१२	१(१ लेसे १२वेंतकमें)	४	१(१-२-४-६वेंमें)
जीवसमास	२	१	१सै. पं. पर्या.	१	१सैनी पं०अप०
पर्याप्ति	६	६	६	६	६ अपर्याप्त
प्राण	१०	१०	१०	७	७
संज्ञा	४व०	४व०	४—३—२—१—०	४	४
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	१	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१
काय	१	१	१ त्रसकाय	१	१
योग	१५	११	१०-९मेंएकदाए.	४	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५व०	२५व०	९-८-७-६-५-४-३-२-१-०	२५	९-८-७-६-४
ज्ञान	७	७	४-३-२क्रमशः१	५	३-२ क्रमशः १
संयम	७	७	१ यथायोग्य	३	१(अ. सा. छे.)
दर्शन	३	३	३-२क्रमशः१	३	३-२ क्रमशः १
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही
सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१

संज्ञी	१	१	१ संज्ञी	१	१ संज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२ एकबारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	१४	१४	१ यथायोग्य	१२	१ यथायोग्य
आश्रव	५७	५३	१से १८तक	४६	५ से १८तक
भाव	४६	४६	गुणस्थानानुसार	४१	२६-२४-२२-२७

अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १०००योजनतक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	११३
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	असंख्यात
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, $\frac{८}{१४}$ व सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव—क्षुद्रभवसे १०० सागर तक
अन्तर	०। एक जीव—क्षुद्रभवग्रहणकालसे असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन काल।
जाति	२६ लाख
कुल	१०६॥ लाखकोटि

असंज्ञीमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
जीवसमास	१२	६	१	६	१
पर्याप्ति	५	५	५-४	५	५-४ अप०
प्राण	६	६	६-८-७-६-४	७	७-६-५-४-३
संज्ञा	४	४	४	४	४
गति	१	१	१ तिर्यंचगति	१	१
इन्द्रिय	५	५	१(एके.द्वी.त्री.. च.अ.पं.)	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	४	२	१-२ एकदाएक	२	१-२एकबारएक
वेद	३	३	१	३	१
कषाय	२५	२५	६-८-७	२५	६-८-७
ज्ञान	२	२	२कुमति, कुश्रुत क्रमशः १	२	२ क्रमशः १
संयम	१	१	१ असंयम	१	१
दर्शन	२	२	२-१क्रमशः१	२	१-२क्रमशः१
लेश्या	३	३	१यथा.(अशुभमें)	३	१
भव्यत्व	२	२	१ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	१	१	१ मिथ्यात्व	१	१ मिथ्यात्व
संज्ञी	१	१	१ असंज्ञी	१	१ असंज्ञी
आहारक	२	१	१ आहारक	२	१-२ एकवारएक
उपयोग	२	२	२ क्रमशः	२	२ क्रमशः
ध्यान	८	८	१ यथायोग्य	८	१ यथायोग्य
आश्रव	४५	४३	११ से १८ तक	४३	११ से १८ तक
भाव	२८	२८	२४-२३	२८	२४-२३
अवगाहना	घनांगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक				
बंधप्रकृति	११७				
उदयप्रकृति	६१				
सत्त्वप्रकृति	१४७				
संख्या	अनन्तानन्त				
क्षेत्र	सर्वलोक				
स्पर्शन	सर्वलोक				
काल	सर्वकाल। सादि असंज्ञी एकजीव-क्षुदभवसे असंख्यात. पुद्गलपरिवर्तन कालतक।				
अन्तर	०।सादिअसंज्ञी एकजीव-क्षुद्रभवसे६००सागरतक।				
जाति	६२ लाख				
कुल	१३४॥ लाखकोटि				

संज्ञी असंज्ञी दोनोंसे रहितमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवोंमें	एक जीवापेक्षया	नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	२ व०	२	१ (सयोगके०, अयोग केव०)	१	१सयोगकेवली
जीवसमास	२ व०	१	१सैं.पं.(उपचारे.)प.	१	१सैं.पं.अप.(उप.)
पर्याप्ति	६ व०	६	६	६	६ अप.
प्राण	४ व०	४	४-१	२	२(कायब.आयु)
संज्ञा	०	०	०अतीत संज्ञ	०	०
गति	१ व०	१	१ मनुष्यगति	१	१ मनुष्यगति
इन्द्रिय	१ व०	१	१ पंचेन्द्रिय	१	१ पंचेन्द्रिय
काय	१ व०	१	१ त्रसकाय	१	१ त्रसकाय
योग	७ व०	७ व०	५-१-०	२	२ एकवारएक
वेद	०	०	० अपगतवेद	०	० अपगतवेद
कषाय	०	०	० अकषाय	०	० अकषाय
ज्ञान	१	१	१ केवलज्ञान	१	१ केवलज्ञान
संयम	१ वत्रि-करहित	१	१ यथाख्यात	१	१ यथाख्यात
दर्शन	१	१	१ केवलदर्शन	१	१ केवलदर्शन
लेश्या	१ व०	१ व०	१शुक्ललेश्या व०	१	१शुक्ललेश्या
भव्यत्व	१ वअनु	१	१ भव्यत्व	१	१ भव्यत्व
सम्यक्त्व	१	१	१क्षा. सम्यक्त्व	१	१क्षा. सम्यक्त्व

संज्ञी	अनु०	अनु०	अनु०	अनु०	अनुभय
आहारक	२	२	१ आहारक (१४वें में अनाहारक)	२	२ एकबारएक
उपयोग	२	२	२ युगपत्	२	२ युगपत्
ध्यान	२च०	२	१ सू०व्यु० में	१	१ सूक्ष्म०
आश्रव	७व०	५व०	१	२	१
भाव	१४	१४	१०-१३-१४	१४	१४
अवगाहना	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक				
बंधप्रकृति	१ व०				
उदयप्रकृति	४२ व०				
सत्त्वप्रकृति	८५ व०				
संख्या	अनन्त				
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग व सर्वलोक				
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात भाग व सर्वलोक				
काल	सर्वकाल				
अन्तर	०				
जाति	१४ लाख व०				
कुल	१२ लाख कोटि व०				

आहारकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप		अपर्याप्तालाप	
		नाना जीवमें	एकजीवापेक्षया	नाना जीवमें	एक जीवापेक्षया
गुणस्थान	१३	१३	१ (१लेसे १३वें तकमें)	५	१ (१-२-४-६-१३में)
जीवसमास	१४	७	१	७	१
पर्याप्ति	६	६	६-५-४	६	६-५-४
प्राण	१०	१०	१०-६-८-७-६-४	७	७-७-६-५-४-३-
संज्ञा	४व०	४व०	४-३-२-१-०	४व०	४-०
गति	४	४	१	४	१
इन्द्रिय	५	५	१	५	१
काय	६	६	१	६	१
योग	१४	११	१०-६-५में एकदा०	३	१-२एकवार एक
वेद	३व०	३व०	१ व अपगतवेद	३व०	१ व अपगत
कषाय	२५	२५	६-८-७-६-५-४-३-२-१-०	२५	६-८-७-६-४-०
ज्ञान	८	८	४-३-२ क्रमशः १ व केवल०	६	३-२ क्रमशः १ व केवलज्ञान
संयम	७	७	१ यथायोग्य	४	१(अ०सा०छे०य०)
दर्शन	४	४	३-२-१ क्रमशः १ व केवल०	४	३-२-१ क्रमशः १ व केवलदर्शन
लेश्या	६	६	१ यथायोग्य	६	१
भव्यत्व	२	२	१ ही	२	१ ही

सम्यक्त्व	६	६	१ यथायोग्य	५	१
संज्ञी	२	२	१संज्ञी याअसं०	२	१
आहारक	१	१	१ आहारक	१	१ आहारक
उपयोग	२	२	२ क्रमशःवयुग.	२	२ क्रमशःवयुग.
ध्यान	१५	१५	१ यथायोग्य	१३	१ यथायोग्य
आश्रव	५६	५३	१ से १८ तक	४५	१ से १८ तक
भाव	५३	५३	गुणस्थानानु-सार	४६	१४-२६-२४ २७-२६

अवगाहना	अंगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजन तक
बंधप्रकृति	१२०
उदयप्रकृति	११८
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्तानन्त
क्षेत्र	सर्वलोक
स्पर्शन	सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-३ समय कम क्षुद्रभवसे असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाल
अन्तर	०। एकजीव-एक समयसे तीन समयतक।
जाति	८४ लाख
कुल	१६७॥ लाखकोटि

अनाहारकमें

स्थान	सामान्यालाप	पर्याप्तालाप (१४ गुणस्थानमें)	अपर्याप्तालाप	
			नाना जीवोंमें	एकजीवापेक्षया
गुणस्थान	५व०	१ अयोगके०	४	१(१-२-४-१३वेंमेंसे)
जीवसमास	८व०	१सैनीपं. पर्या०	७	१(अपर्या. संज्ञ. ७वेंमेंसे)
पर्याप्ति	६व०	६ पर्या०	६	६-५-४
प्राण	७व०	१ आयु	७	७-७-६-५-४-३
संज्ञा	४व०	०	४व०	४व०
गति	४व०	१ मनुष्यगति	४	१
इन्द्रिय	५व०	१ पंचेन्द्रिय	५	१
काय	६व०	१ त्रसकाय.	६	१
योग	१व०	०	१	१ कर्माणकाययोग
वेद	३व०	०	३	१
कषाय	२५व०	० अकषाय	२५व०	६-८-७-६-०
ज्ञान	६	१केवलज्ञान	६	३-२क्रमशः १वकेवलज्ञान १
संयम	२वअनु	१यथाख्यात	२	१ असंयम,यथाख्यातमें).
दर्शन	४	१केवलदर्शन	४	२-२-१क्रमशः१वकेवलदर्श)
लेश्या	६व०	०	६	१ यथायोग्य
भव्यत्व	२वअनु	१ भव्यत्व	२	१ ही
सम्यक्त्व		१क्षायिकस०	५	१यथायोग्य(मि.सा.वे.क्षा.द्वि.

संज्ञी	२वअ नु०	अनुभय	२	१
आहारक	१अना.	१ अनाहारक	१अना	१ अनाहारक
उपयोग	२क्र. व.यु.	२ युगपत्	२	२ क्रमशःव युगपत्
ध्यान	१२व०	१ व्युपरत०	११	१यथा.(४+४+२+१=में)
आश्रव	४३व०	०	४३	१ से १८ तक
भाव	४८	१३	४८	१४-२९-२७-२६

अवगाहना	अंगुलके असंख्यातवें भागसे १००० योजनतक
वंधप्रकृति	११२
उदयप्रकृति	८९
सत्त्वप्रकृति	१४८
संख्या	अनन्त
क्षेत्र	लोकका असंख्यातवांभाग, असंख्यातभागवसर्वलोक
स्पर्शन	लोकका असंख्यातवां भाग व सर्वलोक
काल	सर्वकाल। एकजीव-१ समयसे ३समय या अन्तर्मुहूर्त काल (अयोगीकी अपेक्षा)
अन्तर	०। एकजीव-३समयकम क्षुद्रभवकालसे असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल तक।
जाति	८४ लाख व ०
कुल	१९७॥ लाख कोटि